(तर्ज : आ लौट के आजा मेरे मीत...)

आओ आओ जी पधारो गणराज, भगत थाने आज बुलावे जी,
थारी बाट उड़ीकाँ महाराज, भगत थाने आज बुलावे जी ।। टेर ।।

सबसूं पहल्याँ थाने मनावां, कारज सिद्ध कराओ,
श्याम धणी रो उत्सव मांडयो, आके सफल बणाओ,
रिद्धि सिद्धि ने सागे ल्याओ आज ।। १ ।।

मूसक री करके असवारी, बेगा आन पधारो,
सेवक थारा जोय रह्या है, देवा रस्तो थारो,
बेगा बेगा सा पधारो महाराज ।। २ ।।

गुड़ के मोदक भोग है प्यारो, थारे भोग लगाया,
छप्पन भोग छत्तीसों मेवा, थारे भेंट चढ़ाया,
जीमो जीमों जी जिमावाँ थाने आज ।। ३ ।।

विघ्न विनाशक हे गणनायक, सगला विघ्न हटाओ,
एक दंत गज वदन विनायक, ''हर्ष'' थे बेगा आओ,
बैठो बैठो जी थे ऊँचे आसण आज ।। ४ ।।

(तर्ज : जनम जनम का साथ है...)

आज घणे ही मान सूं म्हे थाने बुलावाँ,
आप पधारो हे गणनायक, चोखा सुगण मनावाँ ।। टेर ।।

श्याम धणी रो चाव सूं, किर्तन आज कराया,
देवां रे सिरमोर ने, पहल्यां पोत बुलाया,
म्हारो कीर्तन सफल बणाओ, थारी किरपा चावाँ ।। १ ।।

ऊंचे आसण आज थे, बेगा आन बिराजो,
गाजो बाजो साथ ले, बाँध पागड़ी आज्यो,
बाँध घुघरा कीर्तन माही, थाने आज नचावाँ ।। २ ।।

भर भर लाडू पेड़ा, चान्दी थाल सजाया,
थारे खातिर प्रेम सूं, नागर पान मंगाया,
भगतां रे घर रूच रूच जीमो, थारे भोग लगावाँ ।। ३ ।।

''हर्ष'' कहवे थारे बिना, कारज सिद्ध ना होवे,
सेवक नैण बिछाय कर, रस्तो थारो जोवे,
मान राखल्यो म्हारो देवा, म्हे थारा गुण गावाँ ।। ४ ।।

(तर्ज : लेके पहला पहला प्यार...)

आवो मूसे रा असवार, थारी घणी करां मनवार,
बेगा बेगा पधारो जी म्हारे अंगणा ।। टेर ।।

गिरजा रा प्यारा बाबा, शिव रा दुलारा जी,
पहल्याँ मनावे थाने, टाबरिया थारा जी,
आओ रिद्ध-सिद्ध रा भरतार, म्हारा आन भरो भण्डार,
बेगा-बेगा... ।। १ ।।

किर्तन में पहल्याँ देवा, थाने बुलाया जी,
मोदक मिसरी रा, थाल सजाया जी,
जीमो जीमो लखदातार, सेवक गावे मंगलाचार,
बेगा-बेगा... ।। २ ।।

गजरा सूं ''हर्ष'' थारो, सज्यो दरबार जी,
सुगण मनावाँ आवो, थारी दरकार जी,
सुणल्यो भगतां री पुकार, हेलो मारां बारम्बार,
बेगा-बेगा... ।। ३ ।।

(तर्ज : सिद्ध श्री शुभ ओपमा)

घणे मान सूं भेज रहया थाने, पाती लिख मनुहार जी,
रिद्धि सिद्धि संग आइज्यो थांसू, अरजी बारम्बार जी,
हे गोरी सुत गणराज, पधारो गणपत जी महाराज ।। टेर ।।

सब देवां में सबसूं पहल्यां, न्यूतो थाने भिजायो है,
श्याम धणी रो घणे चाव सूं, कीर्तन आज करायो है,
हे गोरी सुत गणराज... ।। १ ।।

अंतर केशर महक रहया है, खूब सज्यो सिणगार जी,
ऊँचे आसण आप विराजो, रिद्धसिद्ध रा भरतार जी,
हे गोरी सुत गणराज... ।। २ ।।

मोदक मिश्री थाल सज्या म्हारा, देवा थाने आणो है,
छप्पन भोग छत्तीसों मेवा, आकर भोग लगाणो है,
हे गोरी सुत गणराज... ।। ३ ।।

विघ्न विनाशक विघ्न हटाओ, किर्तन सफल कराओ जी,
थां बिन कारज सिद्ध न होसी, ''हर्ष'' थे बेगा आओ जी,
हे गोरी सुत गणराज... ।। ४ ।।

(तर्ज : कर दे दीनों का दुख दूर...)

पहल्याँ मनावाँ थाने आज, ओ गिरिजा का लाला,
आकर सँवारो म्हारा काज, ओ गिरिजा का लाला ।। टेर ।।

सुण्ड सुण्डाला देवा, दुन्द दुन्दाला-२,
देवां का थे हो सिरताज, ओ गिरिजा का लाला ।। १ ।।

एक दन्त गज, वदन विनायक-२,
आन बचाओ म्हारी लाज, ओ गिरिजा का लाला ।। २ ।।

मोदक मिश्री, श्री फल मेवा-२,
भोग लगाओ गणराज, ओ गिरिजा का लाला ।। ३ ।।

लाभ शुभ और, रिद्धि व सिद्धि-२,
सागे थे लेके आओ आज, ओ गिरिजा का लाला ।। ४ ।।

''हर्ष'' बुलावे देवा, मुसक चढ़के-२,
बेगा पधारो महाराज, ओ गिरिजा का लाला ।। ५ ।।

(तर्ज : अठीने दिखे श्याम...)

हे सुण्ड सुण्डाला आओ, हे दुन्द दुन्दाला आओ,
बेगा सा आन पधारो देवा, किर्तन सफल बणाओ ।। टेर ।।

श्री श्याम प्रभु को किर्तन करायो जी,
पहलो न्यूतो देवा म्हे थाने भिजायो जी,
गिरिजा का लाला आओ, रिद्धिसिद्धि ने सागे ल्याओ।
बेगा सा आन पधारो... ।। १ ।।

चान्दी के आसण आन विराजो जी,
लड्डुवन का थाल सज्या थे भोग लगाज्यो जी,
पग बांध घुघरा आओ, छम छम छम नाच दिखाओ।
बेगा सा आन पधारो... ।। २ ।।

थे आकर सगला विघ्न मिटाओ जी,
भगतां का कारज ''हर्ष'' थे सिद्ध कराओ जी,
हे विघ्न विनाशक आओ, भगतां को मान बढ़ाओ ।
बेगा सा आन पधारो... ।। ३ ।।

श्री सरस्वती वन्दना

(तर्ज : बाबुल की दुआएं...)

हे स्वर की देवी सरस्वती, माँ शत्-शत् है प्रणाम मेरा ।
शब्दों में सजा कर भेज रहा, माँ सुन लेना पैगाम मेरा ।। टेर ।।

मेरे अंधियारे जीवन में, तूने ज्ञान का दीप जलाया है,
शब्दों की पावन गंगा में, मेरा हाथ पकड़ नहलाया है,
गर तेरा सहारा ना मिलता, माँ क्या होता अंजाम मेरा ।। १ ।।

जिस दिन से शरण में आया हूँ, भावों की सरिता बहती है,
शब्दों में लिपट कर मन बीणा, छन्दों में कविता कहती है,
मैं सोच रहा किन शब्दों में, माँ कैसे करूं गुणगान तेरा ।। २ ।।

हृदय में वास तुम्हारा है, मेरी जिह्वा पर भी वास करो,
नित नई रचना रच पाऊँ मैं, मेरे मन में ये विश्वास भरो,
मेरी कलम पे आन विराजो तुम, माँ ''हर्ष'' जपे जब नाम तेरा ।। ३ ।।

श्री पित्तरेश वन्दना

(तर्ज : कुण सुणे लो कीने सुणाऊँ...)

पित्तर जी थे, बेगा पधारो,
दुखड़ा सूं म्हाने, आके उबारो ।। टेर ।।

थारे कबीले पे, विपदा है आई,
थां बिन करसी, कुण सुणाई,
बिगड़ी थे म्हारी देवा, आके सँवारो ।। १ ।।

टाबरिया थारा, घणा दुख पावे,
मनड़े री बात्याँ, कीने बतावे,
अरजी पे म्हारी देवा, थोड़ा विचारो ।। २ ।।

थे म्हारा मायत, टाबर म्हे थारा,
आकर मिटाओ, दुखड़ा थे सारा,
बीच भँवर सूं म्हारी, किश्ती ने तारो ।। ३ ।।

सगली भूल्यां, मनसूं भुलाज्यो,
''हर्ष'' की सुण थे, बेगा आज्यो,
थे म्हारे कुल का देवा, थारो सहारो ।। ४ ।।

(तर्ज : एक तेरा साथ हमको...)

पित्तरजी महाराज, म्हे तो लीन्हो शरणो थारो जी,
थे संकट काटो म्हारो जी ।। टेर ।।

थारी दया सू म्हें, फूलां फलां देवा, दया थे राखज्यो,
विपदा घणी म्हाने, जद भी सतावे तो, सदा ही मेटज्यो,
मेटिज्यो थे आज-२, देवा आके दुखड़ो म्हारो जी ।। १ ।।

टाबर हाँ म्हें थारा, भूलां ने म्हारी थे, सदा ही भूलज्यो,
म्हाने थे कुल देवा, रस्तो दिखाओला, कदे ना भूलज्यो,
पूरिज्यो सब काज-२, दीज्यो भटक्या ने किनारो जी ।। २ ।।

''हर्ष'' थारे बिन, दूजो नहीं म्हारो, शरण में राखिज्यो,
परचो सदा दीज्यो, विपदा की घड़ियां में, सदा ही आईज्यो,
राखिज्यो थे लाज-२, म्हाने थारो ही सहारों जी ।। ३ ।।

(तर्ज : बाबुल की दुआएं...)

पित्तरजी हमारी सुनलो ना, मैं कबसे खड़ा मनुहार करूं,
चरणों में तुम्हारे कुल देवा, मैं वंदन बारम्बार करूँ ।। टेर ।।

मेरे लहलाते उपवन में, इक गम की बदली छाई है,
दुखड़ों में ऐसे आन घिरा, कुछ पड़ता नहीं सुझाई है,
अब आकर मुझे सम्भालो तुम, चौखट पे अरजी आज धरूँ ।। १ ।।

गैरों की मैं बात बताऊँ क्या, अपनों ने ही मुख मोड़ लिया,
दुनियाँ के थपेड़े खाने को, मुझे आज अकेला छोड़ दिया,
मेरा हाथ पकड़ लेना अब तो, रह रह कर मैं बस आह भरूँ ।। २ ।।

हर कदम पे ठोकर खाई है, हर बार सताया हूँ मैं गया,
जब जब भी उठना चाहा तो, नजरों से गिराया हूँ मैं गया,
कहीं तुम ना 'हर्ष' भुला देना, यह सोच के मैं हर बार डरूँ ।। ३ ।।

(तर्ज : ऐ मेरे दिले नादान...)

इक कोरे कागज पे, तूने कलम चलाई है,
सतपथ की राह गुरु, तूने दिखलाई है ।। टेर ।।

माता ने जन्म दिया, गुरुवर को सौंप दिया,
अज्ञान अंधेरो का, क्षण भर में लोप किया,
सत्कर्म सरल भाषा, तूने सिखलाई है ।। १ ।।

तू ज्ञान का सागर है, गुणगान करें तेरा,
सद्‌गुण की गागर है, सम्मान करें तेरा,
प्रभुवर से मिलने की, युक्ति बतलाई है ।। २ ।।

सतगुरु मिल जाने से, जीवन खिल जाता है,
भवपार उतरने का, रस्ता मिल जाता है,
ए ''हर्ष'' गुरु तुमसे, मुक्ति मिल पाई है ।। ३ ।।

(तर्ज : सौ बार जन्म लेंगे...).

गुरुदेव के चरणों में, हम शीश नवाते हैं,
उस ज्ञान के सागर की, हम आरती गाते हैं ।। टेर ।।

गुरुवर जो नहीं मिलते, जीवन ही नहीं खिलता,
सत्पथ पर चलने का, जरिया ही नहीं मिलता,
जीवन में सद्‌गुण का, वो दीप जलाते हैं ।। १ ।।

अज्ञान की राहों में, जब भी मैं कभी भटकूं,
दुष्कर्मों के झूठे, दलदल में कभी अटकूं,
झट थाम के वो ऊंगली, रस्ता दिखलाते हैं ।। २ ।।

है कौन सिवा इनके, जो मोक्ष दिलायेगा,
प्रभुवर से मिलने का, रस्ता दिखलायेगा,
गुरुवर ही ''हर्ष'' हमें, भव पार लगाते हैं ।। ३ ।।

(तर्ज : सागर से भी गहरा बन्दे...)

ठोकर खाके गुरु की बंदे, कितने ही भव पार हुए,
गुरु कृपा से ही कितनों को, दाता के दीदार हुए ।।

भेद भरम को मिटाके मन से, सारी दुविधा दूर करे,
मन का मैल हटाकर उसमें, ज्ञान भक्ति भरपूर भरे,
प्रभु दर्शन कर जाने कितने, दिव्य-स्वप्न साकार हुए ।। १ ।।

शुभ कर्मों का भेद बताये, ज्ञान की राह दिखाते हैं,
भोग विषय से मोह छुड़ाके, धर्म का पाठ पढ़ाते हैं,
गुरु कृपा बिन कितने जीवन, दुनिया में बेकार हुए ।। २ ।।

बिन गुरु ज्ञान नहीं मिल पाता, वेद पुराण बताते हैं,
नारायण भी अपने मुख से, गुरु की महिमा गाते हैं,
'हर्ष' जली जहाँ ज्ञान की ज्योति, दूर सभी अंधकार हुए ।। ३ ।।

(तर्ज : मेरी छतरी के नीचे आजा...)

तू गुरु का ध्यान लगाले-२,
तेरे भव बंधन कट जायेंगें ।। टेर ।।

चरणों का ध्यान लगायेगा,
गुरुदेव की कृपा पायेगा,
माया के फंद छुड़ाके,
गुरुवर ही मोक्ष दिलायेगें ।। १ ।।

ये काठ की नैया टूटेगी,
इक दिन मझधार में डूबेगी,
गुरु हाथ पकड़ के तेरा,
तुझको भव पार करायेंगे ।। २ ।।

कहे 'हर्ष' सुनो रे ओ भैया,
कर गुरु हवाले तू नैया,
गुरु ज्ञान की ज्योत जगाकर,
श्री श्याम से तुझे मिलायेंगे ।। ३ ।।

श्री गुरुदेव वन्दना

(तर्ज : कसमे वादे प्यार वफा...)

सूर्य सुनहरा आज उगा है, गुरुवर आप पधारे है,
स्वागत में सैलाब है उमड़ा, पुल्कित चाँद सितारे हैं ।। टेर ।।

बरसों से अरमान फले हैं, एक सलोना फूल खिला,
मन मंदिर को रोशन करने, ज्ञान का दीपक आज जला,
आज बहेगी ज्ञान की गंगा, होंगे वारे न्यारे हैं ।। १ ।।

कण कण में खुशहाली छाई, भाये हैं जन जन के मन,
चरणों में वंदन है सबका, अर्पित है तन मन जीवन,
स्वागत की स्वर लहरी गूँजी, होठों पर जैकारे हैं ।। २ ।।

धन्य हुई माटी आंगन की, गुरुदेव के चरण पड़े,
अभिनन्दन में झुके हुए हैं, सेवक सारे खड़े खड़े,
''हर्ष'' कहे सब करो स्वागत, चमके भाग्य हमारे हैं ।। ३ ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : मैं छोरा राजस्थानी...)

ओ बाबा ओघड़दानी, क्या दिल में तूने ठानी,
बीच बजरिया छम छम नाचे ये क्या तुझको हो गया ऽऽऽ
क्यूं मस्त मलंगा हो गया, क्यूं मस्त मलंगा हो गया ।। टेर ।।

हाथों में त्रिशूल है तेरे जिसपे डमरू साजे,
जटाजूट में गंग की धारा नाग गले में नाचे,
सुध बिसराई तूने बाबा-२, मस्ती में यूँ खो गया ऽऽऽ ।। १ ।।

आक धतुरा खा गये ज्यादा या पी डाली भंगिया,
धरती अम्बर थिरक रहे हैं नाच रही है दुनिया,
अंग विभूति रमा के बाबा-२, भेष जोगिया हो गया ऽऽऽ ।। २ ।।

जग का सिरजन हारा देखो नाच रहा है ऐसे
तीन लोक की सारी खुशियाँ ''हर्ष'' मिलीं हो जैसे,
भगतों का अब डमरू वाले-२,वारा न्यारा हो गया ऽऽऽ ।। ३ ।।

(तर्ज : ओ पालन हारे...)

ओ भोले भाले, जग के रखवाले, तेरे जैसा दूजा कोई नहीं,
वंदन है मेरा, अभिनन्दन है तेरा, तेरे जैसा दूजा कोई नहीं ।।

तूने विष को गले में बसाया,
सारे देवों को अमृत पिलाया,
देवों के देवा, करते हम सेवा ।।
तेरे जैसा दूजा कोई नहीं... ।। १ ।।

तू तो बिल्कुल ही है भोला भाला,
भष्मासुर ने मुसीबत में डाला,
तुझसा ना दानी, तेरा ना सानी ।।
तेरे जैसा दूजा कोई नहीं... ।। २ ।।

''हर्ष'' जो भी शरण तेरी आता,
उसको दुखड़ों से पल में बचाता,
दुखड़े तू हरता, झोली तू भरता ।।
तेरे जैसा दूजा कोई नहीं... ।। ३ ।।

(तर्ज : झुमका गिरा रे...)

काँवड़िया नाचे रे, ले गंगा जल की गागरी-२,
नाचे, अरे नाचे, अरे नाचे, छमा छम छम ।। टेर ।।

कांधे ऊपर काँवड़ ले, भगतों के टोले जाये,
हर हर बम के जैकारों से, आसमान गुंजाये,
पापा के संग बेटा जाये, बहना के संग भाई,
हाथ पकड़ कर चले मटकती, ताऊ के संग ताई,
अजी ताऊँ के संग ताई ।। काँवड़िया नाचे रे... ।। १ ।।

भांत भांत के स्वांग रचाके, सेवक नाचे गाये,
मंदिर में बैठा भण्डारी, मंद मंद मुस्काये,
रूखे सुखे बाल किसी के, कोई दाढ़ीवाला,
भंगिया की मस्ती में खोया, है कोई मतवाला,
अजी है कोई मतवाला ।। काँवड़िया नाचे रे... ।। २ ।।

पैरों के छाले भी इन, भगतों को रोक ना पाये,
आँधी-पानी-तूफां में ये, बिल्कुल ना घबराये,
डमरूधर के ध्यान में खोया, हर कोई दिवाना,
'हर्ष' कहे ओ भोले बाबा, सबको पार लगाना,
अजी सबको पार लगाना ।। काँवड़िया नाचे रे... ।। ३ ।।

(तर्ज : हद कर दी आपने...)

खड़ा हुआ हूँ द्वार पे, जोड़े दोनों हाथ,
किसे सुनाऊँ मैं भला, अपने मन की बात,
अपने दिल से मुझे भुलाया, मेरे भोले नाथ ने,
हद कर दी आपने, हद करदी आपने ।। टेर ।।

रोज नियम से मन्दिर आऊँ, भोला तुझे रिझाऊँ मैं,
गंगा जल से लोटा भरके, तुझपे रोज चढ़ाऊँ मैं,
फिर भी मुझको क्यों बिसराया, मेरे भोले नाथ ने ।। १ ।।

रस्सी की इक रगड़ से बाबा, पत्थर भी घिस जाता है,
भगतों की अरदास से तेरा, आसन भी हिल जाता है,
जाने अब तक काहे रुलाया, मेरे भोलेनाथ ने ।। २ ।।

भोले शंकर तेरा फैसला, हरदम है मंजूर मुझे,
'हर्ष' तेरे भगतों की भगती, कर देगी मजबूर तुझे,
सेवक को कितना तरसाया, मेरे भोले नाथ ने ।। ३ ।।

(तर्ज : हँसता हुआ नूरानी...)

गंगा जल से गगरी भराये, कान्धे उपर काँवड़ उठाये,
हर हर बम का नारा लगाये रे, भोले नाथ भोले नाथ ।। टेर ।।

अम्बर से रिमझिम बरसता है सावन-२, देखो नजारा ये कितना है पावन,
पैरों में इनके, छाले पड़ते, राहों में लेकिन, ये ना रूकते,
भोले है तेरी दया ।। १ ।।

नैनों में इनके तो तू ही बसा है-२, तू ही बता दे ये कैसा नशा है,
झूमें नाचे, मौज मनाये, मीठे मीठे, भजन सुनाये,
कैसा ये जादू चढ़ा ।। २ ।।

ओ भोले भाले ये तेरी है माया-२, तूने ही सारा ये खेल रचाया,
''हर्ष'' हमेशा, हमको बुलाना, दिल से तेरे, तू ना भुलाना,
सुनले हमारी सदा ।। ३ ।।

(तर्ज : मत्थे ते चमकण...)

गोला चढ़ा के भोले नाथ, छम छम नाच रहे,
गोरा मैया को लेके साथ, छम छम नाच रहे ।। टेर ।।

अंग विभूति सोहे, हाथों में चिमटा-२,
कहने की क्या बात, छम छम नाच... ।। १ ।।

डम डम भोले तेरा, बाजत है डमरू-२,
कान्धे पे नाचे काला नाग, छम छम नाच... ।। २ ।।

सारे गणों के संग, नाचे रे नन्दी-२,
ठुमका लगाये गणराज, छम छम नाच... ।। ३ ।।

ब्रह्मा जी नाचे देखो, विष्णु जी नाचे-२,
नाचे है सारी कायनात, छम छम नाच... ।। ४ ।।

''हर्ष'' सुरंगा सावन, लाया है मस्ती-२,
रिमझिम पड़े है बरसात, छम छम नाच... ।। ५ ।।

(तर्ज : सिर से जो सरकी वो धीरे...)

घोटूं तेरी भंगिया हौले-हौले, सारी सारी रतियाँ भोले-भोले,
मेरी कलईयां, दुखने लगी ।। टेर ।।

नाजों से बाबुल ने पाला है-२, तूने क्या मुश्किल में डाला है-२,
हाथों छाले पड़े, मुँह क्या देखे खड़े-२ ।। १ ।।

जिस दिन से ब्याह के मैं आई हूँ-२, चैन से ना सो पाई हूँ-२,
तेरी धौंस सहूँ, मन मसोस रहूँ-२ ।। २ ।।

मैके -जो अबकी मैं जाऊँगी-२, वापस नहीं फिर आऊँगी-२,
पीना छोड़ो अगर, आऊँ लौट के घर-२ ।। ३ ।।

अपनी तो दोनों से यारी है-२, 'हर्ष' कहे त्रिपुरारी है-२,
गोरां मन में बसे, भांग घट में बसे-२ ।। ४ ।।

(तर्ज : चली काँवरियो की टोली...)

चढ़ा भंगिया का रंग, गोरा रानी तेरे संग,
आज बनके मैं बृजनारी जाऊँ रे,
जाके मधुबन मैं रास रचाऊँ रे ।। टेर ।।

मुझको दिखादे महारास देखन जाऊँगा,
राधा संग श्याम नाचे तेरे संग नाचूँगा,
लाली होठों पे लगाऊँ, इक जूड़ा बनवाऊँ,
तेरी सखी बन तेरे संग जाऊँ रे ।। १ ।।

गोरा बोली संग भोले कैसे वो ले जाये,
साँवरे सिवाय दूजा रास में ना जाये,
मानो बात हमारी, हंसी होगी रे तुम्हारी,
तेरी जिद तो मैं टाल नहीं पाऊँ रे ।। २ ।।

बनके वो बृजनारी गोरा संग आये,
ठुमका लगाये ''हर्ष'' कान्हा मुस्काये,
जाके घुंघटा उठाया, कैसा स्वांग रचाया,
तेरी लीला भोला समझ ना पाऊँ रे ।। ३ ।।

(तर्ज : दिल दा मामला है...)

जल जरा चढ़ालो, हो जायेगा प्रसन्न,
भोला है भूखा भक्ति का, कर लो इसे नमन ।। टेर ।।

सावन का महिना आया, बरसे अम्बर से माया,
शंकर के दर पे जाना, जाकर के जल चढ़ाना,
भोले की भक्ति पावो, जीवन को सफल बनाओ,
पैदल तुझको है जाना, भोले को आज मनाना,
नंगे ही पैर चल पड़ो, करते हुए भजन ।। १ ।।

पहने केशरिया चोला, तेरे भगतों का टोला,
चलते सुल्तान गंज से, काँधे पे कॉवड़ धरके,
गणपति का ध्यान लगाते, भोले का भजन सुनाते,
नंगे पैरों ही चलते, कितने ही छाले पड़ते,
बम बम की जय जय कार से, गूंजे धरा गगन ।। २ ।।

—२ —

अजगेभीनाथ जाकर, तारापुर पार होकर,
जिलेबिया मोड़ जाते, सूइया पहाड़ चढ़ते,
अबरखा पर्वत आये, गोड़ियारी नीर बहाये,
दर्शनिया सेवक जाता, मंदिर का दर्शन पाता,
मंदिर जो देखे दूर से, खिल जाते उनके मन ।। ३ ।।

मंदिर में सारे जाये, मस्ती में नाचे गायें,
भक्ति की ज्योत जगाते, भोले पे जल चढ़ाते,
भक्तों की श्रद्धा भारी, गद्गद् भोला भंडारी,
मन से जो जल को सींचे, दबता भगती के नीचे,
भोले की ''हर्ष'' बावरे, लेले जरा शरण ।। ४ ।।

गैर की बात करने से क्या फायदा
अब तो अपनों पे हमको भरोसा नहीं
अपना सांया समझते थे जिनको सदा
वो जुदा हो गये देखते - देखते ।

(तर्ज : धन घड़ी धन भाग्य हमारा...)

भोले तेरा रूप निराला, पहने तू सर्पों की माला,
बहे जटा से जल धारा ।। टेर ।।

ओढ़ लई मृग की छाला, अंग भभूत रमाई है,
आक धतूरा खाकर के, धूनी अलख जगाई है,
मस्तक उपर चंदा साजे, हाथ में डमरू डम डम बाजे,
बहे जटा से... ।। १ ।।

ओघड़ दानी भूतेश्वर, शमशानों का वासी है,
भगतों का है रखवारा, भूतों का तू साथी है,
द्वार पे तेरे नन्दी बैठा, हाथ तेरे त्रिशूल अनूठा,
बहे जटा से... ।। २ ।।

भिक्षुक रूप बनाया है, पर तू जग का स्वामी है,
कण कण की सब तू जाने, तू तो अन्तर्यामी है,
''हर्ष'' तेरा ये ढ़ंग निराला, पीता भर भर भंग का प्याला,
बहे जटा से ... ।। ३ ।।

(तर्ज : ओह रे ताल मिले...)

भोले नाथ बसे ज्योतिर्लिंग में, महिमा जिनकी है भारी,
बारह ज्योतिर्लिंग को पूजे, सारा जहाँ ।। टेर ।।

ऊँचे पर्वत पे देखो, ''बाबा केदारनाथ है''-२,
विश्वनाथ जी का भगतों, ''काशी में धाम है''-२,
ओ भगतों रेऽऽऽ, विश्वनाथ जी का भगतों काशी में धाम है,
श्री शैल में मल्लिकार्जुन-२, करते हैं दया ।। १ ।।

चिता भूमि में बैद्यनाथ जी, ''दारूक-वन नागेश है''-२,
सेतुबन्ध में रामेश्वर जी, ''वेरूल में घुश्मेश है''-२,
ओ भगतों रेऽऽऽ, सेतुबन्ध में रामेश्वर जी वेरूल में घुश्मेश है
डाकिनी में भीमाशंकर-२, सुनते हैं सदा ।। २ ।।

अमरेश्वर ओंकारेश्वर, ''इक लिंग के भाग है''-२,
महाकाल उज्जैन विराजे, ''दर्शन से लाभ है''-२,
ओ भगतों रेऽऽऽ महाकाल उज्जैन विराजे दर्शन से लाभ है,
ज्योतिर्लिंगों के दर्शन से-२, होता है भला ।। ३ ।।

गौतमी किनारे बाबा, ''त्रियम्बकेश्वर नाथ है''-२,
विरावल सौराष्ट्रा में, ''बाबा सोमनाथ है''-२,
ओ भगतों रेऽऽऽ, विरावल सौराष्ट्रा में बाबा सोमनाथ है,
''हर्ष'' कहे पाप से मुक्ति-२, मिलती है यहाँ ।। ३ ।।

''रुद्राभिषेक''

(तर्ज : सज धज कर बैठ्यो...)

सावन में जहाँ पर भोले का, जो भी अभिषेक कराते हैं,
वहाँ धन की बरखा होती है, सारे संकट कट जाते हैं ।।

गंगा की मिट्टी से ब्राह्मण, शिव का परिवार बनाते हैं,
फिर भाँत भाँत की रस्मों से, उनका अभिषेक कराते हैं,
सब एक साथ मिल पाठ करे-२, भोले की महिमा गाते हैं ।। १ ।।

फूलों की लड़ियों से सारे, शिव का सिंगार सजाते हैं,
घर के सारे प्राणी मिलकर, भोले की आरती गाते हैं,
फिर अपनी-अपनी श्रद्धा से-२, भोले को भेंट चढ़ाते हैं ।। २ ।।

भोले शंकर के भोग लगा, ब्राह्मण को भोज कराते हैं,
दे दान दक्षिणा 'हर्ष' उन्हें, उन सबका आशीष पाते हैं,
तब भोले बाबा खुश होकर, उनके भण्डार भराते हैं ।। ३ ।।

(तर्ज : ये गोटेदार लहंगा...)

सेवक लाये हैं भंगिया, भोले बाबा छान के,
भर भर के लोटा पीले, मस्ती में टान के ।। टेर ।।

बड़े जतन से होले होले, ''भांग तेरी घुटवाई''-२,
केशर पिस्ता खूब मिलाया, ''छान लई ठण्डाई''-२,
हमरी भी रखले बतिया-२, सेवक तू जान के ।
भर-भर के... ।। १ ।।

गोरा मैया के हाथों से, ''भांग सदा तू खाये''-२,
तेरे सेवक बड़े चाव से, ''आज घोंट कर लाये''-२,
सावन की बूंदे थिरके-२, रिमझिम की ताल पे ।
भर-भर के... ।। २ ।।

ओर देव होते तो लाते, ''भर- भर थाल मिठाई''-२,
लेकिन भोले बाबा तुझको, ''भांग सदा ही भाई''-२,
''हर्ष'' दया का भोले-२, हमको भी दान दे ।
भर-भर के... ।। ३ ।।

(तर्ज : मैया का चोला लाल हो गया...)

शंकर जी चले ब्याह रचाने, लगे बाराती धूम मचाने,
भूतो का जमघट नाचे, तहलका मच गया रे ।। टेर ।।

भूत प्रेत बेताल अघोरी, चले बाराती बनके,
कोई तिरछी चाल चले रे, कोई चाले तनके,
मिलके सब हुड़दंग मचाये, देखे उसी का दिल घबराये,
डर के सरपट भागे, तहलका मच... ।। १ ।।

बूढ़ा बैल खुशी से नाचे, भोले को बैठा कर,
दुल्हा बनके भोला बैठा, नाग गले लिपटाकर,
गाजाँ सुल्फा चिलम चढ़ाये, चले बाराती भंगिया खाये,
देखे उसी को डर लागे, तहलका मच... ।। २ ।।

साठ साल का बूढ़ा आया, अंग भभूत लगाके,
करने आरती मैंना रानी, आई थाल सजाके,
देखके दुल्हा माँ घबराई, गिरी धरा पे चक्कर खाई,
सूझा ना कुछ भी आगे, तहलका मच... ।। ३ ।।

नारद जी ने उठ करके माता को होश कराया,
बोले मैया मत घबरा ये डमरूधर की माया,
'हर्ष' कहे माँ, अन्तर्यामी, दुल्हा बनके जग का स्वामी,
आया है तेरे द्वारे, तहलका मच... ।। ४ ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : देना हो तो दीजिये...)

शमशानों के वासी हो, भूतों का है साथ,
तेरा गंगा किनारे डेरा-२, ओ बाबा भूतनाथ ।। टेर ।।

देवों मे महादेव हो बाबा, सारी दुनिया ध्याती है,
श्रद्धा से चरणों में तेरे, आकर शीश झुकाती है,
जो पाँव पकड़ले तेरे-२, तू पकड़े उनका हाथ ।
ओ बाबा... ।। १ ।।

सृष्टि के ओ सिरजनहारे, तेरे ढ़ंग निराले हैं,
देवों की रक्षा की खातिर, पीता विष के प्याले हैं,
हम भोले भगतों का तू-२, रक्षक है भोलेनाथ ।
ओ बाबा... ।। २ ।।

सोमवार को तेरा दर्शन, बहुत बड़ा शुभकारी है,
तेरी दया से हम भगतों की, कटती विपदा सारी है,
इस ''हर्ष'' का भोले बाबा-२, तू देना हरदम साथ ।
ओ बाबा... ।। ३ ।।

श्री शक्ति वन्दना

(तर्ज : आयेगी जरूर चिट्ठी...)

आयेगा बुलावा मेरा तेरे द्वार से, कब मेरी माँ,
धीर छूटा जाये मेरा, अब मेरी माँ ।। टेर ।।

हुआ क्या कसूर मेरा, मुझको बताओ माँ,
मेरी खतायें अपने, दिल से भुलाओ माँ,
चैन नहीं आये मोहे, अब मेरी... ।। १ ।।

दर्शन की प्यास मेरी, बढ़ती ही जाये रे,
बस तेरी याद मैया, मुझको सताये रे,
पथरा ना जाये आँखें, अब मेरी... ।। २ ।।

कितनी परीक्षा लोगी, कितना रूलाओगी,
''हर्ष'' तेरे द्वारे माता, कब तुम बुलाओगी,
रह ना जुदा मैं पाऊँ, अब मेरी... ।। ३ ।।

(तर्ज : ऐ मालिक तेरे बन्दे हम...)

ऐ माता तेरे बच्चे हम, माँ करना तू हमपे रहम,
तेरी किरपा मिले, तो ये जीवन खिले,
तेरे चरणों की धूली हैं हम ।। टेर ।।

घटा घनघोर छाई हे माँ, कुछ ना पड़ता दिखाई हे माँ,
गम के बादल घने, माँ डराये हमें, आके करले सुनाई हे माँ,
डर लगे हैं मां करदे जतन, तोड़ दे आके सारे भरम,
तेरी किरपा मिले... ।। १ ।।

हमें सूझे ना अब रास्ता, तेरे बेटों की सुन दास्तां,
आके ऊँगली पकड़, गोदी में जकड़, तुझे बेटों का माँ वास्ता,
बढ़ चले बनके माँ हम कदम, तेरे बच्चों में हो इतना दम,
तेरे किरपा मिले... ।। २ ।।

''हर्ष'' तुझसे ही चलता जहाँ, कोई तुझसा नहीं है यहाँ,
हम है पापी बड़े, तेरे दरपे खड़े, तेरी रहमत बरसती सदा,
हो कभी प्यार तेरा ना कम , ना सताये कभी हमको गम,
तेरी किरपा मिले... ।। ३ ।।

(तर्ज : दूल्हे का सेहरा...)

ओढ़ चुनरिया न्यारी न्यारी लागे माँ,
भगतों को तू प्यारी प्यारी लागे माँ,
मैया की चुनरी का कोई मोल नहीं,
चाँद सितारों पर ये भारी लागे माँ ।। टेर ।।

ओढ़ के बैठी है यूं सज धज के मेरी माँ, देखके शरमा रहे सारे नजारे माँ,
चम चमाती चूनरी भगतों का मन मोहे, है बड़ी बड़ भाग जो मैया के तन सोहे,
फीकी अब ये दुनिया सारी लागे माँ, भगतों को तू... ।। १ ।।

आसमाँ से देव सारे पुष्प बरसाये, आज तेरी चूनरी चन्दा को शरमाये,
राज रानी सी लगे है आज मेरी माँ, माँ के जैसा इस जहां में और है कहां,
ममता की प्यारी फुलवारी लागे माँ, भगतों को तू... ।। २ ।।

ओढ़ कर तूने चुनरिया लाज रखी माँ, बात तेरे सेवकों की आज रखी माँ,
''हर्ष'' तेरा दास सबको आज बतलाये, प्रेम की सौगात मैया पल में अपनाये,
होते हरदम प्रेम के भारी धागे माँ, भगतों को तू... ।। ३ ।।

(तर्ज : श्याम अलबेलो...)

दोहा : छोड़ चली माँ काहे अकेला बेटे को तू आज ।
सूनी हो गई मेरी अटरिया सूना दिल का साज ।।

कैसी घड़ी आई, कैसी घड़ी आई-२,
नव राते बीते मैया-२, होगी बिदाई ।। टेर ।।

पहली पूजा के दिन माँ, घर में तू आई रे,
महकाया आँगन मेरा, खुशिया माँ छाई रे,
छोड़ के माँ यूँ ना जाओ-२, करलो सुनाई ।। १ ।।
तुमसे जुदाई माता, सहने न पाऊँगा,
रो रो के आज मैया, मैं तो मर जाऊँगा,
बेटे पे गम की बदली-२, कैसी ये छाई ।। २ ।।
मुझसे जुदा होके माँ, क्या तू रह पायेगी,
बेटे की तुझको भी तो, याद माँ सतायेगी,
धीरज का बाँध टूटा-२, आती है रूलाई ।। ३ ।।
रोवे क्यूं ''हर्ष'' बेटा, दिल क्यूं उदास है,
हर घड़ी माता रहती, बेटों के पास है,
जब तू पुकारेगा मैं-२, दौड़ी-दौड़ी आई ।। ४ ।।

(तर्ज : जय जय अम्बे गायेंगे...)

जन्म जयन्ति आई है, जन्म जयन्ति-२ ।। टेर ।।

मंगसिर कृष्णा नवमी की ये पावन बेला आई है,
नारायणी का जन्म हुआ है घर-घर खुशियाँ छाई है,
घर घर मंगल गाये सारे, बाँटे आज बधाई है ।। १ ।।

सती धर्म का पाठ पढ़ाने, आज धरा पर आई है,
पति के संग माँ सती हुई तो, राणीसती कहलायी है,
सर्व सुहागन देखके तुझको, फूली नहीं समाई है ।। २ ।।

फूलों के गजरे लटके है, केशर चँदन महक रहे,
इत्तर रंग गुलाल उड़ाये, सेवक सारे चहक रहे,
खीर और पूड़ा भोग लगाया, पावन ज्योत जलाई है ।। ३ ।।

राणीसती दादी का सारे, सेवक जन गुणगान करे,
झुंझणूंवाली की महिमा का, मिलके ''हर्ष'' बखान करे,
बच्चे बूढ़े नाच रहे सब, नाचे लोग लुगाई है ।। ४ ।।

(तर्ज : सास भी कभी बहु थी...)

जन्मों का बन्धन सुहाना है, अपना माँ रिश्ता पुराना है,
ममता की गागर है, करूणा की सागर है,
तुझसा ना दूजा यहाँ, क्योंकि, ''तुझसे माँ चलता जहाँ''-२।।

सूरज चाँद तुम्हारे दम पर चलते हैं,
आँचल की छाया में बेटे पलते हैं,
दुनिया दिवानी है, तू माँ भवानी है,
तुझसा ना दूजा यहाँ... ।। १ ।।

बेटा अगर है भूखा तो माँ ना खाये,
बच्चों की आवाज पे आँखें भर आये,
आँखों में पानी है, गम से अनजानी है,
तुझसा ना दूजा यहाँ... ।। २ ।।

''हर्ष'' दया का हाथ सदा रखना माता,
श्री चरणों के पास सदा रखना माता,
तूही माँ दाता है, तूही विधाता है,
तुझसा ना दूजा यहाँ... ।। ३ ।।

(तर्ज : पिछम् धरां सूं म्हारा बाप जी)

टाबरिया बुलावे दादी, आंगणिये पधारो,
म्हारी दादीजी रा लाड़, लड़ावां जी ओ,
आओ आओ झुंझणूंवाली राणीसती मैया ।। टेर ।।

गंगा जल सू दादी थारा, चरण पखारां,
कोई चांदी री चौकी पे, बिठावां जी ओ,
बैठो बैठो झुंझणूवाली राणीसती मैया ।। १ ।।

दादी जी रे हाथा मांही, मेहन्दी रचावां,
कोई ताराजड़ी चून्दड़ी, उढावां जी ओ,
ओढ़ो ओढ़ो झुंझणूवाली राणीसती मैया ।। २ ।।

सरब सुहागण मिलके, दादी ने सजावां,
कोई फूलां रो गजरो, पहरावां जी ओ,
पहरो पहरो झुंझणूवाली राणीसती मैया ।। ३ ।।

चांदी री थाली में थाने, छप्पन भोग जिमावां,
कोई नागरियो पान, खुवावां जी ओ,
जिमो जिमो झुंझणूवाली राणीसती मैया ।। ४ ।।

लूण राई वारा 'हर्ष', निजरां उतारां,
कोई मीठा-मीठा भजन, सुणावां जी ओ,
सुणो सुणो झुंझणूवाली राणीसती मैया ।। ५ ।।

(तर्ज : बाबुल की दुआयें...)

तू बैठ पालकी नारायणी, तनधन जी के संग आज चली,
सूना सा हुआ आँगन माँ का, वीरान हुई बाबुल की गली ।। टेर ।।

अब किसका लाड लडाऊँ मैं, किसे मन की बात बताऊँगी,
मैं हाथ फिरा किसके सिर पे, आँचल में अपने सुलाऊँगी,
माँ की आँखे झर झर रोये, बाबुल की छाती आज जली ।। १ ।।

तेरी गईया कौन चरायेगा, अब गीता कौन सुनायेगा,
हमे रोज सबरे उठ करके, रामायण कौन सुनायेगा,
ये बूढ़े मात पिता तेरे, सम्भला के किसे तू आज चली ।। २ ।।

हे सूरज विनति है तुमसे, कही ज्यादा ताप नहीं करना,
तेरे तेज से ना कुम्हला जाये, फूलो सी कोमल है ललना,
ऐ बादल तुम छाये रहना, मुरझा ना जाये मेरी कली ।। ३ ।।

बेटी तो पराई अमानत है, इक दिन लौटानी पड़ती है,
मैके से उसकी डोली उठे, ससुराल से अरथी उठती है,
अब ''हर्ष'' तेरा पीहर छूटा, आबाद रहे साजन की गली ।। ४ ।।

(तर्ज : छोड़ दे सारी दुनिया...)

थाम ले मेरी मैया कलाई मेरी, माँ सुनाऊँ किसे मैं कहानी मेरी,
चोट खाई माँ कितने लगे घाव है, आके सुनले तू मैया जुबानी मेरी ।।

मैं भटकता रहा दरबदर मेरी माँ, ''आज तक ना किसी ने सहारा दिया''-२,
थक गया गम की राहों पे चलते हुए, ''नाम तेरा माँ लेकर पुकारा किया''-२,
चैन मिलता नहीं तेरे बिन माँ मुझे-२, आ दया तू दिखादे भवानी मेरी ।।
थाम ले मेरी... ।। १ ।।

प्यार मुझको भी तेरा मिले मेरी माँ, ''अपनी गोदी में मुझको बिठा ले जरा''-२,
डर न जाऊँ कहीं गम की आँधी से मै, ''अपने आँचल में मुझको छुपा ले जरा''-२,
प्यार दे दे तेरा मुझको ऐ भोली माँ-२, प्रीत बेटे से माता पुरानी तेरी ।।
थाम ले मेरी... ।। २ ।।

रास आई न रस्में जहां की मुझे, ''तेरे चरणों में दे दे ठिकाना मुझे''-२,
आज अर्पण करूँ मेरा जीवन तुझे, ''ये समझ ले कि अब है निभाना तुझे''-२,
''हर्ष'' मैं ही नहीं माँ अकेला यहाँ-२, सारी दुनिया है दिवानी तेरी ।।
थाम ले मेरी... ।। ३ ।।

(तर्ज : म्हारे लीले रा अवतार...)

थारे सेवकियां री लाज, अम्बे आन बचाओ आज,
मैया बेगा सा पधारो जी, पधारो मैया ।। टेर ।।

मैया थारे टाबरां ने, ओल्यूं थारी आवे,
बेगी आजा मैया म्हाने,अइयां क्यूं तरसावे,
आके राखो म्हारी लाज, मैया थारे बिना आज,
म्हारो नाहीं गुजारो जी, गुजारो मैया ।। १ ।।

ज्योत जगाके धोक लगाई, थाने आजा बुलाया,
मंगलकरणी हे जग जननी, चोखा सुगण मनाया,
मैया राखो म्हारो मान, म्हापे दीज्यो थोड़ो ध्यान,
इब तो थोड़ा सा विचारो जी, विचारो मैया ।। २ ।।

माता थारे टाबरियाँ की, आके करो सुणाई,
बेगा आओ हे जगदम्बा, देवे ''हर्ष'' दुहाई,
सुणल्यो भगतां री पुकार, थारी घणी करां मनवार,
म्हाने दुख सुं उबारो जी, उबारो मैया ।। ३ ।।

(तर्ज : धमाल)

दादी खोल दे खजानो तेरा, टाबर आया ऐ,
दोन्यूं हाथाँ माल लुटावे लूटण आया ऐ ।। टेर ।।

भादूड़ो महिनो प्यारो चंग सुरीला बाजे ऐ,
मंदरिये में झूम झूम के नाचण आया ऐ ।। १ ।।

बैठी माँ दरबार लगाके सेठाणी कुहावे ऐ,
थारा टाबर थारी किरपा पावण आया ऐ ।। २ ।।

होले होले बून्द पड़े माँ सावण भादो बरसे ऐ,
भजनां की बरखा में म्हे भी न्हावण आया ऐ ।। ३ ।।

इबकी झोली भर दे दादी फेरूँ दोड़्या आवाँ ऐ,
कुल की देवी थांसू अरज लगावण आया ऐ ।। ४ ।।

माल खजाना भरया पड़या माँ जाँपर तेरो पहरो ऐ,
''हर्ष'' दया की भीख भवानी मांगण आया ऐ ।। ५ ।।

(तर्ज : हद कर दी आपने...)

नंगे नंगे पाँव चल आया तेरे द्वार,
पैरों में छाले पड़े, सूझे आर न पार,
दादी दादी कहके बुलाऊँ, सुनले मेरी पुकार माँ,
आजा इकबार माँ, आजा इकबार माँ ।। टेर ।।

बड़ी दूर से चलकर आया, तेरा दर्शन पाऊँगा,
गर जो तूने ठुकराया तो, चौखट पे मर जाऊँगा,
पलक उठाकर इकबर माता, मेरी ओर निहार माँ,
आजा इकबार माँ, आजा इक बार माँ ।। १ ।।

शरणागत को आज भवानी, काहे तू बिसराती है,
बेटों की आवाज पे तू तो, हरदम दौड़ी आती है,
मैं भी तेरी शरण में आया, दोनों हाथ पसार माँ,
आजा इकबार माँ, आजा इकबार माँ ।। २ ।।

बार बार मैं तुझे पुकारूँ, पलके जरा उठाओ माँ,
आ जाओ इकबार भवानी, मुझको गले लगाओ माँ,
'हर्ष' तेरे दीदार को तरसे, सुनले करुण पुकार माँ,
आजा इक बार माँ, आजा इकबार माँ ।। ३ ।।

(तर्ज : पत्थर के सनम...)

पत्थर ना बनो, सुनो मेरी, मुझे तेरा सहारा है,
बड़ी आस लिये, तुझे माता, पुकारा है, पुकारा है ।। टरे ।।

तू ना मिली, तुझको सदा, ढूँढ़ा किया, इन राहों में,
तू आ भी जा-२, करदे दया, लेले मुझे, तेरी बाँहों में,
सूझे ना कोई ऽऽऽ, किनारा माँ... ।। १ ।।

मिलता है क्या, तुझको बता, बेटे को यूँ तरसाने में,
लेले खबर-२, आके जरा, सेवक खड़ा विराने में,
तेरा ही मुझे ऽऽऽ, सहारा माँ... ।। २ ।।

पत्थर नहीं, मातेश्वरी, तुझको सदा ही माना है,
आ ''हर्ष'' ने-२, जगदीश्वरी, जन्मों का बंधन जाना है,
बालक ये सदा ऽऽऽ, तुम्हारा माँ... ।। ३ ।।

डांडिया

(तर्ज : आधा है चन्द्रमा (अस्थाई)

(तर्ज : फूलों सा चेहरा तेरा (अन्तरा)

प्यारा सजा है सिणगार दादी,
अँखियों में ममता दुलार दादी ।। टेर ।।

माथे पे बिन्दिया, कानों में झुमके, नैनों में कजरे की धार सोहे,
नाक की नथली, होठों की लाली, भगतों का मनवा अपार मोहे,
फूलों के गजरे हजार दादी ।। १ ।।

सोने के कंगन, चाँदी की पायल, हाथों में मेंहदी रची है प्यारी,
सिर पे चुनरिया, ओढ़ के बैठी, चाँदी की चौकी पे मतवारी,
चन्दा सा सोणा निखार दादी ।। २ ।।

खुशबू से महके, अंगना तुम्हारा, चाँदी के छत्तर हजार लटके,
मुखड़े पे दमके, आभा निराली, बैठी है आसन पे आज डटके,
'हर्ष' रहा है निहार दादी ।। ३ ।।

(तर्ज : होलिया में उड़े रे...)

प्यारो सज्यो है सिणगार, कि दादी होले होले मुल्के,
फूलाँ री छाई है बहार, कि दादी होले होले मुल्के ।। टेर ।।

सति रूप में दादी आई,
चिता ने आसण आज बणाई,
कर सोलह सिणगार ।। १ ।।

दादी की है शान निराली,
सजके बैठी झुंझनूं वाली,
साँचो है माँ को दरबार ।। २ ।।

भगतां रो हिवड़ो हर्षायो,
जो बड़भागी थाने सजायो,
बैंको तो होसी बेड़ो पार ।। ३ ।।

नाही सज्यो है नाही सजेलो,
यो सिणगार है पहलो पहलो,
''हर्ष'' करे है जै जै कार ।। ४ ।।

(तर्ज : जे हम तुम चोरी से...)

बहे जलधारा है, बैठी माँ तारा है,
सन्मुख विराजे भूतनाथ, बड़ा पावन ये धाम है ।।

नये वर्ष को लेकर, पहला बैशाख है आया,
मैया का उत्सव है, और घर-घर आनन्द छाया,
होठों पर आज माँ-२, तेरा ही नाम है ।। १ ।।

माता के मंदिर में, भगतों की भीड़ समाई,
आज खजाना खोले, बैठी है तारा माई,
दर्शन धन लूट लो-२, दर्शन की शाम है ।। २ ।।

आदि शक्ति माँ तारा, महिमा तेरी है न्यारी,
आदि अन्त के दाता, है भूतनाथ त्रिपुरारी,
चरणों में 'हर्ष' का-२, शत् - शत् प्रणाम है ।। ३ ।।

(तर्ज : देना हो तो दीजिये...)

बैठी हो माँ सामने, कर सोलह सिंगार-२,
तू करूणा की है मूरत, और ममता का भंडार ।। टेर ।।

निरख रही हो हम भगतों को, बड़े प्यार से जग जननी,
इसी तरह हम भगतों को भी, तेरी ही सेवा करनी,
तू हरदम देरी रहना-२, हमको माँ प्यार दुलार ।। १ ।।

तेरी ममता की छाया में, इसी तरह हम पले बढ़े,
तेरी किरपा से ही माता, हम अपने पैरों पे खड़े,
तेरे बच्चों को देने में-२, तू करती नहीं इन्कार ।। २ ।।

हम बच्चों पे हरदम मैया, आशिर्वाद तुम्हारा हो,
''हर्ष'' कहे माँ शेरोंवाली, हर पल साथ तुम्हारा हो,
तू हाथ दया का रखना-२, साँचा तेरा दरबार ।। ३ ।।

(तर्ज : दिल जान जिगर तुझपे निसार किया है...)

भगतों ने मैया तुझको निखार दिया है, प्यार किया है माँ तुझे प्यार किया है,
सोणा सा आज तेरा सिंगार किया है, प्यार किया है माँ तुझे प्यार किया है ।।

हाथों से भगतों ने तुझको सजाया,
दुल्हन सा तुझको भवानी बनाया,
झूम झूम गायें, लेते हैं बलाये-२,
सबने माँ तेरा दीदार किया है ।। १ ।।

मैया तुझको रखेंगे दिल में बसाके,
नैनो को तेरा बसेरा बनाके,
तुझको बिठायेंगे, अपना बनायेंगे-२,
अब तक तुम्हारा इंतजार किया है ।। २ ।।

''हर्ष'' दिवाना माँ दर पे खड़ा है,
चरणों में तेरे भवानी पड़ा है,
दे दे तू मैया, आँचल की छैयाँ-२,
वंदन तुम्हारा हर बार किया है ।। ३ ।।

(तर्ज : नफरत की दुनियां...)

मतलब के रिश्तों को तोड़ के, प्यारे के बंधन में आन बंधा मेरी माँ,
ममता की छाया दे दातिये, तेरी चौखट पे आज खड़ा मेरी माँ ।।

इस पाप के जग में, झूठा है हर नाता,
घावों को दिखलाऊं, कैसे तुझे माता,
तू प्यार का भण्डार है माँ तीनों लोकों में,
नाम बड़ा तेरा माँ ।। १ ।।

अपनों का मारा हूं, दुखड़ों से हारा हूं,
माँ थामले मुझको, बेटा तुम्हारा हूं,
अब लोट के खाली न जाऊं बालक ये जिद पे,
आज अड़ा मेरी माँ ।। २ ।।

तारीफ तेरी मैं, कैसे करूं दाती,
जग छोड़ दे जिनको, उनको तू अपनाती,
इस ''हर्ष'' को जालिम जमाने ने है ठुकराया,
शरण पड़ा तेरी माँ ।। ३ ।।

(तर्ज : भागा रे भागा...)

माता ओ माता तेरा दास करे जगराता,
सच्चे मन से ध्यान धरे वो मन इच्छा फल पाता ।। टेर ।।

मैया का जो ध्यान लगाये ''दुख वो कभी न पाते हैं''-२,
बंश बेल उनकी बढ़ जाती ''बैठे मौज मनाते हैं-२,
अनधन के भण्डार भरे माँ महिमा जो भी गाता ।। १ ।।

माता रानी घर मे आये ''दूर करे अंधियारा''-२,
रौशन करती घर आंगन को, ''फैलाती उजियारा''-२,
माता के आँचल की फिर वो शीतल छाया पाता ।। २ ।।

ध्यानू ने माता को ध्याया, ''जग में नाम कमाया है''-२,
''हर्ष'' कहे माँ के भगतों में, ''वो सिरमोर कहाया है''-२,
तन मन अर्पण करने वाला भव से मुक्ति पाता ।। ३ ।।

(तर्ज : कब आयेगा मेरा सांवरिया...)

मुझको ना भुलाना मैया-२,
माँ इक दुखियारा हूं, मैं गम का मारा हूँ,
चरणों में आना पड़ा, दुनिया से हारा हूँ ।। टेर ।।

दिखलाऊं आज तोहे, सीना माँ चीर के,
दिल में चुभे हैं मेरे, कितने ही तीर से,
अपनों ने सताया है, गैरों ने रूलाया है,
बालक ये अब तेरी, माँ शरण में आया है ।। १ ।।

फूलों की चाह में माँ, काँटे मिले हैं,
दामन में मेरे माता, शिकवे गिले हैं,
चरणों में बिठा ले माँ, आँचल में छुपा ले माँ,
रख सिर पे हाथ तेरा, दुखड़ो से बचाले माँ ।। २ ।।

ठुकराया गर तूने, बोल कहाँ जाऊंगा,
चौखट पे ''हर्ष'' तेरी, मैं मर जाऊँगा,
तेरी किरपा माँ पाऊं, तेरा साथ सदा चाहूँ,
अब छोड़ तेरा दर माँ, मैं और कहाँ जाऊँ ।। ३ ।।

(तर्ज : मेरा प्यार भी तू है...)

मेरे गीत भी तू है, संगीत भी तू है,
मेरी पलकों में तू ही समाई,
तोहे निहारूँ माँ, निहारूँ माँ ।। टेर ।।

तू है जो मेरे साथ भवानी, कौन सा संकट पास में आये,
हाथ पकड़ कर मेरी माता, राहों पे चलना मुझको सिखाये,
तेरा दिवाना बनाये, मेरे गीत भी... ।। १ ।।

मुश्किल कोई अब तो नहीं है, साथी बनी दातार ये मेरी,
हर पल हर दम मेरी बाँहे, थामें खड़ी सरकार ये मेरी,
महका है जीवन मेरा, मेरे गीत भी... ।। २ ।।

गुलशन मेरा महक उठा माँ, प्यार के तूने फूल खिलाये,
''हर्ष'' सदा माँ साथ निभाना, बेटे की बगिया मुरझा ना जाये,
मुझको गले तू लगाये, मेरे गीत भी... ।। ३ ।।

(तर्ज : जबसे मिला दिदार साँवरे...)

मेहन्दी ल्यायो तेरो दास राचणी,
हाथां मण्डवाले तू आज मावड़ी ।। टेर ।।

घणे जतन सू घोल के दादी, टाबर मेहन्दी ल्यायो,
टाबरिये की लाज राख ले, तेरे माण्डण आयो,
मेहन्दी माँ सीख आयो दास माण्डणी ।। १ ।।

भाँत-भाँत की मेहन्दी माण्डू, मन चाही मण्डवाले,
जद भी तेरे जी में आवे, हेलो मार बुलाले,
मेहन्दी माण्डूला माँ आज सोवणी ।। २ ।।

या अनमोल सुहाग निशानी, हाथां में रच जासी,
लाल सुरंगी प्यारी-प्यारी, भगतां के मन भासी,
मेहन्दी मण्डाले माँ मन भावणी ।। ३ ।।

एकर हाथ मण्डाले दादी, मेरो भाग्य जगादे,
''हर्ष'' करे अरदास भवानी, मेरी आस पुरादे,
तू ही माँ भगतां को मान राखणी ।। ४ ।।

(तर्ज : उस मालिक का एक है नाम....)

मैया तेरे कितने है नाम,
कितने माँ रूप तेरे, कितने है धाम ।। टेर ।।

तू ही दुर्गा , तूही काली, ''तू है मैया शेरांवाली'' -२,
जय अम्बे माँ, जगदम्बे माँ, ''जय हो मैया मेहरांवाली''-२,
मैया ये दुनिया तेरी दिवानी, सबसे बड़ी तू मात भवानी,
दुनिया ध्यावे आठो याम,... ।। १ ।।

अन्नपूर्णा अन्न की दाता, ''धन वैभव की लक्ष्मी माता''-२,
वीणा पाणी विद्या देती, ''चण्डी रूप में दुर्गा माता''-२,
मैया तेरी शान निराली, जय दुर्गे जय खप्परवाली,
सबकी जुबां पे तेरा ही नाम,... ।। २ ।।

विन्ध्याचल में विन्ध्यवासिनी, ''मुम्बई में माँ मुम्बा देवी''-२,
कटरे वाली वैष्णव माता, ''गौहाटी में कामाख्या देवी''-२,
मैया तेरे नाम है लाखों, रूप है लाखो, धाम है लाखों,
''हर्ष'' तुझे माँ लाखों प्रणाम,... ।। ३ ।।

(तर्ज : कौन दिशा में लेके चला...)

मैया मैं रंगा के लाया तेरी ये चुनरिया-२,
तेरी महर नजर, हे भवानी मोपे कर,
जरा ओढ़ तो ले, ओढ़ तो ले,
भावों में भरा के लाया तेरी ये चुनरिया-२,
थोड़ा ध्यान इधर, हे भवानी मोपे कर,
जरा ओढ़ तो ले, ओढ़ तो ले ।। टेर ।।

ब्रह्मा जी ने ताना बुनकर, पोत बनाया एक माँ,
विष्णु जी ने इसे सजाया, गूंथे रतन अनेक माँ,
शंकर जी ले करके आये-२, संग में लिये गणेश माँ,
इन्द्र ढुलाये मैया तुझको चँवरिया-२ ।। १ ।।

इन्द्रधनुष के सात रंग से, चूनर चमके आपकी,
चाँद सितारे झिलमिल करते, ओढ़ के बैठो पालकी,
सूरज की किरणे शर्माये-२, देख के चूनर आपकी,
सजकर ऐसे बैठो लागे ज्यूं दुल्हनियाँ-२ ।। २ ।।

आसमान से सजकर आई, चूनरिया तेरी आज माँ,
कुदरत ने अनमोल खजाना, बख्शा इसको आज माँ,
आज चाव से तुझको उढ़ायें-२, रखना हमारी लाज माँ,
होले होले बदरा में चमके बिजुरिया-२ ।। ३ ।।

हे मैया तू ओढ़ के इसको, रखना हमारा मान ओ,
'हर्ष' खड़े हैं तेरे द्वारे, बालक हम नादान ओ,
भूल चूक की माफी देना-२, सेवक अपना जान ओ,
आस घनेरी लेके आया मैं दुअरिया-२ ।। ४ ।।

उनके वादों की सुनिये जरा दास्तां
हम तो तेरे हैं हरदम वो कहते रहे
पाठ हमको वफा का पढ़ाते थे जो
बेवफा हो गये देखते - देखते ।

(२)

(तर्ज : कभी राम बनके...)

मोहे प्यार करने, माँ दुलार करने,
चली आना भवानी चली आना ।। टेर ।।

कौन मेरा सिवा है तुम्हारे, तेरा बेटा माँ रो-रो पुकारे,
मेरी लाज रखने, सिरपे हाथ धरने,
चली आना... ।। १ ।।

माँ बेटे का रिश्ता है प्यारा, आके देना माँ मुझको सहारा,
आँचल छाँव करने, शीतल आज करने,
चली आना... ।। २ ।।

चलूं पाप की गठरी उठाये, अब तू ही तो आकर बचाये,
मुझको माफ करने, मन को साफ करने,
चली आना... ।। ३ ।।

गम के सायों से मैं डर रहा हूँ, 'हर्ष' विनती यही कर रहा हूँ,
तेरी शान रखने, मेरा मान रखने,
चली आना... ।। ४ ।।

(तर्ज : बाबुल का ये घर बहना...)

राणी सती दादी की, ये दुनिया दिवानी है,
सारा जग जाने है, माँ सतियो की रानी है ।। टेर ।।

बनके दुल्हनिया माँ, डोली में बैठ चली,
सूना हुआ अंगना, सूनी हुई रे गली,
मनवा तो पुल्कित है, पर आँखो में पानी है ।। १ ।।

धोखे से दुष्टों ने, आके घात लगाई थी,
बन करके रणचण्डी, नारायणी आई थी,
होने को संग में सती, मेरी मैया ने ठानी है ।। २ ।।

राणा ने तब अपने, वादे को निभाया था,
भष्मी को लेकर के, वो झूंझनूं आया था,
सबको सुनाई थी, जाके सारी कहानी है ।। ३ ।।

तेरह सती कुल की, पर दादी का क्या कहना,
''हर्ष'' हमें हरदम, माँ के चरणों में ही रहना,
झूंझनू में वास करे, ये आदि भवानी है ।। ४ ।।

(तर्ज : रूत झोलियाँ भरन...)

रूत भादूड़े री आई-२,
कि मेलो थारो खूब भरसी, म्हारी मायड़ ।। टेर ।।

थारे गठजोड़े सूं आवाँ-२,
कि पलक उघाड़याँ सरसी, म्हारी... ।। १ ।।

थारी लाल चून्दड़ी ल्यावां-२,
कि दादी थाने ओढ़याँ सरसी, म्हारी... ।। २ ।।

थारे मेहन्दी माण्डण आवाँ-२,
कि हाथां थारे खूब रचसी, म्हारी... ।। ३ ।।

थे माल मोकलो लुटास्यो-२,
कि भगतां री झोली भरसी, म्हारी... ।। ४ ।।

थारे चरणा धोक लगास्यां-२,
कि सिर पर हाथ धरसी, म्हारी... ।। ५ ।।

यो ''हर्ष'' माँ अरज गुजारे -२,
कि मेले में बुलायाँ सरसी, म्हारी... ।। ६ ।।

(तर्ज : सुनले ओ साँवरिया)

लाखां ने थे तार्‌या, माँ म्हाने भी थे तारो,
टाबरियो हूँ थारो दादी, टाबरियो हूँ थारो ।। टेर ।।

थारे बिन ओ दादी म्हारो, दूजो नहीं सहारो,
अटक्योड़ी नैया ने देसी, दादी आज किनारो,
थोड़ो थे विचारो, माँ थोड़ो थे विचारो ।। १ ।।

घड़ी घड़ी ओ दादी म्हाने, ओल्यूँ थारी आवे,
संकट की घड़ियां में म्हारी, दादी लाज बचावे,
म्हारी ओर निहारो, माँ म्हारी ओर निहारो ।। २ ।।

आज फेरल्यो थारी निजरां, थोड़ी म्हारे कानी,
'हर्ष' कह्वे माँ म्हारे मन की, थारे से के छानी,
बिगड़ी आज संवारो, माँ बिगड़ी आज संवारो ।। ३ ।।

(तर्ज : किसने सजाया तुमको मोहन...)

सजके यूँ बैठी मेरी मैया, "लागे ज्यूँ दुल्हन,"-२
खनके खना खन तेरा मैया, "हाथों में कंगन"-२ ।। टेर ।।

श्रृंगार सजा है, कितना माँ प्यारा,
दरबार लगा है, दुनिया से न्यारा,
महके है गजरे जैसे मैया, प्यारा सा उपवन ।। १ ।।

ये लाल चुनरिया, तेरी माँ चमके,
नथली में हीरा, तेरे माँ दमके,
मीठी घनेरी लागे मैया, पायल की छन छन ।। २ ।।

सिंहासन बैठी, माँ हमें निहारे,
चरणों में बैठे, माँ तेरे दुलारे,
''हर्ष'' नजारा लागे मैया, कितना ये पावन ।। ३ ।।

(तर्ज : ईसर जी तो पेचो बाँधे...)

सिंहासन पर दादी बैठ्या, सेवक चँवर ढुलावे ओ राज
म्हे दादी थारा सेवक छां, सेवक छां माँ थारा ओ राज,
दादी जी ने प्यारा ओ राज म्हे दादी थारा सेवक छां ।। टेर ।।

गंगा जल सूं चरण धुलाया, चंदन चोक पुराया ओ राज म्हे दादी थारा सेवक छां,
अंत्तर केशर सूं महाकाया, गजरो लाल पिहराया ओ राज म्हे दादी... ।। १ ।।

सर्व सुहागण मेहन्दी मांडी, चूनड़ दास उढ़ाया ओ राज म्हे दादी थारा सेवक छां,
सज धज के बनड़ी सी लागे, भगतां के मन भाया ओ राज म्हे दादी... ।। २ ।।

रोली तिलक लगायो माथे, मंगल गीत सुणाया ओ राज म्हे दादी थारा सेवक छां,
सगला सेवक मिलकर नाचे, माँ ने आज रिझाया ओ राॅज म्हे दादी... ।। ३ ।।

छप्पन भोग छत्तिसों मेवा, थारे भोग लगाया ओ राज म्हे दादी थारा सेवक छां,
भगतां पर माँ महर करी जी, रूच रूच भोग लगाया ओ राज म्हे दादी... ।। ४ ।।

चालो सगला करां आरती, दादी घर में आया ओ राज म्हे दादी थारा सेवक छां,
बड़भागी म्हे ''हर्ष'' भवानी, म्हारो मान बढ़ाया ओ राज म्हे दादी... ।। ५ ।।

(तर्ज : आयो फागण मेलो...)

सुणल्यो दादी म्हारी, ओल्यूं आवे थारी,
म्हाने दर्श दिखाओ, किरपा करद्यो भारी ।। टेर ।।

टाबरिया ने थारे बिना, दादी कुछ नहीं भावे,
नीन्दड़ली ना आवे थारी, यादड़ली सतावे,
केशर की माँ क्यारी, म्हाने लागे खारी ।। १ ।।

कईयाँ देर लगाई म्हारे, आँगणिये पधारो,
हिवड़े सूं लगाके म्हाने, दुखड़ा सूं उबारो,
इबतो करल्यो त्यारी, आस पुराओ म्हारी ।। २ ।।

गंगा जल सूं दादी थारा, पगल्या म्हे धुवास्याँ,
रोली मोली गजरा सूँ माँ, थाने खूब सजास्याँ,
निरखाँला म्हे थारी, सूरत प्यारी प्यारी ।। ३ ।।

टाबरिया सूं दादी थाने, रूस्याँ कँईया सरसी,
म्हारे घराँ ''हर्ष'' भवानी, थाने आणो पड़सी,
कद आवेली बारी, आँख्याँ रो रो हारी ।। ४ ।।

श्री शक्ति वन्दना

(तर्ज : बनाके क्यूँ बिगाड़ा रे)

हंसा के ना रुलाना रे,
रुला ना मेरी माता, शेरांवाली-२ ।। टेर ।।

उजड़ रहा है गुलशन मेरा, चारों ओर विराना है,
बीते समय को याद करे और, रोये तेरा दिवाना है,
जो था मेरा, मुझको वापस,
दिलाना मेरी माता, शेरांवाली... ।। १ ।।

अन्तर में ये मनवा मेरा, तिल तिल कर दिन रैन जले,
आस का पंछी उड़ा शिकारी, पल पल दोनों हाथ मले,
अपने दिल से, मुझको तू ना,
भुलाना मेरी माता, शेरांवाली... ।। २ ।।

बनके सहारा आ जाओ माँ, तुझ बिन कौन हमारा है,
डूब रही है जहां पे नैया, थोड़ी दूर किनारा है,
बिछड़ गये जो, 'हर्ष' उन्हें तू,
मिलाना मेरी माता, शेरांवाली... ।। ३ ।।

चेतावनी भजन

(तर्ज : क्या मिलिये ऐसे लोगों से...)

अति कभी ना करना प्यारे, इति तेरी हो जायेगी ।
बिन पंखों के पंछी जैसी, गति तेरी हो जायेगी ।।

अति सुन्दर थी सीता मैया, जिसके कारण हरण हुआ,
अति घमण्डी था वो रावण, जिसके कारण मरण हुआ,
अति सदा वर्जित है बन्दे, क्षति तेरी हो जायेगी ।। १ ।।

अति वचन बोली पांचाली, महाभारत का युद्ध हुआ,
अति दान देकर के राजा, बलि भी बंधनयुक्त हुआ,
अति विश्वास कभी ना करना, मति तेरी फिर जायेगी ।। २ ।।

अति बलशाली सेना लेकर, कौरव चकानाचूर हुए,
अति लालचवश जाने कितने, सत्कर्मों से दूर हुए,
अति के पीछे ''हर्ष'' न भागो, अति अन्त करवायेगी ।। ३ ।।

(तर्ज : ओह रे ताल मिले...)

ओऽ, कोई लाख करे कितना जतन रे, होनी सदा ही होवे,
होनी बड़ी प्रबल है प्यारे, टाले ना टले ।। टेर ।।

होनी का कहर तो इक दिन, ''अर्जुन पे जब टूटा''-२,
गाण्डिव के रहते उसको, ''भीलों ने झट लूटा''-२,
ओ सुनियो रेऽऽऽ, गाण्डिव के रहते उसको, ''भीलों ने झट लूटा''–२,
होनी के आगे इक ना, किसी की चले ।। १ ।।

होनी के वश में होकर, ''कैकई ने हठ पकड़ी''-२,
रघुवर को वन में भेजा , ''मनही मन वो अकड़ी''-२,
ओ सुनियो रेऽऽऽ, रघुवर को वन मे भेजा, ''मनही मन वो अकड़ी''-२,
दशरथ को खोकर रानी, हाथों को मले ।। २ ।।

होनी से कौन बचा है, ''होनी जिस पर टूटे''-२,
पाण्डव सब मूक खड़े थे, ''कौरव अस्मत लूटे''-२,
ओ सुनियो रेऽऽऽ, पाण्डव सब मूक खड़े थे, ''कौरव अस्मत लूटे''-२,
''हर्ष'' कहे होनी तो होगी, टाले ना टले ।। ३ ।।

(तर्ज : इतनी शक्ति हमें देना दाता...)

एक ना एक दिन तो ये होगा, मौत आकर के लोरी सुनाए,
तू जगाने से भी ना जगेगा, नीन्द ऐसी तुझे गहरी आए ।।

तेरी हस्ती को जिसने मिटाया, वो भी आकर के मातम मनाए,
जिसने गर्दिश में तुझको गिराया, वो भी झुक कर के तुझको उठाए,
तेरा दम टूटते ही ऐ प्राणी, तेरे अपनों का मोह टूट जाए,
तू जगाने से भी ना... ।। १ ।।

रोज पलकों पे तुझको बिठाए, एक दिन वो भी आँखे चुराए,
तेरी सूरत जिन्हें लगती प्यारी, भूत बनके उन्हें वो डराए,
आँख फेरेगा जिस दिन जहाँ से, ये जहाँ तुझसे मुँह फेर जाए,
तू जगाने से भी ना... ।। २ ।।

तेरे जीवन के साथी हैं सारे, कोई मर के नहीं संग जाता,
तू अकेला ही उस दर पे जाए, तेरे करमों का लेकर तू खाता,
''हर्ष'' खुदगर्ज है ये जमाना, तेरी नेकी बदी संग जाए,
तू जगाने से भी ना... ।। ३ ।।

(तर्ज : कसमें वादे प्यार वफा...)

कलयुग में इक बार कन्हैया, ग्वाले बन कर आओ रे,
आज पुकार करे तेरी गइया, आके कंठ लगाओ रे ।। टेर ।।

जिनको मैंने दूध पिलाया, वो ही मुझको सताते हैं,
चीर फाड़कर मेरे बेटे, मेरा ही मांस बिकाते हैं,
अपनों के अभिशाप से मुझको, आके आज बचाओ रे ।। १ ।।

चाबुक से जब पीटी जाऊँ, सहन नहीं कर पाती मैं,
उबला पानी तन पर फेंके, हाय हाय चिल्लाती मैं,
बिना काल मैं तिल-तिल मरती, करुणा जरा दिखाओ रे ।। २ ।।

काहे हमको मूक बनाया, घुट-घुट कर यूं मरने को,
उस पर हाथ दिये ना तूने, अपनी रक्षा करने को,
भटक गई सन्तान हमारी, रस्ता आन दिखाओ रे ।। ३ ।।

एक तरफ तो बछड़े मेरे, अनधन को उपजाते हैं,
उसी अन्न को खाने वाले, मेरा वध करवाते हैं,
''हर्ष'' जरा तुम माँ के वध पे, आके रोक लगाओ रे ।। ४ ।।

(तर्ज : अब सौंप दिया इस जीवन...)

जब छोड़ चलूं इस दुनिया को, होठो पे तुम्हारा नाम रहे,
चाहे स्वर्ग मिले या नर्क मिले, हृदय में तुम्हारा धाम रहे ।। टेर ।।

तन श्याम नाम की चादर हो, जब गहरी नींद में सोया रहूँ,
कानों में मेरे गुंजित कान्हा, उस वक्त तुम्हारा नाम रहे ।। १ ।।

रस्ते में तुम्हारा मंदिर हो, जब मंजिल को मैं गमन करूँ,
चौखट पे तेरी ऐ मनमोहन, मेरा अंत समय प्रणाम रहे ।। २ ।।

उस वक्त कन्हैया आ जाना, जब चिता पे जाकर शयन करुँ,
मेरे मुख में तुलसी दल देना, इतना सा तुम्हारा काम रहे ।। ३ ।।

गर सेवा करी है मैंने तेरी, तब उसका ये उपहार मिले,
इस ''हर्ष'' भगत का साँवलिये, चरणों में तेरे स्थान रहे ।। ४ ।।

(तर्ज : ऐ मेरे दिले नादान...)

जैसी तेरी करनी है, वैसा ही तू फल पाये,
तेरे पाप पुण्य रब के, खाते में लिखे जाये ।। टेर ।।

क्या याचक क्या दानी, क्या राजा क्या रानी,
हम सबके करमों की, गाथा है लिखी जानी,
उसकी नजरों से भला, क्या कोई बच पाये ।
जैसी तेरी... ।। १ ।।

जितनी जिसकी चादर, उतना ही वो पाता है,
ना किसी को कम देता, ना किसी को ज्यादा है,
इन्साफ के पलड़े में, तेरे कर्म तुले जाये ।
जैसी तेरी... ।। २ ।।

ऐ ''हर्ष'' तेरी करनी, ज्यादा गुमनाम नहीं,
हर पल के नजारे को, दो आँखें देख रही,
सत्कर्म जरा कर ले, इतना क्यूं भरमाये ।
जैसी तेरी... ।। ३ ।।

(तर्ज : क्या मिलिये ऐसे लोगो से...)

दगा किसी का सगा नहीं है, किया नहीं तो कर देखो,
जिसने जिसने दगा किया है, उसका जा के घर देखो ।।

दगा किया था रावण ने जब, साधु वेष बनाया था,
भिक्षा लेने गया था लेकिन, सीता ही हर लाया था,
लंका नगरी राख बनाये, पल भर में रघुवर देखो ।। १ ।।

कौरव पाण्डव जुआ खेले, शकुनी पासे फेंक रहा,
दुर्योधन की दगागिरि को, वो नट नागर देख रहा,
बिना शस्त्र के वंश मिटाये, लीला नटवर की देखो ।। २ ।।

किसी को धोखा देकर प्यारे, एक बार खुश हो जाना,
कर्मों की अग्नि में जल के, जीवन भर तू पछताना,
सच्चा सुख पाने की खातिर, भला किसी का कर देखो ।। ३ ।।

धर्म के ग्रन्थों ने भी भक्तों, ये ही पाठ पढ़ाया है,
जिसने जैसा कर्म किया है, वैसा ही फल पाया है,
सतकर्मों की बेल हरि है, ''हर्ष'' लगा इक बर देखो ।। ४ ।।

(तर्ज : होठो से छू लो तुम...)

भावों के बन्धन में, प्रभु-वर जकड़े जाते,
भावों में बँध करके, प्रभु आप चले आते ।। टेर ।।

झूठे आडम्बर की, दरकार नहीं इनको,
इनके हो जाओ तुम, स्वीकार यही इनको,
जब पूर्ण-समर्पण हो, प्रभुवर तब मिल पाते ।। १ ।।

भावों से भरा इक पुष्प, ये प्रेम से अपनाते,
भावों के बिना सुन्दर, गजरे भी ठुकराते,
हृदय के तार जुड़े, प्रभु झट दौड़े आते ।। २ ।।

भावों के बिना बोलो, दोनों में अन्तर क्या,
पहचान क्या इन्सां की, पहचान पशु की क्या,
जीवों में श्रेष्ठ तभी, इन्सान कहे जाते ।। ३ ।।

भावों में चिन्तन कर, इनको चिन्ता तेरी,
ऐ ''हर्ष'' शरण में आ, क्यूं करता तू देरी,
भावों के भूखे वो, अंतर में बस जाते ।। ४ ।।

(तर्ज : जाने वाले एक संदेशा...)

भूल के अपनी सारी भूलें, चाल समय की तू पहचान,
वक्त बड़ा बलवान है इससे, डरके रहना तू इंसान ।। टेर ।।

राजतिलक होगा रघुवर का, सूर्यवंश हर्षाया था,
चौदह साल वनों में भटके, समय ने पलटा खाया था,
समय की करनी समय ही जाने, और सका ना कोई जान ।। १ ।।

हरिश्चन्द्र राजा भी भगतों, शमशानों का डोम बना,
करने सकी ना दाह पुत्र का, महारानी भी कफन बिना,
जग में सदा कभी ना रहता, वक्त किसी का एक समान ।। २ ।।

अर्जुन भीम ने महाभारत में, बड़ा कहर बरपाया था,
चीर हरण को वही भीम, अर्जुन भी रोक न पाया था,
वक्त नहीं है किसी की वश में, वक्त के वश में हर इंसान ।। ३ ।।

कल क्या होगा कोई न जाने, वक्त के हाथ में चाबी है,
बड़े-बड़े महापुरुषों ने भी, समय से हारी बाजी है,
वक्त के आगे चीज है क्या तू, 'हर्ष' झुके है श्री भगवान ।। ४ ।।

(तर्ज : तुम अगर साथ देने...)

मेरे दाता ने सब कुछ दिया है हमें, पाने वाला ना पाये तो किसकी खता,
बक्श दी जो इनायत इन्सां तुझे, तू समझ ने न पाये तो किसकी खता ।।

जीना चाहा तो जीने को दी जिन्दगी, जीने खातिर हमें हर सहारा दिया,
प्रेम पूजा निभाने को दी बन्दगी, अपने बन्दों को अद्भुत पिटारा दिया,
जैसे चाहे जिये बैर वो ना करे, बंदगी जो ना आये तो किसकी खता ।।१ ।।

तेरे हाथों में उसने कलम सौंप दी, फिर भला काहे लिखने से कतरा रहा,
ऐ भले आदमी तू कलम फेंक कर, हाथ बन्दूक लेकर के इतरा रहा,
प्रीत अंगार बन कर शोले बनी, प्रीत करनी ना आये तो किसकी खता ।।२ ।।

उसने देने में रखी ना बिल्कुल कसर , तू ना पाने सका ये तेरा दोष है,
आज इन्सान खुद को समझता खुदा, नेकि करने का उसको कंहा होश है,
''हर्ष'' इन्साँ को इन्साँ बनाया मगर, आदमीयत ना आये तो किसकी खता ।।३ ।।

(तर्ज : आ लौट के आजा...)

म्हाने पाणिड़ो पिलादे म्हारा लाल, तीस घणी जोर की लागी रे,
थोड़ो छायाँ में बेटा लेके चाल, तीस घणी की लागी रे ।। टेर ।।

माता पिता ने कान्धे ले काँवड़, तिरथा में श्रवण चाल्यो,
बियाबान जंगल के मांही, पाणी लेवण ने हाल्यो,
मिल्यो कुओं ना कोई ताल, तीस घणी जोर की लागी रे ।। १ ।।

चाल चाल कर श्रवण थकग्यो, पाणी री बून्द न पाई,
आन्धा मायत बैठ्या तिसाया, बेटे की आख्याँ भर आई,
के होसी रे दोन्यां रो हाल, तीस घणी जोर की लागी रे ।। २ ।।

गिरतो पड़तो उत्तर दिशा में, पाणी लेवण जद आयो,
कल कल करती सरजू नदी ने, देख घणो हर्षायो,
के जाणे रे उडीके बीने काल, तीस घणी जोर की लागी रे ।। ३ ।।

(२)

सरजू किनारे आकर के श्रवण, पाणी री झारी डुबोई,
तीर चलायो राजा दशरथ, समझ जिनावर कोई,
लाग्यो तड़फण धरा पर लाल, तीस घणी जोर की लागी रे ।।४ ।।

मरतो श्रवण राजा सूं बोल्यो, म्हारो तू काम बणादे,
माता पिता मेरा बैठ्या तिसाया, जाकर के पाणी पिलादे,
राजा चाल्यो रे मरयोड़ी चाल, तीस घणी जोर की लागी रे ।।५ ।।

राजा यूं बोल्यो पाणी थे पीवो, बेगा सा प्यास बुझाओ,
बोली ने सुणके मायत यूँ बोल्या, कोन्या तू म्हारो है जायो,
कठे छोड़यो रे बतादे म्हारो लाल, तीस घणी जोर की लागी रे ।।६ ।।

''हर्ष'' सुणी जद राजा की बात्याँ, श्राप दियो घणो भारी,
जइयाँ मरा हाँ बेटे बिना म्हें, आवेली तेरी भी बारी,
राजा तड़पे लो तू भी बिना लाल, तीस घणी जोर की लागी रे ।।७ ।।

(तर्ज : ओ मेरे सनम...)

ये तेरे करम, ये तेरे करम,
ऐ मनवा खेवनहार तेरे,
ये जीवन के आधार तेरे ।। टेर ।।

सब जीवों में उस मालिक ने, क्यूं तुझको श्रेष्ठ बनाया है,
तुम भला बुरा पहचान सको, ये गुण भी तुझमें समाया है,
भव सिन्धु में तेरी नैया के, शुभ कर्म सदा पतवार बने,
ये जीवन के... ।। १ ।।

ये सोच समझ ये भावुकता, पशुओं को प्रभु ने क्यूं ना दी,
ये दया, धरम, धीरज, भक्ति, तुझमें ही भला काहे भरदी,
तेरे हृदय में ये गुण तेरे, सद्ज्ञान का ही संचार करे,
ये जीवन के... ।। २ ।।

बस यही अरज तुमसे मेरी, शुभ कर्म सदा करते रहना,
दीनों की सदा सेवा करना, सत के पथ पे चलते रहना,
ऐ ''हर्ष'' तुझे तेरे कर्मों से, आखिर इक दिन करतार मिले,
ये जीवन के... ।। ३ ।।

चेतावनी भजन

(तर्ज : थाली भरकर...)

सतसंगत में टेम गुजारंया, व्यर्थ कदे ना जासी रे,
आडी टेम में भाया तेरे, टेम काम यो आसी रे ।। टेर ।।

नो महना तू गर्भ के माही, कष्ट घणेरा पायो है,
नाम सुमरस्यूँ पार ब्रह्म को, वादो यो कर आयो है,
टेम बीतणे के पीछे, ओ मूरख के तू पासी रे ।। १ ।।

जमा खर्च के माही तेरो, सगलो टेम बितावे है,
धरम के खाते में थोड़ो सो, क्यूं ना जमा करावे है,
धन तो पड़्यो रह्वे लो भाया, धरम ही सागे जासी रे ।। २ ।।

टाबर टीकर कुटुम्ब कबीलो, जीवे जद तक तेरा है,
आणो जाणो बण्यो रह्वे लो, जन्म जन्म का फेरा है,
'हर्ष' मोक्ष की पगडण्डी बस, योंही टेम दिखासी रे ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : म्हारी चन्द्र गवराजा)

अंजनी के लाला, इकबर मिलादे मोहे राम से-२ ।। टेर ।।

ओ मतवारे राम तुम्हारी, बात कभी ना टाले-२,
अरजी सुनले तेरे दास की, भगतों के रखवाले जी,
अंजनी के लाला... ।। १ ।।

तू सेवक है सियाराम का, मैं पायक हूँ तेरा-२,
एक जनम क्या सात जनम तक, दास रहूँ मैं तेरा जी,
अंजनी के लाला... ।। २ ।।

तेरे हृदय में ओ बाबा, सियाराम का डेरा-२,
दर्शन से मिट जाये मेरा, जनम जनम का फेरा जी,
अंजनी के लाला... ।। ३ ।।

राम दुलारे तुमको दूँ मैं, राम प्रभु की दुहाई-२,
''हर्ष'' तेरे सेवक की बाबा, करले आज सुनाई जी,
अंजनी के लाला... ।। ४ ।।

(तर्ज : उड़ उड़ रे म्हारा काला रे कागला...)

आयो आयो रे देखो चैत को मेलो,
बाला जी को हेलो देखो आयो रे,
भगतां रो मन हर्षायो रे ।। टेर ।।

लाल ध्वजा हाथां में उठाल्यो,
राम नाम ज्याँ पर लिखवाल्यो,
मीठा-मीठा भजन सुणाओ रे ।।
भगतां रो मन... ।। १ ।।

भाई बंधु सगला चालो,
मंदरिये में घूमर घालो,
चरणां में धोक लगावो रे ।।
भगतां रो मन... ।। २ ।।

सवामणी को भोग लगाज्यो,
मन इच्छा बाबा ने सुणाज्यो,
बाला जी ने ''हर्ष'' मनावो रे ।।
भगतां रो मन... ।। ३ ।।

(तर्जःमैंहूँछोरीमालनकी...)

इबकीमैंतोसालासरका,मेलादेखणजाऊँगी,
सुणलेबालममेरेरे ।।टेर ।।

बालाजी की झण्डी लेकर, सारे पैदल जावे सै,
मैं भी बालम मन्दरिये पे, लाल ध्वजा फहराऊँगी,
सुणले बालम... ।। १ ।।

ढोलक चंग मजीरे बाजे, सेवक नाचे गावे सै,
तेरे सागे मैं भी बालम, ठुमके खूब लगाऊँगी,
सुणले बालम... ।। २ ।।

लाडू पेड़े खीर बताशे, सारे भोग लगावै सै,
सवामणी का बणा चूरमां, मैं भी भोग लगाऊँगी,
सुणले बालम... ।। ३ ।।

सारी रात जगावे सेवक, मीठे भजन सुणावै सै,
तेरे सागे जाके बालम, सारी रात जगाऊँगी,
सुणले बालम... ।। ४ ।।

चैत सुदी पूनम ने सारे, जाके धोक लगावे सै,
गठ जोड़े तै ''हर्ष'' बालमा, मैं भी धोक लगाऊगी,
सुणले बालम... ।। ५ ।।

(तर्ज : रूत झोलियाँ भरन की आई...)

कपि बाग उजाड़े पल में-२,
कि दानवों में आज मच गई-२, देखो भगदड़ ।। टेर ।।

तरुवर को जड़ से उखाड़े, असुरों को पटक पछाड़े,
कि दानवों में... ।। १ ।।

हनुमत को पकड़ने आया, अक्षय को मार गिराया,
कि दानवों में... ।। २ ।।

रावण का मान घटाये, मुक्के से धूल चटाये,
कि दानवों में... ।। ३ ।।

जब पूँछ में आग लगाये, लंका को ''हर्ष'' जलाये,
कि दानवों में... ।। ४ ।।

(तर्ज : बिन्दिया चमकेगी...)

घुंघरू बाजे रे, बजरंग नाचे रे,
सिया राम की धुन में ये गाये ।। टेर ।।

बजरंग बाला, हुआ मतवाला, दिवाना श्री राम का-२,
हाथों मे खड़ताल बजाये, राम नाम गुण गाये,
छम छम नाचे रे, छम छम नाचे रे-२,
सिया राम निरख के मुस्काये ।। १ ।।

ऐसी मस्ती, बली पर छाई, भुलाई सुध आपकी-२,
सीने में सिया राम विराजे, झूम-झूम कर नाचे,
सुध बिसराई जी, सुध बिसराई जी-२,
सियाराम का मनवा हर्षाये ।। २ ।।

तेरे जैसा, नहीं कोई दूजा, भगत श्री राम का-२,
राम नाम का ओढ़ दुशाला, थिरके बजरंग बाला,
प्यारा लागे रे, सोणा लागे रे-२,
''हर्ष'' राम सिया के मन भाये ।। ३ ।।

(तर्ज : परदेशियों से ना अँखिया...)

चरणों में बाला देना, मुझको ठिकाना-२,
भूल भी जाये जग, तू ना भुलाना ।। टेर ।।

मेरी खतायें, दिल से भुलादे,
शरणागत को, दरश दिखादे,
छोड़ दिया है मैंने, सारा जमाना ।। १ ।।

व्याकुल अँखिया, नीर बहाये,
बिन देखे अब, चैन न आये,
राह निहारे तेरी, तेरा दिवाना ।। २ ।।

विनती यही हर, बार करूँ मैं,
चरणों में तेरे, ध्यान धरूँ मैं,
'हर्ष' की आके बाबा, आस पुरा ना ।। ३ ।।

(तर्ज : धरती धोरां री...)

चालो सालासर थे चालो, बेगा जाके दर्शन पाल्यो,
बैठ्यो माँ अंजनी को लालो, भगतों चालो रे-३ ।। टेर ।।

सूरज स्यामी मंदिर जाँको-२, वो है देव बड़ो ही बाँको,
बाबो घर भर देसी थाँको, भगतों चालो रे-२,
जाँकी भोत घणी सकलाई, जाँको दरसण है सुखदाई,
बाँकी किरपा पावण ताँई, भगतों चालो... ।। १ ।।

सिर सोने का छत्र विराजे-२, ढ़ोलक शंख नगाड़ा बाजे,
दुनिया झूम-झूम कर नाचे, भगतो चालो रे-२,
सोने चाँदी का दरवाजा, बैठ्यो सालासर को राजा,
चरणां मांही धोक लगाबा, भगतो चालो... ।। २ ।।

आवे चैत को मेलो भारी-२, पैदल जावे दुनिया सारी,
वो है सेठ बड़ो दातारी, भगतो चालो रे-२,
जाँके जात जडुला लागे, दर्शन करता संकट भागे,
चालो गठ जोड़े के सागे, भगतो चालो... ।। ३ ।।

जाँके लाल ध्वजा लहरावे-२, जाँको दर्शन दुनिया पावे,
सेवक कइयाँ देर लगावे, भगतो चालो रे-२,
बोले ''हर्ष'' भगत क्यूँ रोवे, थारे मन की चाही होवे,
थारो रस्तो बाबो जोवे, भगतो चालो.... ।। ४ ।।

(तर्ज : बाईसार बीरा...)

चालो जी भगतो, सालासर चालो जी,
कोई मेले के माही, म्हे धूम मचास्याँ जी ।। टेर ।।

हाथां में सगला, ध्वजा उठाल्यो जी,
कोई बाबा के दर पे, म्हे जाय चढ़ास्याँ जी ।। १ ।।

थे देसी घी का, लाडु ले चालो जी,
कोई बाबा के जाके, म्हे भोग लगास्याँ जी ।। २ ।।

ढोलक और ढपली, चंग बजाल्यो जी,
कोई मेले के माही, नांचा और गास्याँ जी ।। ३ ।।

थे ''हर्ष'' भगत ने, सागे ले चालो जी,
श्री चरणा में जाके, म्हे धोक लगास्याँ जी ।। ४ ।।

(तर्ज : छुप गया कोई रे...)

छोड़ दीन्ही राम जी, वन में अकेली रे,
आंसुड़ा बहावे सीता, घणा दुख झेली रे ।। टेर ।।

दुनियां री बात्यां सुण, राम बिसराई रे,
प्राणा सूं प्यारी ने क्यूं, दिल सूं भुलाई रे,
याद आवे भाई बन्धु, संग री सहेली रे ।। १ ।।

अग्नि परीक्षा लीन्ही, दुनिया रे सामणे,
वन में अकेली छोड़ी, पाछे किन कारणे,
कैयां या सुलझे म्हारी, उलझी पहेली रे ।। २ ।।

म्हारे या मन री व्यथा, राम काँई जाणे रे,
नारी री पीड़ा ''हर्ष'' नारी ही पिछाणे रे,
राम जी या कुणसी बाजी, म्हारे सागे खेली रे ।। ३ ।।

(तर्ज : तूने खूब दिया सब भगतों को)

जरा जोर से तू जयकार लगा,
बजरंग बली घर आये हैं ।। टेर ।।

रोज रोज अरजी लगाता रहा, ये अपनी मरजी चलाता रहा,
बहुत दिनों मनुहार करी, आखिर में इसने सुन ही ली,
अब शीश झुका, जैकार लगा, बजरंग बली घर आये हैं ।। १ ।।

पहले तो बाबा टाल गया, मुश्किल में मुझको डाल गया,
पर मैं खड़ा था जिद में अड़ा, सेवक की खातिर आना पड़ा,
जरा ताली बजा, जैकार लगा, बजरंग बली घर आये हैं ।। २ ।।

बाबा से इतनी अरज करूँ, सेवक का मान बढ़ाता रहे,
बेटा समझ के 'हर्ष' मुझे, यूँ ही मेरे घर आता रहे,
जरा झूम के अब, जैकारा लगा, बजरंग बली घर आये हैं ।। ३ ।।

।। रामधुन ।।

(तर्ज : जै जै राधा रमण हरि बोल)

जै जै राम सिया प्यारे बोल-२,
जै जै राम सियाराम जै जै राम सियाराम-२ ।। टेर ।।
त्रेता युग में राम की जै जै, कलयुग में भी राम की जै जै-२,
सारे अवध में राम की जै जै, लंका में भी राम की जै जै-२,
जै जै राम सिया प्यारे... ।। १ ।।
शंकर सुमिरे राम की जै जै, हनुमत उचरे राम की जै जै-२,
सिंधु बोले राम की जै जै, सुग्रीव बोले राम की जै जै-२,
जै जै राम सिया प्यारे... ।। २ ।।
विभीषण मुख राम की जै जै, शबरी के घर राम की जै जै-२,
केवट बोले राम की जै जै, नारी अहिल्या राम की जै जै-२,
जै जै राम सिया प्यारे... ।। ३ ।।
सोते गाओ राम की जै जै, उठते गाओ राम की जै जै-२,
खाते बोलो राम की जै जै, पीते बोलो राम की जै जै-२,
जै जै राम सिया प्यारे... ।। ४ ।।
मन मेरा बोले राम की जै जै, तन मेरा बोले राम की जै जै-२,
'हर्ष' भी बोले राम की जै जै, भगत भी बोले राम की जै जै-२,
जै जै राम सिया प्यारे... ।। ४ ।।

(तर्ज : ये किसने किया श्रृंगार साँवरे...)

तर जायेगा, ले नाम राम का,
कहीं बीत ना जाये ये जीवन काम का ।। टेर ।।

राम नाम के दो शब्दों की, महिमां है बड़ी भारी,
पत्थर पे जो चरण पड़े तो, पल में बन गई नारी,
चख ले तू अमृत हरि के नाम का ।। १ ।।

राम नाम में जादू ऐसा, तिर जाते हैं पत्थर,
राम नाम से कट जाते हैं, लख चौरासी चक्कर,
सुमिरन तू कर ले हरि के नाम का ।। २ ।।

लूट मची है लूट ले बन्दे, राम नाम की मस्ती,
''हर्ष'' कहे महंगी दुनियाँ में, चीज यही है सस्ती,
चोला पहन ले हरि के नाम का ।। ३ ।।

(तर्ज : कभी राम बनके...)

तेरा राम बिलखे, तेरी बाट निरखे,
चले आओ बाला जी चले आओ ।। टेर ।।

भाई लक्ष्मण पे मुर्छा है छाई, तुझे रो रो पुकारे रघुराई,
बन्धु जान करके, सिन्धु लाँघ करके,
चले आओ बालाजी चले आओ ।। १ ।।

भोर होने की घड़ियाँ है आई, राजाराम की तुमको दुहाई,
तेरा राम सिसके, होनी हाथ किसके,
चले आओ बालाजी चले आओ ।। २ ।।

ताना मारेगा मुझको जमाना, मेरी लाज तू आकर बचाना,
नैना नीर छलके, मेरे वीर चलके,
चले आओ बालाजी चले आओ ।। ३ ।।

'हर्ष' संकट से तू ही निकाले, भाई लक्ष्मण के प्राण बचाले,
बूटी आज चुनके, ये आवाज सुनके,
चले आओ बालाजी जी चले आओ ।। ४ ।।

(तर्ज : बाबा तेरा स्वागत है)

बाबा बड़ा निराला है, राम नाम मतवाला है,
राम प्रभु को ये ध्याये, राम की महिमा ये गाये ।। टेर ।।

राम नाम का जाप करे, राम हृदय में वास करे,
राम प्रभु का प्यारा है, सीता का दुलारा है,
बाबा बड़ा... ।। १ ।।

संकट में जो नाम जपे, आके सारे कष्ट हरे,
भक्ति का भण्डार बड़ा, शक्ति का संचार बड़ा,
बाबा बड़ा... ।। २ ।।

राम का पायक है ऐसा, दूजा ना इनके जैसा,
राम जहाँ भी जाते हैं, इनको वहीं पे पाते हैं,
बाबा बड़ा... ।। ३ ।।

''हर्ष'' कहे सब ध्यान धरो, हनुमत को प्रणाम करो,
जिसने इनका नाम लिया, पलमें उसका काम किया,
बाबा बड़ा... ।। ४ ।।

(तर्ज : धमाल)

बेगा चालो रे साथीड़ो चैत को मेलो आयो रे,
सालासर सूं बालाजी को हेलो आयो रे ।। टेर ।।

लाल सुरंगि ध्वजा उठाकर सगला पैदल चालो जी,
मंदरिये के आगे भगतो घूमर घालो रे ।। १ ।।

सूरज स्यामी बण्यो देवरो महिमा जांकि भारी जी,
जल्दी जाके खुलवाल्यो किस्मत को तालो रे ।। २ ।।

चाँदी का दरवाजा सिरपे लटके छतर हजांरा जी,
बाबा के चरणाँ में जाके शीश झुकाल्यो रे ।। ३ ।।

सवामणी को बणा चूरमो जाके भोग लगास्याँ जी,
बालाजी की गठजोड़े सूं धोक लगाल्यो रे ।। ३ ।।

''हर्ष'' कह्वे दरबार निरालो साँची है सकलाई जी,
भगता री झोली भरसी सालासर वालो रे ।। ४ ।।

(तर्ज : महफिल में जल उठी शमां...)

बोलो सीता माँ, ये पूछे अंजनी का लाला,
तूने अपनी माँग में ये, सिन्दूर माँ क्यूँ डाला,
बतला दे माँ, बतलादे माँ, मुझको थोड़ा बतला दे ।। टेर ।।

हँस कर बोली सीता मैया, कैसे तुझे बताऊँ मैं,
स्वामी को खुश करने खातिर, माँग सिन्दूर लगाऊँ मैं,
राम को कितनी बार, इसने विपदा से टाला ।। १ ।।

सुनकर बातें सीता माँ की, मन ही मन वो हर्षाये,
चुटकी भर सिन्दूर से मेरे, राम प्रभु खुश हो जाये,
मन में किया विचार-२, पल में अंजनी का लाला ।। २ ।।

नजर बचाके सीता माँ की, डिबिया लेकर आये जी,
उलट पलट के सारे तन पे, वो सिन्दूर लगाये जी,
सन्मुख माता के-२, आया राम का रखवाला ।। ३ ।।

सीता मैया बोली हनुमत, ये क्या स्वांग रचाया है,
रघुवर को खुश करने मैंने, ये सिन्दूर लगाया है,
''हर्ष'' नहीं जग में-२, दूजा राम का मतवाला ।। ४ ।।

(तर्ज : चाँद चढ्यो गिगनार)

भक्त करे मनवार म्हाने, आज बुलाल्यो द्वार म्हारी,
सुणल्यो थे दातार,
भगत थारा तरसे छै जी तरसे छै ।। टेर ।।

सालासर सरदार थारा, टाबर अर्ज गुजारे जी-२,
ले लेकर थारो नाम बाबा, कदस्यूँ बाट निहारे जी,
मतना करो उंवार इब थे, थोड़ो करो विचार,
भगत थारा तरसे छै जी तरसे छै ।। १ ।।

मन में आस घणेरी लागी, इबकी दरपे जावाँ जी-२,
बिना हुकम के बाबा कैयां, थारा दरशण पावाँ जी,
सुणके आज पुकार बुलाल्यो, म्हाने भी दरबार,
भगत थारा तरसे छै जी तरसे छै ।। २ ।।

दिन दिन बीत्यां जावे बाबा, कइयाँ देर लगाई जी-२,
टाबरियाँ की आस पुराओ, बेगा करो सुणाई जी,
नैया है मझधार म्हारो, करियो बेड़ो पार,
भगत थारा तरसै छै जी तरसै छै ।। ३ ।।

हर्ष' कह्वे सुपणे में बाबो, हेलो मार बुलायो रे-२,
कैंया देर लगावे बेटा, चैत को मेलो आयो रे,
साँचो है दरबार बालाजी, सुणली आज पुकार,
भगत थारा हरखै छै जी हरखै छै ।। ४ ।।

(तर्ज : मैया का चोला लाल हो गया...)

मंगल की शुभ घड़ियाँ आई, सारे जगत में खुशियाँ छाई,
हुआ माँ अंजनी के लाला, कपि का अवतार हो गया ।। टेर ।।

चैत सुदी पूनम की भगतों, मंगल बेला आई,
आज कपि का जन्म हुआ है, बाँटो खूब बधाई,
भक्त शिरोमणी राम का प्यारा, अपने भगत का पालन हारा,
संकट हरने वाला, कपि का अवतार... ।। १ ।।

चाँदी के पलने में सोया, माँ अंजनी का लाला,
होले होले डोर हिलावे, मैया देवे झाला,
सोने के कंगन हाथों में साजे, चाँदी के घुँघरू छन छन बाजे,
राम मगन मतवाला, कपि का अवतार... ।। २ ।।

मंगल की पावन बेला में, नाचें लोग लुगाई,
घर घर थाल बजाये सारे, बाँटे आज मिठाई,
अष्ट सिद्धि नव-निधि का दाता, भगतों का है ये भाग्य विधाता,
वीर बड़ा ही आला, कपि का अवतार... ।। ३ ।।

राम प्रभु के सेवक बनके, शंकरजी अवतारे,
''हर्ष'' कहे रे हम भगतों के, हो गये वारे न्यारे,
दीनों का दाता भगतों का साथी, प्रगट हुआ है दुष्टों का घाती,
भगतों का है रखवाला, कपि का अवतार... ।। ४ ।।

(तर्ज : झिलमिल झिलमिल चुनड़ी में...)

मेरी भी सुध लेलो बाबा, वीर बलि हनुमान,
मुझको भी दे देना अपने, चरणों में स्थान ।। टेर ।।

जबसे होश सम्भाला मैंने, तुझको पाया पास,
बालक ये नादान तुम्हारे, चरणों का है दास,
मुझको भी मिल जायें थोड़ा, तेरी दया का दान ।
मुझको भी दे... ।। १ ।।

छोटे से इस दास की अरजी, यूं ही ना ठुकराना,
शरणागत को आकर बाबा, अपने गले लगाना,
बाबा मेरी अरजी पर भी, देना थोड़ा ध्यान ।
मुझको भी दे... ।। २ ।।

तेरी भगती की संजीवन, मुझको जरा पिलादे,
माया के जंजाल से मुझको, मुक्ति जरा दिलादे,
''हर्ष'' सदा ही गाऊँ बाबा, मैं तेरा गुणगान ।
मुझको भी दे... ।। ३ ।।

(तर्ज : घर में हो तस्वीर तेरी...)

राम शरण में आ जाओ, राम भजन में रम जाओ,
करता तू बन्दे क्या विचार,
राम जी करेंगे बेड़ा पार ।। टेर ।।

सुख पाओ या दुःख पाओगे छोड़ राम की मरजी पर,
नजर हरी की सदा पड़ी है निज सेवक की अरजी पर,
तुझपे करेंगे उपकार ।। १ ।।

जिस केवट ने माझी बन कर उनको पार लगाया था,
उस केवट को श्री राम ने भव से पार कराया था,
तेरा करेंगे उद्धार ।। २ ।।

जिस प्राणी ने राम प्रभु की महिमा मन से गाई है,
''हर्ष'' कहे श्री राम प्रभु की उसने किरपा पाई है,
तेरी सुनेंगे वो पुकार ।। ३ ।।

(तर्ज : वारी जावां वारी जावां...)

वारी जावाँ वारी जावाँ वारी जावाँ,
वीर बजरंगी पे वारी जावाँ,
लाल सिन्दूर तेरे किसने लगाया रे,
देख-देख राम जी का मन हर्षाया रे ।। टेर ।।
राम सिया को बाला, दिल में बसाये रे,
चीर के सीना बजरंग, जग को दिखाये रे,
वारी जावाँ-३, बाबा तेरी भक्ति पे वारी जावाँ ।। १ ।।
छम छाम पायलिया बाजे, राम को रिझाये,
पावों में घुंघरूं बान्धे, नाच के दिखाये,
वारी जावाँ-३, बाबा की पैजनिया पे वारी जावाँ ।। २ ।।
लाके संजीवन बूंटी, लखन को जिलाया था,
दुष्टों को पल में तूने मार गिराया था,
वारी जावाँ-३, बाबा तेरी शक्ति पे वारी जावाँ ।। ३ ।।
भक्त तुम्हारे जैसा, राम का ना दूजा,
''हर्ष'' तुम्हारी हरदम, करता है पूजा,
वारी जावाँ-३, बाबा तेरी श्रद्धा पे वारी जावाँ ।। ४ ।।

(तर्ज : बाबा की ज्योति जली-जली)

सोने की लंका जली-जली-२,
अब मची है लंका में भगदड़,
अरे रावण तेरी इक ना चली ।। टेर ।।

माता की खबर लेने आया, रावण को बिल्कुल ना भाया,
रामदूत की पूँछ जलाकर, समझा ये विपदा टली-टली ।। १ ।।

रावण को धूल चटा डाली, लंका को राख बना डाली,
कूद पड़े वो पूँछ बुझाने, महा-सिन्धु में बजरंग बली ।। २ ।।

रावण तेरा भ्रम दूर हुआ, टूट के चकनाचूर हुआ,
''हर्ष'' कपि से बचके रहना, गर चाहते हो अपनी भली ।। ३ ।।

(तर्ज : उमराव)

हनुमान थारो रूप घणों सुखदाई हनुमान,
हनुमान जी ओजी हनुमान ।। टेर ।।

सालासर के माहीं बसो, राम भक्त हनुमान,
भगतां री बिगड़ी बणे, साँचो थारो धाम,
हनुमान थे भगताँ की पीड़ मिटाई हनुमान ।
हनुमान जी... ।। १ ।।

देश दिशावर सूं थारे, आवे नर और नार,
परचा देवो मोकला, माया अपरम्पार,
हनुमान थे भगतां की लाज बचाई हनुमान ।
हनुमान जी... ।। २ ।।

माँ अंजनी रा लाडला, भगतां रा रखपाल,
थारी छाया सूं डरे, भूत प्रेत और काल,
हनुमान थारी दुनिया में सकलाई हनुमान ।
हनुमान जी... ।। ३ ।।

सेवक हो थे राम का, म्हें हाँ थारा दास,
''हर्ष'' सदा ही राखियो, श्री चरणा के पास,
हनुमान थाने राम प्रभु की दुहाई हनुमान ।
हनुमान जी... ।। ४ ।।

(तर्ज : उठे तो बोले राम...)

हे लाल लंगोटा थारी, थारे हाथ में घोटो भारी-२,
हे पवन पुत्र बजरंग बलि थे, देव बड़ा बलकारी ।। टेर ।।

सिन्दूरी चोलो, तन पे रमाओ जी,
हिवड़े के माहीं थे, श्री राम बसाओ जी,
हे शंकर रा अवतारी, हे दीन दुखी हितकारी-२,
हे पवन पुत्र बजरंग... ।। १ ।।

सालासर थारो, धाम पुराणो जी,
भगतां ने लागे है, यो घणो सुहानो जी,
हे राम का आज्ञाकारी, हे भगतां का उपकारी-२,
हे पवनपुत्र बजरंग... ।। २ ।।

भगतां रा ''हर्ष'' कष्ट मिटाओ जी,
शरणां में आयां की, थे लाज बचाओ जी,
हे अजर अमर अवतारी, हे बाबा लखदातारी-२,
हे पवनपुत्र बजरंग... ।। ३ ।।

(तर्ज : ओ पालन हारे...)

हे संकट मोचन, करते हैं वंदन-२,
तेरे बिना संकट कौन हरे,
सालासर वाले, तुम हो रखवाले-२,
तेरे बिना संकट कौन हरे ।। टेर ।।

सिवा तेरे ना दूजा हमारा,
तू ही आकर के देता सहारा,
जो विपदा आये, पल में मिट जाये-२,
तेरे बिना संकट... ।। १ ।।

तूने रघुवर के दुःखड़ों को टाला,
हर मुसीबत से उनको निकाला,
रघुवर के प्यारे, आँखों के तारे-२,
तेरे बिना संकट... ।। २ ।।

अपने भगतों के दुखड़े मिटाते,
''हर्ष'' आफत से हमको बचाते,
किरपा यूं रखना, थामें तू रखना-२,
तेरे बिना संकट... ।। ३ ।।

(तर्ज : तेरा जाना, दिल के अरमानों का लुट जाना...)

अरे कान्हा, होले से यूं तेरा मुस्काना,
बना देता, हम भगतों को तेरा दिवाना ।। टेर ।।

मोर मुकुट माथे धरा, नैनों में जादू भरा,
तेरे गिरधर साँवरा, आऽऽऽ,
भोला मुख भोली अदा, जी करता देखूं सदा,
पल भर ना होवूं जुदा, ओऽऽऽ ।
अरे कान्हा... ।। १ ।।

टेढ़ी मेढ़ी चाल है, मोटे-मोटे गाल है,
सिर घुंघराले बाल है, आऽऽऽ,
गल फूलों का हार है, इत्तर की फुहार है,
क्या प्यारा सिणगार है, ओऽऽऽ ।
अरे कान्हा... ।। २ ।।

होठों पे मुरली सजे, मीठी-मीठी धुन बजे,
सेवक सारे है ठगे, आऽऽऽ,
तेरी चितनवन प्यारी है, तन मन तुझपे वारी है,
''हर्ष'' तेरे बलिहारी है, ओऽऽऽ ।
अरे कान्हा... ।। ३ ।।

(तर्ज - शराफत छोड़ दी मैंने ..)

अरे रंगरेज रंग दे तू, कन्हैया के, नाम का इक चोला,
पहन जिसे आज मैं नाचूं - २ ।। टेर ।।

जिसे राधा ने पहना था, जिसे करमा ने पहना था,
पहना जिसको नरसी ने-२,
मुझे भी आज रंग दे रे, तू वैसा श्याम का इक चोला
पहन जिसे आज मैं नाचूं - २ ।। १ ।।

बजरिया बीच नाचे वो, जिन्होंने पहन कर देखा,
बन गये सारे दिवाने वो-२,
निहारे श्याम भी जिसको, बना दे श्याम का इक चोला,
पहन जिसे आज मैं नाचूं - २ ।। २ ।।

बड़े ही नाज से मैं भी, पहन कर श्याम का चोला,
घूमूं सारे जमाने में-२,
तमन्ना ''हर्ष'' की भी है, रंगीले श्याम का इक चोला,
पहन कर आज मैं नाचूं - २ ।। ३ ।।

''भोग''

(तर्ज : पिछम धरा सूं म्हारा बापजी...)

आओ जी साँवरिया, थारी बाट उड़ीकाँ-२,
कोई आकर भोग लगाओ जी ओ,
जीमो जीमो खाटू वाला श्याम बिहारी ।। टेर ।।

करमा थी बड़ भागण, जैको खीचड़ खायो-२,
कोई साग विदुर घर खायो जी ओ,
जीमो जीमो खाटूवाला श्याम बिहारी ।। १ ।।

नानी-नरसी-मीरा को थे, मान बढ़ाया-२,
कोई म्हारो भी मान बढ़ाओ जी ओ,
जीमो जीमो खाटूवाला श्याम बिहारी ।। २ ।।

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, चारूँ दिशा सूँ-२,
कोई लीले चढ़कर आओ जी ओ,
जीमो जीमो खाटूवाला श्याम बिहारी ।। ३ ।।

टाबरिया ल्याया है 'हर्ष', खीर चूरमो-२,
कोई रूच-रूच भोग लगाओ जी ओ,
जीमो जीमो खाटूवाला श्याम बिहारी ।। ४ ।।

(तर्ज : आज मेरे यार की शादी है...)

आज श्री श्याम पधारे हैं-२,
हम दीनों के भाग्य जगे, अब वारे न्यारे हैं ।। टेर ।।

कोई गंगा जल लाओ, श्याम के चरण धुलाओ-२,
सजालो आज इनको, रिझालो आज इनको-२,
अंतर केशर श्याम धणी को लगते प्यारे हैं,
आज श्री श्याम... ।। १ ।।

रंगीले श्याम जैसा, नहीं कोई ओर दूजा-२,
बैठ कर ऊँचे आसन, करे भगतों पे शासन-२,
मुखड़ा ऐसे दमक रहा ज्यूँ चाँद सितारे हैं,
आज श्री श्याम... ।। २ ।।

लगा दरबार बैठा, श्याम सरकार बैठा-२,
अरज जिसने भी लगाई, करी है उसकी सुनाई-२,
पल में न्याय मिला मन से जो नाम पुकारे हैं,
आज श्री श्याम... ।। ३ ।।

बड़ा है नाम इनका, बड़ा है काम इनका-२,
भगत के हैं रखवारे, जगत के पालन हारे-२,
''हर्ष'' कहे भगतों की नैया श्याम सहारे हैं,
आज श्री श्याम... ।। ४ ।।

(तर्ज : श्याम देने वाले हैं श्याम लेने वाले है...)

आज यहाँ आये हैं खाटू से श्याम,
हमको तो करना है इतना सा काम,
अब इनको जाने ना देंगे,
अपने नैनों में बंद कर लेंगे ।। टेर ।।
छलिये को छलने की आदत पड़ी है,
हाथ नहीं लगता ये मुश्किल बड़ी है,
मौका सुहाना है, अच्छा बहाना है,
अब इनको जाने ना... ।। १ ।।
पलकों की डोली में इनको बिठा कर,
नैनों में प्यारी सी सूरत बसाकर,
रिश्ता बढ़ाना है, अपना बनाना है,
अब इनको जाने ना... ।। २ ।।
आने और जाने का झंझट मिटादो,
नैनों को इनका बसेरा बनालो,
''हर्ष'' ने ये ठाना है, श्याम को रिझाना है,
अब इनको जाने ना... ।। ३ ।।

(तर्ज : होलिया में उड़े रे गुलाल)

आयो बुलावो मेरो आज, फागणिये के मेले में,
बाबो बुलायो मन्ने आज, फागणिये के मेले में ।। टेर ।।

रात नीन्द में सोय रह्‌यो थो, सुपणे माही खोय रह्‌यो थो,
हेलो लगायो बाबो श्याम, फागणिये के मेले में... ।। १ ।।

टोल्याँ की टोल्याँ जद जावे, मेरो भी हिवड़ो ललचावे,
मैं भी तो जाके खेलूं फाग, फागणिये के मेले में... ।। २ ।।

ऐसो रंग चढ़े फागण मैं, ढपली चंग बजे फागण में,
सेवक नाचे नो नो ताल, फागणिये के मेले में... ।। ३ ।।

'हर्ष' साँवरो मेरी सुणली, जाणे की इब त्यारी करली,
बेगो सो जाऊँ मैं तो आज, फागणिये के मेले में...।। ४ ।।

(तर्ज : बाबा तेरे कितने है नाम...)

उस मालिक का एक है नाम,
चाहे कहो मुरली वाला, चाहे कहो राम ।। टेर ।।

त्रेता में ये, द्वापर में ये, 'कलयुग में अवतारे है ये'-२,
राम बने ये, श्याम बने ये, 'खाटू के गलियारे में ये'-२,
जाने है दुनिया सारी कहानी, इनसे बड़ा ना कोई दानी,
दुनिया ध्यावे आठो याम ।। चाहे कहो... ।। १ ।।

हारे का रखवारा है ये, 'दीन दुखी हितकारा है ये'-२,
जिसका कोई साथी ना हो, 'उस प्राणी का सहारा है ये'-२,
जो भी मन से नाम पुकारे, अटकी नैया पार उतारे,
खाटू जिनका पावन धाम ।। चाहे कहो... ।। २ ।।

नाम बड़ा है काम बड़ा है, 'लीले वाला श्याम बड़ा है'-२,
राम कहो या श्याम कहो जी, 'जपने में आराम बड़ा है'-२,
शीश का दानी देव निराला, 'हर्ष' हमारा है रखवाला,
घर घर में गूँजे ये नाम ।। चाहे कहो... ।। ३ ।।

(तर्ज : ओ बाबुल प्यारे...)

ओ कान्हा आ रेऽऽऽ, तू आजा मोहन गिरधारी,
कि तरसे गूजरियां सारी, पुकारे राधा बेचारी, ओऽऽऽ ।। टेर ।।

सूना पड़ा है मधुबन सारा, तेरे बिना ओ कन्हाई-२,
आजा सूना जमना तट, , तुझ बिन सूना है पनघट,
सूना-सूना गुजरियों का मन, ओऽऽऽ... ।। १ ।।

जमुना किनारे गूजरियों के, कपड़ो को कोन चुराये-२,
सूनी ग्वालों की टोली, सूने तेरे हमझोली,
सूने-सूने है सबके नयन, ओऽऽऽ... ।। २ ।।

भूल गया क्या कुँज गलिन में, तेरा वो रास रचाना-२,
सुनके बंशी मतवारी, नाची गुजरियाँ सारी,
मन का मन से हुआ था मिलन, ओऽऽऽ... ।। ३ ।।

अपना बनाके क्यों बिसराया, ओ निर्मोही बता जा-२,
आजा माखन खाले रे, हमको लाख सताले रे,
''हर्ष'' सब कुछ करेंगे सहन, ओऽऽऽ... ।। ४ ।।

(तर्ज : कागलिया, गहरो गहरो बोले रे...)

ओ साथीड़ो, खाटू माही जाकर थे-२,
म्हारे बाबाजी ने दीज्यो यो संदेश,
ओ कान्हुड़ा, भगत बुलावे रे-२ ।। टेर ।।

क्यूं ना बुलायो, ओ हरजाई-२,
कइयाँ भुलायो, म्हाने कन्हाई,
कोई आके-२, दरश दिखा जा रे,
म्हारे बाबाजी ने... ।। १ ।।

आवेली कद सी, म्हारी भी बारी-२,
मनसूं भुलाज्यो, भुलां थे म्हारी,
कोई म्हारी-२, आस पुरा जा रे,
म्हारे बाबाजी ने... ।। २ ।।

''हर्ष'' कह्वे थे, रुठया क्यूं म्हासूं-२,
जन्म-जन्म री, प्रीत है थासूं,
कोई म्हासूं-२, प्रीत निभा जा रे,
म्हारे बाबाजी ने... ।। ३ ।।

(तर्ज : मिलो ना तुम तो हम...)

इक दिन कान्हा शोर मचाये,
पेट पकड़ चिल्लाये, अरे क्या हो गया है-२,
भामा रुक्मण समझ न पाये, कैसे रोग मिटाये,
अरे क्या हो गया है-२ ।। टेर ।।

पूछे है दोनों रानी, पीड़ा मिटेगी कैसे साँवरे,
नैनों में भरके पानी, बोले बचूं ना मैं तो आज रे,
चरणों को धोकर जल लाओ, लाकर मुझे पिलाओ,
अरे क्या हो गया है ।। १ ।।

ऐसा ना होगा हमसे, कहने लगी वो दोनों रानी ये,
पैरों को धोकर अपने, कैसे पिलादें भला पानी ये,
जब तक सूरज चाँद फलक पे, होगा वास नरक में,
अरे क्या हो गया है ।। २ ।।

(-२)

नारद से बोले कान्हा, अब तो हुआ है बुरा हाल रे,
राधा से जाके कह दो, अपने कन्हैया को सम्भाल रे,
आज अगर वो जल ना पाऊँ, मुश्किल है बच पाऊँ,
अरे क्या हो गया है ।। ३ ।।

सोचे वो प्रेम दिवानी, प्रेम का यही दस्तूर है,
प्राण बचे मोहन के, नर्क में जाना मंजूर है,
झट से अपने चरण धुलाये, लोटा दिया थमाय,
अरे क्या हो गया है ।। ४ ।।

धन्य ओ राधे रानी, रीत निभाई तूने प्रीत की,
प्रीत में लुटकर मानो, खुशियाँ मिली है तुझे जीत की,
'हर्ष' कहे कान्हा मुस्काये, रानी खड़ी लजाये,
अरे क्या हो गया है ।। ४ ।।

(तर्ज : जिस गली में तेरा घर न हो बालमा...)

इस जुबाँ से तेरा नाम निकले सदा, मुझपे इतनी दया श्याम करना जरा,
मैं हमेशा तेरे गीत गाता रहूँ, इस भगत पे रहम नाथ करना जरा ।।

सोते उठते तेरा नाम लेता रहूँ,
तेरे भजनों की लड़ियाँ पिरोता रहूँ,
श्याम सुन्दर के सपने संजोता रहूँ,
मेरे हृदय में तेरा मंदिर बना-२,
इसमें आसन कन्हैया बिछाना जरा ।। १ ।।

झूठी रश्में रिवाजें सभी तोड़ के,
ये चदरिया तेरे नाम की ओढ़ के,
मैं चला आया हूँ ये जहाँ छोड़ के,
जो भटकने लगूँ श्याम गर मैं कभी-२,
थाम ऊंगली तू रस्ता दिखाना जरा ।। २ ।।

जिन्दगी में मुझे सिर्फ धोखे मिले,
मुस्कुराते थे जो वो भी रोते मिले,
श्याम मुझको अरे तुम अनोखे मिले,
''हर्ष'' चरणों में तेरे झुका सिर मेरा -२,
हाथ किरपा का कान्हा तू धरना जरा ।। ३ ।।

(तर्ज : एहसान मेरे दिल पे...)

एहसान तेरा भक्त पे काफी है साँवरे,
हर भूल की देता हमें माफी तू साँवरे ।। टेर ।।

इतना दिया है तूने कर्जदार है तेरे,
लेकिन चुका न पायें गुनाहगार हैं तेरे,
लेने में फिर भी शर्म ना आती है साँवरे ।। १ ।।

अपना बनाया तूने मेहरबानी ये तेरी,
लायक हमें भी जाना कदरदानी है तेरी,
अब तो तुम्हारी याद ना जाती है साँवरे ।। २ ।।

अहसाँ उतार पायें ना बिक जायें हम यदि,
जनमों की सेवा ‘‘हर्ष’’ तू देगा है ये यकीं,
दिल में हमारे आस ये बाकी है साँवरे ।। ३ ।।

(तर्ज : जग जननी मैया मंशा दे भारी...)

दोहा : टाबर आयो द्वार पे, सुणले लखदातार ।
या तो पाछो मोड़ दे, या कर दे बेड़ो पार ।।

कद करस्यो म्हाँ पर, किरपा थे भारी,
हे तीन वाण धारी ।। टेर ।।

लखदातारी आप कुहावो, ‘‘शीश का दानी श्याम’’-२,
सेवक थाँसू अरज लगाई, ‘‘सुण लिजो घणश्याम’’-२,
आस पुरा म्हारी, हे तीन वाण... ।। १ ।।

हाथ पसारे आज खड्यो है, ‘‘दर पे थारो दास’’-२,
नैणा माहीं नीर भरयो है, “कुछ ना मेरे पास”-२,
झोली भर म्हारी, हे तीन वाण... ।। २ ।।

थारी भगती मैं पाँऊ जी, ‘‘ऐसो द्यो वरदान’’-२,
जनम-जनम तक ‘‘हर्ष’’ करेलो, ‘‘थारो ही गुणगान’’-२,
पत राखो म्हारी, हे तीन वाण... ।। ३ ।।

(तर्ज : यारी हो गई यार से...)

कदसी म्हारे मन की सुणसी श्याम धणी-२,
मेटसी, साँवरा-२, विपदा या घणी ।। टेर ।।

बाबा थारे द्वार पर, दीन्ही अर्ज लगाय,
बेड़ो मेरो पार कर, मतना यूँ तरसाय,
आणे में, क्यूँ बता-२, कईयाँ देर करी ।। १ ।।

मन में पीड़ा है घणी, देखेलो कुण आज,
तेरे बिन म्हारा धणी, राखेलो कुण लाज,
नैणां में, लाग री-२, बिरखा की झड़ी ।। २ ।।

जग को मोटो सेठ तू, मोटा काम तेरा,
'हर्ष' बता क्यूँ ना करे, छोटा काम मेरा,
आवेली, कद बता-२, खुशियाँ की घड़ी ।। ३ ।।

(तर्ज : दुनिया में देव हजारों है...)

कलयुग का देव निराला है, मेरे श्याम धणी सा ओर नहीं,
बाबा की रहमत का जग में, कोई छोर नहीं कोई छोर नहीं ।।

ये खोल खजाना बैठा है, और दोनों हाथ लुटाता है-२,
माया का कहीं कोई ठोर नहीं, दानी के जैसा और नहीं ।। १ ।।

अपने भगतों के कष्टों को, बिन बोले श्याम मिटाता है-२,
दीनों का मसीहा और नहीं, दाता की दया का छोर नहीं ।। २ ।।

इनके आगे ना गर्व करो, ये ''हर्ष'' तुम्हें बतलाता है-२,
इनकी लाठी में शोर नहीं, और तुम जैसा कमजोर नहीं ।। ३ ।।

(तर्ज : गणपत बलकारी जी...)

कलयुग अवतारी जी अरज पर ध्यान धरो,
थाँसू अरज गुजारी जी अरज पर ध्यान धरो ।। टेर ।।

थारे दरस की बाबा, आस लगाई-२,
आस पुराओ जी, अरज पर...।। १ ।।

भगतां ने बाबा थारी, याद सतावे-२,
बेगा आओ जी, अरज पर...।। २ ।।

कदस्यूं भगत थारो, आँसुड़ा बहावे-२,
धीर बंधाओ जी, अरज पर...।। ३ ।।

''हर्ष'' खड्यो है बेगा, करल्यो सुणाई-२,
दर्श दिखाओ जी, अरज पर...।। ४ ।।

(तर्ज : झिलमिल झिलमिल चुन्दड़ी में...)

किर्तन माही श्याम धणी थाने आणो पड़सी,
टाबरिया को बाबा मान बढ़ाणो पड़सी ।। टेर ।।

सोणो सो सिणगार सजायो, बाबा थारा दास,
आकर के दरबार लगाओ, पूरो मन री आस,
भगतां सागे थाने कोल निभाणो पड़सी ।। १ ।।

गणपत हनुमत शंकर सागे, थाने दियो बिठाय,
अन्तर सूं आँगण महकायो, केशर दी छिड़काय,
लीले चढ़कर बाबा थाने आणो पड़सी ।। २ ।।

खीर चूरमों श्री फल मेवा, छप्पन भोग रा थाल,
टाबरिया अरदास करे थे, आके करो निहाल,
टाबरिया के घर में भोग लगाणो पड़सी ।। ३ ।।

पावन ज्योत जगाई थारी, आओ लखदातार,
लीले चढ़के आप पधारो, 'हर्ष' करे मनवार,
भगतां सागे बाबा प्रेम निभाणो पड़सी ।। ४ ।।

(तर्ज : मिलती है जिन्दगी में...)

कैसे बताऊँ श्याम ने, क्या क्या नहीं किया,
अपने गले लगाके मुझे, हँसना सिखा दिया ।। टेर ।।

खाता रहा था ठोकरे, दर दर की मैं सदा-२,
मंजिल का मेरे श्याम ने, रस्ता दिखा दिया ।। १ ।।

गिरता रहा था मैं सदा, उठने की चाह में-२,
बाँहें पकड़ के श्याम ने, चलना सिखा दिया ।। २ ।।

तड़पा था जिसके वास्ते, रातों को मैं सदा-२,
सपना मुझे वो श्याम ने, दिन में दिखा दिया ।। ३ ।।

कितने ही रंग भर दिये, जीवन में तूने श्याम-२,
फूलों से तूने ''हर्ष'' का , मधुबन सजा दिया ।। ४ ।।

(तर्ज : धारा तो बह रही...)

कोई पूछ ले जो मुझसे, कैसा है साँवरा,
वो देख ले सँवर के, बैठा है साँवरा ।। टेर ।।

बाँकी निराली चितवन, भरमा रही है तनमन,
भोले से मुख पे लटके, ये गेसुओं की लटकन,
वो देख ले निखर के, बैठा है साँवरा ।। १ ।।

श्रृंगार है निराला, मदहोश करने वाला,
आँखे यूँ लागे जैसे, मधु से भरा हो प्याला,
जादू करे नजर से, बैठा है साँवरा ।। २ ।।

फूलों में बस रहा है, कलियों में हँस रहा है,
भगतों की प्रेम डोरी, होले से कस रहा है,
देखो जरा इतर के, बैठा है साँवरा ।। ३ ।।

होठों पे मुरली सोहे, दिल 'हर्ष' का ये मोहे,
सुध बुध भुलाके सारे, बैठे हैं खोये खोये,
जजबों से बेखबर हो, बैठा है साँवरा ।। ४ ।।

(तर्ज : मत्थे ते चमकण...)

खाटू के श्याम सरकार बैठे सजधज के,
लेवो जी नजर उतार बैठे सजधज के ।। टेर ।।

मोर मुकुट सोहे कानों में कुण्डल-२,
गल फूलों के हार, बैठे सजधज के ।। १ ।।

केशरिया बागा सोहे पचरंगी पेचा-२,
खूब सजा है सिणगार, बैठे सजधज के ।। २ ।।

चन्दन तिलक देखो माथे पे सोहे-२,
बरसे इत्तर फुहार, बैठे सजधज के ।। ३ ।।

''हर्ष'' विराजे बाबा चान्दी के आसन-२,
भक्त करे जै जै कार, बैठे सजधज के ।। ४ ।।

(तर्ज : झिल मिल सितारों का...)

खाटू वाले बाबा तेरी महिमा है भारी,
दर्शन को आया तेरे दर का भिखारी,
भीख दया की देदे बाबा सुनले हमारी ।। टेर ।।

हारे का रखवारा है तू सारा जग बतलाये,
तेरे होते तेरा बेटा कष्ट भला क्युँ पाये,
दे दे सहारा आया शरण तुम्हारी ।। १ ।।

भगतों की सुनते हो बाबा मुझको क्यूं बिसराया है,
बड़ी उमीदें लेके बालक तेरे दर पे आया है,
तु ना सुने तो कोन सुनेगा हमारी ।। २ ।।

तेरे दर पे झोली मेरी क्या खाली रह जायेगी,
दुनिया मारे ताने बाबा बदनामी हो जायेगी,
झोली फैला दी मैने मरजी तुम्हारी ।। ३ ।।

मनचाही जो कर ना सको तो अनचाही भी ना करना,
''हर्ष'' तेरे बेटे से बाबा रुसवाई भी ना करना,
दीनों का नाथ मेरा साँवरा बिहारी ।। ४ ।।

(तर्ज : राधे तेरे चरणों की गर धूल...)

खाता हूँ मै तेरा दिया, क्या तुझको खिलाऊँ मैं,
मेरा तो कुछ भी नहीं, क्या भोग लगाऊँ मैं ।। टेर ।।

तुझसे ही तो रोशन है, दुनिया के अंधेरे श्याम,
अब दर पे तेरे भला, क्या दीप जलाऊँ मैं ।। १ ।।

हे निराकार भगवन, तेरा आकार नहीं,
तुझे केशर चन्दन का, कहाँ लेप लगाऊँ मैं ।। २ ।।

कण कण में वास तेरा, घट घट का तू स्वामी,
ये फूल भी तेरे हैं, क्या भेंट चढ़ाऊँ मैं ।। ३ ।।

ये ''हर्ष'' चला गढ़ने, तेरी मूरत ओ कान्हा,
दुनिया को रचा जिसने, उसे कैसे बनाऊँ मैं ।। ४ ।।

(तर्ज : चंदन सा वदन, चंचल चितवन)

खिलते हैं चमन महके मधुवन, ऐ श्याम अगर तू मुस्काये,
तेरी झील सी गहरी आँखों में, इक प्यार का सागर लहराये ।।

किरणों का तेज है मस्तक पे, मुखड़े पे कमल की कोमलता,
लगता यूँ तेरी चितवन में, हिरनों की भरी है चंचलता,
घुंघराली लटकन सावन की, ऐ श्याम घटा सी बिखराये ।। १ ।।

सरगम के सुर झनकार उठे, होठों से लगे जब बांसुरिया,
नवरंग के नो रंगो से सजी, ये मूरत तेरी साँवरिया,
सूरज की लाली भी मोहन, इस रूप के आगे शर्माये ।। २ ।।

तस्वीर बनायें जिससे हम, ऐसा ना कोई भी रंग मिला,
तेरे रूप को कैसे व्यक्त करें, ऐसा ना कोई भी छन्द मिला,
तुझे देख के 'हर्ष' हुआ घायल, कैसे अब दिल को समझाये ।। ३ ।।

(तर्ज : सिर पर टोपी लाल हाथ में...)

घुंघरवाले बाल तुम्हारे गोरे गोरे गाल, साँवरे क्या कहना,
गल वैजन्ती माल चले तू तिरछी-तिरछी चाल, साँवरे क्या कहना ।।

अधरों पे मुरली सोहे, भगतों के मन को मोहे, रूप तेरा साँवरे,
तीखी अदाये तेरी, तिरछी निगाहें तेरी, हम हुए बावरे,
सोणा सा सिंगार श्याम तोहे निरखूँ बारम्बार, साँवरे क्या कहना ।। १ ।।

जादू चलाया तूने, अपना बनाया तूने, हम तेरे हो गये,
साँवली सलोनी प्यारी, चंचल छवि है न्यारी, चितवन मे खो गये,
तन मन दू मैं वार कन्हैया लेवूं नजर उतार, साँवरे क्या कहना ।। २ ।।

फूलों का हार तेरा, ''हर्ष'' ये सिंगार तेरा, मनवा लुभा गया,
साँवला दिदार तेरा, नशीला खुमार तेरा, भगतों पे छा गया,
भूले होश हवास ओ कान्हा आज तुम्हारे दास, साँवरे क्या कहना ।। ३ ।।

(तर्ज : सूरज कब दूर गगन से...)

चमके यूं तेरा मुखड़ा, जैसे हो चान्द का टुकड़ा,
सज धज के ऐसे बैठा, लागे ज्यूं सेठ हो तगड़ा,
भगतों के मन तू भाया है, नैनों में समाया है ।। टेर ।।

नैन तेरे कजरारे, होठों पर है लाली,
श्याम सलोने तेरी, बांकी अदा निराली,
हमको तो लागे प्यारा, ये नोलख हार तुम्हारा,
भगतों के मन... ।। १ ।।

मोर छड़ी हाथों में, केशरिया है बागा,
सिंहासन पर बैठा, प्यारा लागे बाबा,
फूलों का हार सुहाना, ये होले से मुस्काना,
भगतों के मन... ।। २ ।।

अंतर केशर महके, सेवक सारे नाचे,
'हर्ष' कहे भगतों को, तू बनड़ा सा लागे,
श्रृंगार सजा है प्यारा, सच्चा दरबार तुम्हारा,
भगतों के मन... ।। ३ ।।

(तर्ज : धमाल)

चालो साथीड़ो थे कान्हुड़े को पेचो रंगस्यां जी,
गालां ऊपर श्याम धणी के केशर मलस्यां जी ।। टेर ।।

भगतां सागे साँवरियो, फागण में होली खेले जी,
भर पिचकारी कान्हुड़े को, बागो रंगस्यां जी,
चालो साथिड़ो... ।। १ ।।

फागण की मस्ती में सगला, सेवक नाचे गावे जी,
मंदरिये के आगे चालो, गिन्दड़ करस्यां जी,
चालो साथिड़ो... ।। २ ।।

ठण्डी ठण्डी पुरवाई, हिवड़े में आग लगावे जी,
चरणां के अमृत सू मनड़ो, ठण्डो करस्यां जी,
चालो साथीड़ो... ।। ३ ।।

भगतां पर यो श्याम रंगीलो, निज को रंग चढ़ावे जी,
प्रेम रंग की 'हर्ष' चाल के, बिरखा करस्यां जी,
चालो साथीड़ो... ।। ४ ।।

(तर्ज : बाई सां रा बीरा...)

चालो जी भगतों, खाटू तो चालाँ जी,
फागणियो आय गयो, थाने श्याम बुलावे जी ।। टेर ।।

केशरिया रंग सू, भरल्यो पिचकारी जी,
होली खेलण तांई, थाने श्याम... ।। १ ।।

कोई रंग बिरंगी, ध्वाजा उठाल्यो जी,
मेलो देखण तांई, थाने श्याम... ।। २ ।।

थे ढोलक ढपली, चंग बजाओ जी,
कोई नाचण के तांई, थाने श्याम... ।। ३ ।।

घर का ने ''हर्ष'', सागे ले चालो जी,
झोली भरणे ताई, थाने श्याम... ।। ४ ।।

(राग रचयिता- अरुण दधीच)

चैन मेरा लूट लिया, बिरज के साँवरिया ।। टेर ।।

चुपके से आके तूने कंकरिया मारी,
भीगी रे चोली मेरी भीगी रे साड़ी-२,
चटक गई गागरिया, बिरज के... ।। १ ।।

पलकों में मेरे कान्हा निन्दिया ना आये,
पल-पल कन्हैया तेरी याद सताये-२,
दिवानी हुई गूजरिया, बिरज के... ।। २ ।।

नेहा लगाया तोसे दिल तुझको हारी,
प्रेम के रंग में रंगी बृज नारी-२,
घूमूँ बन बावरिया, बिरज के... ।। ३ ।।

''हर्ष'' सता ना मेरी बाली उमरिया,
जिया चुराये तेरी तिरछी नजरिया-२,
सरक गई चूनरिया, बिरज के... ।। ४ ।।

(तर्ज : ये किसने किया श्रृंगार साँवरे...)

जब से मिला दीदार साँवरे-२,
मेरे जीवन में आई बहार साँवरे ।। टेर ।।

जित-जित फेरूँ आज निगाहें, उत-उत तुझको पाऊँ,
जब जब आँखे बन्द करूँ तो, तेरा दर्शन चाहूँ,
तू बैठा है पलकों के द्वार साँवरे... ।। १ ।।

नैन मिले तो चैन मिला है, फूला नहीं समाऊँ मैं,
जी करता है अब तो तेरे, चरणों में बिछ जाऊँ मैं,
ये जीवन मैं तुझपे दूँ वार साँवरे... ।। २ ।।

सारे जग की दौलत मैंने, एक झलक में पाई,
भूल गया मैं खुद को कान्हा, तू जो पड़ा दिखाई,
पाया सेवक ने ''हर्ष'' अपार साँवरे... ।। ३ ।।

(तर्ज : दोनों जवानी की मस्ती में चूर...)

जब से कन्हैया मैं खाटू गया, तेरा हुआ मैं तो तेरा हुआ,
ये तूने क्या कर डाला, मैं फेरुं तेरी माला,
मैं सर्वेंट हो गया तेरा बाबा,
मैं सर्वेंट हो गया, परमानेन्ट हो गया,
सौ परसेन्ट हो गया, तेरा बाबा ।। टेर ।।

तुमने ओ बाबा, क्या जादू चलाया , जो अपना बनाया,
प्यारा सा तूने श्याम रिश्ता निभाया-२,
मैं बिल्कुल ना शर्माऊं, दुनिया को ये बतलाऊँ,
मैं सर्वेंट हो गया... ।। १ ।।

मैं इतना ही चाहूँ, ये करना पड़ेगा, हाँ करना पड़ेगा,
चरणों में मुझको रखना पड़ेगा-२,
मैंने तो इतना जाना, मैं तेरा हूँ दिवाना,
मैं सर्वेंट हो गया... ।। २ ।।

तू नजरों से तेरे, ना ''हर्ष'' गिराना, कभी ना भुलाना,
जनमो जनम तक साथ निभाना-२,
मैं तेरी किरपा पाऊँ, मैं गीत तुम्हारे गाऊँ,
मैं सर्वेंट हो गया... ।। ३ ।।

(तर्ज : माँगने की आदत जाती नहीं...)

जब जब चाहा, मैंने जितना, तब तब पाया, तुमसे उतना,
प्रेमियों का दिल तु दुखाता नहीं, तेरे जैसा और कोई दाता नहीं ।।

तुमसे चलती मेरी नैया, तेरा दिया मैं खाता हूँ,
औरों की क्या बतलाऊँ मैं, खुद की बात बाताता हूँ,
प्रेमियों को भूखा तु, सुलाता नहीं,
तेरे जैसा और कोई... ।। १ ।।

दिल मे मेरे टीस उठे तो, मनवा तेरा रोता है,
मुझको जो काँटा लग जाये, दर्द तुम्हारे होता है,
प्रेमियों को श्याम तू, रूलाता नहीं,
तेरे जैसा और कोई... ।। २ ।।

जब तू मेरे साथ है बाबा, दुनिया से फिर डरना क्या,
''हर्ष'' कहे सब तू करता है, और मुझे अब करना क्या,
माँगने कहीं पे भी मैं जाता नहीं,
तेरे जैसा और कोई... ।। ३ ।।

(तर्ज : दर्पण को देखा...)

जपता रहूँ श्री श्याम, बस ये ही है अरमान,
तेरे श्री चरणों में बीते, इस जीवन की ये शाम ।। टेर ।।

भटक रही है बिन माझी के, मेरी ये जीवन नैया,
थाम जरा ओ खाटू वाले, आके सेवक की बैंया,
अपने खाते में लिखलो-२, बाबा मेरा भी नाम ।। १ ।।

माया के जंजाल से बाबा, इस सेवक को मुक्ति दो,
दास बनाके अपना मुझको, इन चरणों की भक्ति दो,
झूठी है जग की माया-२, बस साँचा तेरा नाम ।। २ ।।

तेरे भरोसे ओ साँवलिये, मैंने ये जग छोड़ा है,
सच्चे सुख की आशा में हर, झूठा रिश्ता तोड़ा है,
अब ''हर्ष'' की इन साँसों में-२, अंकित है तेरा नाम ।। ३ ।।

(तर्ज : इस प्यार से मेरी तरफ ना देखो...)

जरा भाव से मेरे श्याम को रिझा लेऽऽऽ, श्याम आ जायेगा-२,
तू भावना की ज्योत को जगा लेऽऽऽ, श्याम आ जायेगा-२ ।।टेर ।।

मन की आँखों से, जिसने भी देखा,
इसने बदल दी, ''भाग्य की रेखा''-२,
जरा आस्था के पुष्प तू चढ़ा लेऽऽऽ ।। १ ।।

भावों से रीझता है, साँवरा कन्हाई,
भावना से देगा ये, ''हँसता दिखाई''-२,
कोई भाव के दो आँसू, तू बहा लेऽऽऽ ।। २ ।।

भावना का भूखा है, श्याम ये हमारा,
इसके सिवा ना, ''कुछ भी गँवारा''-२,
इसे भावना का भोग तू लगा लेऽऽऽ ।। ३ ।।

माता पिता 'हर्ष', बन्धु हमारा,
सारे जगत का, ''पालन हारा''-२,
बस प्रेम से इक बार तू बुला लेऽऽऽ ।। ४ ।।

(तर्ज : घर आया मेरा परदेशी...)

जादू करे तेरी बांसुरिया,
वश में हुई तेरे गुजरिया ।। टेर ।।

पनघट पे जब तान सुनी,
सरक गई सिर से चुनरी,
छलक उठी रे गागरिया ।। १ ।।

वे़द पढ़त ब्रह्मा भूले,
यमुना उलटी चाल चले,
गजब हुआ रे साँवरिया ।। २ ।।

नारद की वीणा छूटी,
गोरा माँ शिव से रूठी,
शिव नाचे बन गूजरिया ।। ३ ।।

इस मुरली ने जुलम किया,
तीन लोक को मोह लिया,
''हर्ष'' सुनो नट-नागरिया ।। ४ ।।

(तर्ज : तेरा मेरा प्यार अमर...)

जादूगारे श्याम हजूर, तेरा मुझपे छाया सरूर,
मैं तेरा दीवाना बना, तू ना समझे तेरा कसूर ।।

आ जरा सा सामने, दे दरश ओ साँवरे,
कर महर तू दास पे, सब हुए हैं बावरे,
खुद से ना कर मुझको दूर ।। १ ।।

प्यार से तू काम ले, आके मुझको थाम ले,
मैं लूटा हूँ प्यार में, इतना बाबा जान ले,
मेरी अँखियों के तुम नूर ।। २ ।।

कर रही है दिल्लगी, साँवरे दिल की लगी,
बिन तेरे अब ना बुझे, प्यास कैसी ये जगी,
'हर्ष' करे क्यूँ इतना गरूर ।। ३ ।।

(राग रचयिता - बाल किशन शर्मा)

जैसा भी हूँ श्याम शरण में ले लेना, सांवरे,
धूली मुझको आज चरण की दे देना, सांवरे,
दिल से भुला, मेरी खता, रुठा है क्यूं, श्याम मेरा ।।

पापी कपटी लोभी हूँ आवारा हूँ,
कामी क्रोधी किस्मत का मैं मारा हूँ,
मुझको मिला, तेरा पता, रुठा है क्यूं, श्याम मेरा ।। १ ।।

कितने पापी तूने भव से तारे हैं,
मेरी नैया भी तो श्याम सहारे है,
मुझसे भला, ये तो बता, रूठा है क्यूँ, श्याम मेरा ।। २ ।।

शरणागत हूँ श्याम दया का इच्छुक हूँ,
''हर्ष'' तुम्हारी चौखट का मैं भिक्षुक हूँ,
मुझको भला, यूं ना रूला, रूठा है क्यूं, श्याम मेरा ।। ३ ।।

(तर्ज : पल्लो लटके...)

झोली भरसी ओ भाया झोली भरसी,
खुल्यो है बाबा को दरबार थारी झोली भरसी ।। टेर ।।

श्याम निशान उठा हाथां में जैकारो गुजाँओ,
रस्तो पल में कट जासी जी मत ना देर लगाओ ।। १ ।।

ऐसो लखदातारी म्हेतो नाय सुण्यो ना देख्यो,
पलक मून्दता बदले थारो यो करमा को लेखो ।। २ ।।

कान्हुड़े की मूरत भगतो हिवड़े बीच बसाल्यो,
सालूसाल बुलासी थाने एक निशान चढ़ाल्यो ।। ३ ।।

''हर्ष'' कहवे फागण के माही खाटू जो भी जावे,
श्याम धणी की किरपा सूँ बो बैठ्यो मौज उड़ावे ।। ४ ।।

(तर्ज : तस्वीर बना देना...)

तकदीर बना दे तू, तकदीर बना दे तू,
सेवक की ऐसी, तकदीर बना दे तू ।। टेर ।।

मेरी तकदीर कुछ, ऐसी बनाना,
साँझ सवेरे तेरा दर्शन है पाना,
मोहे दर पे बुलाके तू, तेरा दर्श करा दे तू,
सेवक की ऐसी... ।। १ ।।

चरणों में बाबा मेरा होगा ठिकाना,
छूट ही जाये चाहे, सारा जमाना,
तेरा दास बनाके तू, मेरी आस पुरादे तू,
सेवक की ऐसी... ।। २ ।।

चौखट का तेरा मुझे, चाकर बनाना,
सेवक पे इतनी सी, दया तू दिखाना,
तेरा पास बुलाके तू, कहे ''हर्ष'' हँसा दे तू,
सेवक की ऐसी... ।। ३ ।।

(तर्ज : ऐ मेरे दिले नादां...)

तूफानों में कश्ति, हिचकोले जब खाये,
बन करके माझी तू, ऐ श्याम चला आये ।। टेर ।।

हम भगतों को कान्हा, बस तेरा सहारा है,
मतलब की दुनिया में, इक तू ही हमारा है,
दीनों की उलझन तू, आके सुलझा जाये ।। १ ।।

जीवन की राहों में, अंधियारा जब छाता,
कोई रस्ता ना सूझे, कुछ नजर नहीं आता,
मेरा हाथ पकड़ के तू, रस्ता दिखला जाये ।। २ ।।

इस ''हर्ष'' पे मुश्किल की, जब घड़ियाँ आती है,
बिल्कुल ना घबराऊं, जब तुम सा साथी है,
संकट में मुझको तू, जीना सिखला जाये ।। ३ ।।

(तर्ज : कभी खुशी कभी गम...)

तुने सुख दुःख में साथ निभाया, हर मुसीबत से हमको बचाया,
तुझको अर्पण हमारा ये तन मन,
अब तो तेरे हैं हम, चाहे खुशी दे या गम ।। टेर ।।

मेरे श्याम चरणों में, दे दो ठिकाना,
दर पे तुम्हारे ये, जीवन बिताना,
मेरे नैनो में अब, बस मेरा श्याम हो-२,
प्यार अपना कभी भी ना हो कम ।। १ ।।

तुम्ही ने दिया है, तुम्हारे हवाले,
तू चाहे डूबो दे या चाहे निकाले,
मेरी धड़कन में अब, बस तेरा नाम हो -२,
श्याम इतनी सी कर दे रहम ।। २ ।।

जो अब तक निभाया, निभाते ही रहना,
सदा सच की राहें, दिखाते ही रहना,
मेरे होठों पे बस, इक तेरा नाम हो -२,
''हर्ष'' तन से जो निकले मेरा दम ।। ३ ।।

(तर्ज : कभी दामन छुड़ा लिया...)

तेरा वंदन सदा करुं, अभिनन्दन सदा करुं-२,
ओ कान्हा रेSSS
जग को भुला दिया है चरण में सब कुछ लुटा दिया,
तेरा वंदन, अभिनन्दन-२, ओ छलिया रेSSS
मैंने सदा किया है कि नेहा तुझसे लगा लिया ।। टेर ।।

सदा तुझको ही चाहा, सदा तुझको ही ध्याया,
छोड़ अब मोह माया को, जिया में तुझको बसा लिया,
जिया में तुझको बसा लिया, जिया में तुझको बसा लिया ।
तेरा वंदन... ।। १ ।।

तेरी महिमा मैं गाऊँ, तेरा ही ध्यान लगाऊँ,
तेरी चाहत में पड़ करके, कन्हैया खुद को मिटा दिया,
कन्हैया खुद को मिटा दिया, कन्हैया खुद को मिटा दिया ।
तेरा वंदन... ।। २ ।।

कहीं तू रूठ न जाना, कभी ना मुझको भुलाना,
''हर्ष'' ने तेरे खातिर, जहां से नाता छुड़ा लिया,
जहाँ से नाता छुड़ा लिया, जहाँ से नाता छुड़ा लिया ।
तेरा वंदन... ।। ३ ।।

(तर्ज : मेरी लाज रखना...)

तेरे पास रखना, तेरे साथ रखना,
तेरी दया का सिर पे बाबा, हाथ रखना ।। टेर ।।

चरणों में तेरे, हो मेरा ठिकाना,
जग चाहे छूटे, पर तू ना भुलाना,
बाबा जरा तू इस सेवक की, बात रखना,
तेरे साथ... ।। १ ।।

सेवा में तेरी, बीते जिन्दगानी,
माटी की काया, माटी में जानी,
बेटा समझ के बस इतनी सौगात रखना,
तेरे साथ... ।। २ ।।

मेरा ये जीवन, है तेरे हवाले,
तू चाहे डुबो दे, या चाहे बचाले,
तेरी शरण में ''हर्ष'' हमेशा, नाथ रखना,
तेरे साथ... ।। ३ ।।

(तर्ज : बस इतनी तमन्ना है...)

दरबार तेरे आया, मुझको ना ठुकराना,
ये जख्म दिये जग ने, बाबा तू दवा देना ।। टेर ।।

कितने अरमान लिये, तेरे द्वार पे आया हूँ-२,
जो कण्ठ लगा न सको, चरणों में बिठा लेना ।। १ ।।

बेदर्द जमाने ने, रह-रह के सताया है-२,
इस दिल के घावों पर, मरहम तू लगा देना ।। २ ।।

सुनता हूँ सतायों के, दुःख दर्द मिटाते हो-२,
दो बून्द दया की जरा, इस दास पे बरसाना ।। ३ ।।

तारोगे तो तर लूँगा, वरना यहाँ बैठा हूं-२,
अब ''हर्ष'' तेरे दर से, उठ कर के नहीं जाना ।। ४ ।।

(तर्ज : दोनो ने किया था प्यार मगर...)

दीनों से करे तू प्यार मगर मुझे आज भला क्यूं भूल गया,
मैंने सारे जहाँ से नाता तोड़ा तू मुझको छोड़ चला ।। टेर ।।

आज मैंने निभाया मेरा वादा, सारे जग को मैं छोड़ चला आया हूँ,
ऐसा बाँधा है साँवरे से बंधन, सारे बंधन ही तोड़ के मैं आया हूँ,
क्यूं हुआ तू खफा, ये मुझे तू बता, मेरे दाताऽऽऽ ओ मेरे कान्हाऽऽऽ ।।१ ।।

आज मैं अपने दुखड़े सुना के, साँवरे को हिला के रहूँगा,
दास तेरा ये जिद पे अड़ा है, आज तुझको बुला के रहूँगा,
तू ना आया तो मैं आँसुओं की, आज गंगा बहा के रहूँगा,
चीर के आज मैं अपने दिल को, श्याम तुझको दिखा के रहूँगा,
मैं तेरा हूँ तुझे मैं कन्हैया, आज अपना बना के रहूँगा,
ओ मेरे साँवरे आज खुद को, तेरे दर पे मिटा के रहूँगा,
''हर्ष'' मेरी कसम, श्याम कर दे रहम, मेरे दाता ओ काहे देरी तू करे,
''हर्ष'' मेरी कसम, श्याम कर दे रहम, मेरे दाता ऽऽऽ,
ओ ऽऽ मेरे कान्हाऽऽऽ ।। २ ।।

(तर्ज : दुनिया चले ना...)

देखना चाहो तो चमत्कार देख लो,
श्याम जी का सच्चा दरबार देख लो ।। टेर ।।

हारे का साथ निभाते हैं,
ठुकराये को अपनाते हैं,
नजरों से जाके इक बार देख लो ।। १ ।।

याचक की झोली भरते हैं,
भगतों के संकट हरते हैं,
बिना मांगें देता सरकार देख लो ।। २ ।।

मन से जो बाबा को ध्याओगे,
पल भर में परचा पाओगे,
सुन लेगा लीले का सवार देख लो ।। ३ ।।

बाबा के जैसा न दानी है,
इनका न कोई सानी है,
''हर्ष'' दया का भण्डार देख लो ।। ४ ।।

(तर्ज - आओ जी आओ म्हारा हिवड़े रा पावणा)

दे दे दरश मेरे खाटू वाले सांवरे - २,
तेरे दर्शन की मैंने आस लगाई है,
आजा ओ लीले वाले तेरी दुहाई है ।। टेर ।।

भगतों ने तुझे, जब भी पुकारा, झटसे तू दौड़ा चला आया है,
मुझसे कैसी, भूल हुई जो, इतना मुझे तरसाया है ।। १ ।।

मन की पीड़ा, तू ही बता दे, जाके किसे मैं, आज बताऊँ,
सूनी आँखे, पंथ निहारे, अँसुओं को मैं, कैसे छुपाऊँ ।। २ ।।

मन का पंछी, तड़प रहा है, बिन देखे ना मुझे, चैन मिले,
प्यास बुझेगी, उस पल मेरी, ''हर्ष'' के जिस पल, नैन मिले ।। ३ ।।

(तर्ज : जे हम तुम चोरी से...)

नन्द के लाला का, तेरे गोपाला का,
दरश करादे मोहे आज, खड़ा जोगी ये द्वार पे, नन्द...।।

गली-गली में इसके, सुनके मैं चरचे भारी,
सोचा क्यूं ना देखूं, जाके मैं कृष्ण मुरारी,
कान्हा को, ला जरा, ला जरा, गोदी में डाल के ।। १ ।।

जा रे जा ओ जोगी, यूं बातें क्यूं बनाये,
लाल अभी है सोया, क्यूं ना भिक्षा ले जाये,
मांगे वो, दूंगी मैं, दूंगी मैं, झट से निकाल के ।। २ ।।

बिन देखे ही मैया, मैं ड्योढ़ी से ना जाऊँ,
लाल तेरा दिखला दे, तो तुझसे भिक्षा पाऊँ,
आया हूं, दूर से, दूर से, दर्शन की आस में ।। ३ ।।

(२)

हो हल्ला सुन करके, लल्ला रोये चिल्लाये,
लाख जतन कर लीन्हो, चुप होने को न आये,
सोचे माँ, क्या हुआ, क्या हुआ, मेरे गोपाल के ।। ४ ।।

देख जरा ओ जोगी, ये कैसी विपदा आई,
जोगी झाड़ा देवे, और खिल-खिल हँसे कन्हाई,
खुशियों की, गंगा बहे, गंगा बहे, मैया की आँख से ।। ५ ।।

''हर्ष'' कहे त्रिपुरारी, जोगी का भेष बनाये,
नारायण की माया, निज आँखों देखन आये,
भोले के नैन मिले, नैन मिले, गिरधर गोपाल से ।। ६ ।।

हमने देखे हैं अपनों के ऐसे करम
अपना कहने में अब उनको आती शरम
जिनको उँगली पकड़ कर चलाया कभी
वो खुदा हो गये देखते - देखते ।

(तर्ज : मार दिया जाये कि छोड़...)

नाम बड़ा है तेरा काम बड़ा है,
श्याम तेरे नाम का जुनून चढ़ा है ।। टेर ।।

पूजता तुझको सारा जमाना,
तेरे चरणों का मैं हूँ दिवाना,
तेरा जलवा बड़ा, तेरा रुतबा बड़ा,
तेरी महिमा बड़ी, मेरे साँवरिया ।। १ ।।

अरजी चौखट पे जिसने लगाई,
अपने सेवक की करली सुनाई,
तू है दानी बड़ा, तू है दाता बड़ा-२,
तू विधाता बड़ा, मेरे साँवरिया ।। २ ।।

हर तरफ तेरा डंका बजे है,
तेरी घर घर में ज्योत जले है,
'हर्ष' दर पे खड़ा, चरणों में पड़ा,
दे दे दर्शन जरा, मेरे साँवरिया ।। ३ ।।

(तर्ज : जाने वाले इक संदेशा...)

बर्बरीक ने तीन बाण का, दान जो शिव से पाया है,
इसीलिए श्री कृष्ण ने उनको, घर-घर में पुजवाया है ।। टेर ।।

एक बाण तरकश से निकले, जाकर अपना काम करे,
साध निशाना वही बाण फिर, तरकश में विराम करे,
एक वाण से नाश हो जग का, डमरूधर की माया है ।। १ ।।

लाख जतन कोई भी करले, पानी में ना गल सकता,
चाहे कितनी ज्वाला होवे, अग्नि में ना जल सकता,
कभी निशाना चूक न पाये, शंकर ने फरमाया है ।। २ ।।

सारे पत्ते बीन्ध बाण जब, हरि चरण में आन पड़ा,
महादेव की महिमा का तब, श्री कृष्ण को ज्ञान हुआ,
उनकी माया जान के छलिया, मन ही मन मुस्काया है ।। ३ ।।

तीन बाण की ''हर्ष'' कन्हैया, सारी महिमा जान गये,
शीश के दानी बर्बरीक की, ताकत को पहचान गये,
अपने नाम दिये बालक को, शीश दान में पाया है ।। ४ ।।

(तर्ज : बिन्दिया चमकेगी...)

बंशी बाजेगी, राधा नाचेगी,
चाहे जग रूठे ते रूठ जाये ।। टेर ।।

तेरी बंशी बड़ी जादूगारी जुलम मेरे साथ करे-२,
सारी रात जगाये बैरन मेरी नींद चुराये,
मैं तो नाचूंगी-२, चाहे छत टूटे तो टूट जाये ।। १ ।।

राधेरानी हुई रे दिवानी बिरज के सांवरिया-२,
मन ही मन वो चाहे लेकिन तुझको बोल न पाये,
मैं तो चाहूँगी-२, चाहे सब रूठे तो रूठ जाये ।। २ ।।

''हर्ष'' बोले मुरलिया से कान्हा बचा ना कोई आज तलक-२,
भगतों के ये होश उड़ाये सारी रात नचाये,
सेवक नाचेंगे, छम छम नाचेंगे, चाहे घर छूटे तो छूट जाये ।। ३ ।।

(तर्ज : दादी जी थारी चून्दड़ी...)

बाबाजी थारी पागड़ी की, शोभा घणी जोर की,
मोत्याँ की किलँगी सोवे, सोवे पाँख मोंर की ।। टेर ।।

केशरियो बागो यो बाबा, ''मनड़ो घणो लुभावे है''-२,
लाल सुरंगों पेचो थारे, ''भगतां ने भरमावे है''-२,
देख देख म्हारे मन में-२, उठे है हिलोर जी ।। १ ।।

हाथाँ माँही मोर छड़ी है, ''काना कुण्डल लटक रह्या''-२,
देख-देख थारे रूतबे ने, ''सेवक सारा भटक रह्या''-२,
गल बैजन्ती हार सुहाणों-२, बण बैठ्यो चितचोर जी ।। २ ।।

साँचो है दरबार सेठ को, ''बैठ्यो हुक्म सुणाय रह्यो''-२,
''हर्ष'' साँवरो निज भगतां ने, ''साँचो न्याय चुकाय रह्यो''-२,
बाँध पागड़ी निज भगतां की-२, खेचों प्रेम की डोर जी ।। ३ ।।

(तर्ज - कबसे तेरी बाट निहारें...)

बालक तेरा नाम पुकारे, आजा ओ निर्बल के सहारे,
श्याम धणी ओ खाटू वाले बिगड़ी बना जा, बिगड़ी जा-२ ।।

सूना चितवन, सूना है मन, सूनी आँखे पथ निहारे,
मुरझाई बगिया को बाबा, बिन तेरे अब कोन संवारे,
नैया मेरी तेरी हवाले, भव से तूही पार निकाले,
श्याम धणी ओ खाटू वाले, बिगड़ी बना जा, बिगड़ी बना जा - २ ।।

जब संकट की घड़ियाँ आये, झट तू दौड़ा-दौड़ा आये,
तुझसा देव नही है दूजा, तू तो लखदातार कहाये,
जल्दी आजा लीले वाले, आके मेरी लाज बचाले,
श्याम धणी ओ खाटू वाले, बिगड़ी बना जा, बिगड़ी बना जा-२ ।।

किस्मत फूटी, नैया टूटी, आस तेरी ना छूटी बाबा,
साचाँ केवल नाम तुम्हारा, दुनिया सारी झूठी बाबा,
''हर्ष'' कहे सुन ओ मतवाले, हारे के तुम हो रखवाले,
श्याम धणी ओ खाटूवाले, बिगड़ी बना जा बिगड़ी बना जा-२ ।।

(तर्ज - नींद न आये रे, ''रसिक पागल'')

भक्त बुलाये रे, दास बुलाये रे,
सेवक तेरा ध्यान लगाये, क्यूं ना आये रे,
पल-पल तेरी बाट निहारें, क्यूं इतना तरसाये ।।

सूनी आँखे पंथ निहारे, आजा श्याम सलोने,
विरहा की घड़ियों में तेरे, दास लगे है रोने,
खड़े हुए चौखट पे तेरी, सेवक नैन बिछाये ।। १ ।।

बिन देखे अब चैन न आये, जल्दी से तू आजा,
भक्त पुकारे नाम तुम्हारा, आके धीर बंधा जा,
श्रद्धा से नैनों के मोती, तुझको भेंट चढ़ाये ।। २ ।।

भगतों ने दरबार सजाया, पावन ज्योत जलाई,
और सता ना ओ नटनागर, देता ''हर्ष'' दुहाई,
इतनी देर लगाई अब तो, धीरज छूटा जाये ।। ३ ।।

(तर्ज : आना पवन कुमार हमारे हर कीर्तन में...)

भक्त करे जयकार, श्याम तेरे मन्दिर में,
शंख नगाड़ा और घड़ियावल-२,
नौबत बाजे द्वार, श्याम तेरे मन्दिर में ।। टेर ।।

चन्दन केशर महक रहें हैं-२,
इत्तर की बौछार, श्याम तेरे मन्दिर में ।। १ ।।

भाँत-भाँत के गजरे सोहे-२,
खूब सजा सिणगार, श्याम तेरे मन्दिर में ।। २ ।।

खीर चूरमा माखन मिसरी-२,
भोग लगे सरकार, श्याम तेरे मन्दिर में ।। ३ ।।

उछल-उछल तेरा लीला नाचे-२,
महिमा अपरम्पार, श्याम तेरे मन्दिर में ।। ४ ।।

(तर्ज : किसी को राम किसी को श्याम...)

भजेगा श्याम अरे नादान, बड़ा आराम पायेगा,
ये ऐसा मन्त्र है प्यारे, जो तेरे काम आयेगा ।। टेर ।।

झुकाकर देखले श्री श्याम के चरणों में सर अपना,
सम्भाले पर ना सम्भलेगा, मिलेगा इसके दर इतना,
भजेगा श्याम... ।। १ ।।

सदा रहमत बरसती है, तेरे भण्डार भर देगा,
महर की इक नजर होगी, तो बेड़ा पार कर देगा,
भजेगा श्याम... ।। २ ।।

लगाले डूब कर गोता, दया का है घना सागर,
मिलेंगे प्रेम के मोती, तू भरले प्यार की गागर,
भजेगा श्याम... ।। ३ ।।

''हर्ष'' सब छोड़ दे इस पर, करे जा मौज प्यारे तू,
फिकर इसको सदा तेरी, भजेजा रोज प्यारे तू,
भजेगा श्याम... ।। ४ ।।

(तर्ज : हम तुमसे जुदा होके...)

भगतों पे रहम खाओ, घनश्याम चले आओ,
घनश्याम चले आओ ।। टेर ।।

भगतों के दिल में बसी, मेरे श्याम की मस्ती है,
हर सांस कन्हैया के, दर्शन को तरसती है,
दर्शन दो चले आओ, दर्शन दो चले... ।। १ ।।

हम प्रेम के रोगी हैं, और वैद्य बिहारी बना,
जीने दे ना मरने दे, ये ऐसा शिकारी बना,
ये रोग मिटा जाओ, ये रोग मिटा... ।। २ ।।

दुनिया को तो जीत चुके, पर श्याम ना मिल पाया,
ऐ ''हर्ष'' हमे अपनी, तकदीर ने तरसाया,
किस्मत ही जगा जाओ, किस्मत ही जगा... ।। ३ ।।

(छप्पन करोड़)

भगतां सूं क्यांकी मरोड़ बाबा, दे दे तू छप्पन करोड़ बाबा,
भगतां रो मनड़ो ना तोड़ बाबा, दे दे तू छप्पन करोड़ बाबा ।।टेर ।।

खर्चा को घर में कोन्या ठिकाणो,
मँहगो हुयो तेरो किर्तन कराणो,
सैं की कमर दीन्ही तोड़ बाबा ।। १ ।।

आख्याँ दिखावे घर में लुगाई,
महँगी घणी टाबर की पढ़ाई,
थेली ने तू ढीली छोड़ बाबा ।। २ ।।

रुपिया बिना तेरा दर्शन भी भारी,
रुपिया पिछाणे तेरो पुजारी,
म्हारो भी टाँको तू जोड़ बाबा ।। ३ ।।

दुनिया में सगलो माया को खेलो,
माया बिना ''हर्ष'' माणस है धेलो,
माया ही सैं को निचोड़ बाबा ।। ४ ।।

(तर्ज - मैं तुलसी तेरे आंगन की...)

महर करो, मेरे सांवरिया-२,
खाली पड़ी है - ३, मेरी गागरिया ।। टेर ।।

साथ चले जो, साथ निभाने,
आज हुए वो, सब बेगाने-२,
आस तेरी नट, नागरिया ।। १ ।।

श्याम मेरे मैं, दास हूँ तेरा,
एक सहारा, मुझको तेरा-२,
अरज करे तेरा, चाकरिया ।। २ ।।

आज करो हे, श्याम सुनाई,
रो-रो तुझको, दूँ मैं दुहाई-२,
रंग दे तू मेरी, चादरिया ।। ३ ।।

तेरा कुछ ना, घट जायेगा,
काम मेरा भी, पट जायेगा-२,
''हर्ष'' कहे सुन, सांवरिया ।। ४ ।।

(तर्ज : ओल्यूं)

म्हारा खाटूवाला धणिया, थारी याद सतावे जी,
ओल्यूं आवे जी श्याम थारी ओल्यूं आवे जी ।। टेर ।।

होठं खुले तो निकले बाबा, बस थारो ही नाम,
टाबरियां ने भूल गया थे, क्यूं म्हारा घनश्याम,
म्हाने क्यूं इतणा तरसाओ-२, आके धीर बंधाओ जी ।। १ ।।

घाल आँगली बन्द कर्‌या थे, कइयां थारा कान,
भूल चूक की माफी देद्‌यो, बालक हाँ नादान,
म्हारा देव दया दिखलाओ-२, म्हाने दर्श दिखाओ जी ।। २ ।।

थारे होतां म्हे दुख पावाँ, दुनिया घाले हाँसी,
हूक उठे हिवड़े के माहीं, कद म्हारो बाबो आसी,
कह्‌वे ''हर्ष'' थे बेगा आओ-२, म्हापे दया दिखाओ जी ।। ३ ।।

(तर्ज : इबकी बचाले मेरी माय)

म्हाने कदसी करोला भव पार,
बताओ म्हारा साँवरिया ।। टेर ।।

मोह माया में फंस कर थाने, भुला दियो दातार-२,
हिवड़े माहीं ज्ञान को दिवलो, कदसी चसे लो करतार,
बताओ म्हारा साँवरिया ।। १ ।।

काम क्रोध मद लोभ पिपासा को मन में संचार-२,
पाँच लुटेरा लूट मचावे, कदसी करोला संहार,
बताओ म्हारा साँवरिया ।। २ ।।

हवा में पत्तों हिल ना पावे, बिन मरजी सरकार-२,
हाथ दया को राखो सिर पे, दिन्यो थे कैयां बिसार,
बताओ म्हारा साँवरिया।। ३ ।।

'हर्ष' भुलाओ सगली भूलां, खड्‌या म्हे हाथ पसार-२,
एक भरोसो थारो ही है, कद सी करोला उद्धार,
बताओ म्हारा साँवरिया ।। ४ ।।

(तर्ज : छुप गये सारे नजारे...)

मिल गई सारी बहारें, उसको श्याम के दर पे-२,
जिसने बांहे पसारि जाके श्याम के दर पे ।। टेर ।।
इनको मनाले तू, ध्यान लगाले, तेरे दुःख टाले, ये बाबा-२,
खाटूवाले का जिसने भी नाम लिया है,
लीले वाले ने उसका ही काम किया है,
मिल गया उसे खजाना मेरे श्याम के दर पे-२,
बनकर आया दिवाना जो भी श्याम के दर पे ।। १ ।।
बड़ा दिलवाला, मेरा रखवाला, है जग से निराला, कन्हैया-२,
मेरे मालिक पे जिसको भरोसा है,
जीवन में फिर कभी ना वो रोता है,
आ गया जो भी शरण में, मेरे श्याम के दर पे-२,
पाया डेरा चरण में उसने श्याम के दर पे ।। २ ।।
बन के दिवाना, मैं गाऊँ मस्ताना, कन्हैया तेरा, तराना-२,
तेरे भगतों को तेरा ही सहारा है,
टूटी नैया का तूही तो किनारा है,
'हर्ष' कहे जो माथा टेके श्याम के दर पे-२,
पल में बदले रे किस्मत मेरे श्याम के दरपे ।। ३ ।।

(तर्ज : देर हो सकती है पर...)

मिल जायेगा किनारा, बाबा जो चाहेंगे,
तेरे डूबने से पहले, ये दौड़े आयेंगे ।। टेर ।।

उसको फिकर कैसी, जो हो गया इनका,
बाबा की किरपा से, हर काम हो उसका,
सच्ची लगन हो भगतों, ये रूक नहीं पायेंगे ।। १ ।।

चरणों को छूके देख, तेरा हाथ थामेंगे,
आकर मुसीबत से, तुझको निकालेंगे,
दुःख के समय में तेरे, बड़े काम आयेंगे ।। २ ।।

जिसने भी ध्याया है, इसने निभाया है,
जो खो गया इसमें, उसने ही पाया है,
ये ''हर्ष'' खुशी से तेरा, दामन भर जायेंगे ।। ३ ।।

(तर्ज : मुझे प्यार की जिन्दगी देने वाले...)

मेरे सांवरे ओ मेरे मुरली वाले,
दरश दिखा जा, मुझे लीले वाले ।। टेर ।।

चौखट पे तेरी, खड़ा है सवाली,
नैनों में आंसू, मगर झोली खाली,
नहीं कोई दूजा, जो आकर सम्भाले ।। १ ।।

कितनों की तुमने, बिगड़ी बनाई,
मेरी आज करले, आकर सुनाई,
मुझे बेटा कहके, गले से लगाले ।। २ ।।

''हर्ष'' मुझे है, तेरा ही सहारा,
किरपा तुम्हारी, भरोसा तुम्हारा,
गहरे भँवर से, मुझे तू निकाले ।। ३ ।।

(तर्ज - तूने अजब रचा भगवान खिलोना...)

मेरे घर में तू इकबार, कन्हैया आ जाना,
तेरी खूब करूँ मनवार, कन्हैया आ जाना ।। टेर ।।

गंगा जल से चरण धुलाऊँ-२,
तेरा खूब करूँ सत्कार, कन्हैयां आ जाना ।। १ ।।

छोटे-छोटे फुलके तुझे जिमाऊँ-२,
ज्यामे माखन की बहे धार, कन्हैया आ जाना ।। २ ।।

खिला पिला कर चरण दबाऊँ - २,
खेऊँ पंखी झालरदार, कन्हैया आ जाना ।। ३ ।।

झाड़ पोंछ कर पलंग बिछाऊँ - २,
फिर पोढ़ो लखदातार, कन्हैया आ जाना ।। ४ ।।

बड़े प्रेम से ''हर्ष'' बुलाऊँ-२,
मेरा न्योता कर स्वीकार, कन्हैया आ जाना ।। ५ ।।

(तर्ज : मेरे घर के आगे श्याम...)

मेरे जीवन की ये शाम, तेरे दरपे ढल जाये,
मुझको लीले वाले, तेरी भगती मिल जाये ।। टेर ।।

दिन राता साँवरे मैं तो, सेवा करूंगा तेरी,
मंदिर में बैठा बैठा, माला जपूंगा तेरी,
तेरी किरपा से मेरा, हर पाप धुल जाये ।। १ ।।

ये झूठ नहीं है बिल्कुल, सारा जहाँ कहता है,
भक्तों की भीड़ में हरदम, बाबा सदा रहता है,
ना जाने कब मुझको, तेरा दर्शन मिल जाये ।। २ ।।

ये ''हर्ष'' जहाँ भी देखे, तू ही दिखाई देगा,
श्री श्याम हरे का नारा, मुझको सुनाई देगा,
भव से तर जाने का, हर रस्ता खुल जाये ।। ३ ।।

(तर्ज : चंदा मामा से प्यारा मेरा...)

मैं तो तेरा दिवाना खाटूवाले,
अपना रिश्ता पुराना खाटूवाले ।। टेर ।।

तुझसा देव मिला है मुझको, फूलां नहीं समाऊँ,
जी करता है बाबा तेरे, चरणों में बिछ जाऊँ,
मिला मुझको ठिकाना-३, खाटूवाले... ।। १ ।।

लखदातारी सेठ साँवरा, हरदम मेरी सुनता,
माँगे बिन ही सेवक की ये, हरदम झोली भरता,
पाया मैंने खजाना-३, खाटूवाले... ।। २ ।।

लीले वाले श्याम प्रभु की, लीला सबसे न्यारी,
दर पे जो इक बार गया वो, जाये बारी बारी,
''हर्ष'' यूँ ही बुलाना-३, खाटूवाले... ।। ३ ।।

(तर्ज : दिल चोरी साडा हो गया...)

मैं श्याम दिवाना हो गया बस क्या कहने क्या कहने,
चरणों में ठिकाना हो गया बस क्या कहने क्या कहने,
ये मेरा लखदातार, मेरी हो गई आँखे चार,
अब तो इससे बातें मैं करूं,
मेरा मीत पुराना हो गया बस क्या कहने क्या कहने ।। टेर ।।

सपने में रात कल आया, आकर के मुझे जगाया,
मुझपे जादू कर डाला, मुझे बे काबू कर डाला,
इक नया फसाना हो गया बस क्या कहने क्या... ।। १ ।।

तिरछे नैनों के खंजर, घोपें ये दिल के अंदर,
सपना तो एक बहाना, आकर के मुझे सताना,
अब सफर सुहाना हो गया बस क्या कहने क्या... ।। २ ।।

मैं चाकर तू मेरा देवा, ये ''हर्ष''करे तेरी सेवा,
तेरे गीत सदा मैं गाऊँ, तुझे पास सदा मैं पाऊँ,
खुशियों का तराना हो गया बस क्या कहने क्या... ।। ३ ।।

(तर्ज : तुम्ही मेरे मन्दिर ...)

मैं हूँ कन्हैया, गलती का पुतला,
वरना भला क्या मैं, इन्सान होता,
अगर तेरे दर पे, माफी ना मिलती,
बता कैसे फिर तू, भगवान होता ।। टेर ।।

भलाई बुराई, कुछ भी ना जानूं,
कर्महीन निष्ठुर, खुद को मैं मानूं,
अगर पाप मेरे, जो तू ना धोता ।। १ ।।

करमों की ज्वाला, मुझे है जलाती,
विषयों की तृष्णा, थपेड़े है खाती,
अगर सत की बून्दों में, तू ना भिगोता ।। २ ।।

मतवाले हाथी सा, मन मेरा डोले,
तेरा नाम इक पल, मेरे लब ना बोले,
अगर मोती भक्ति के, तू ना पिरोता ।। ३ ।।

पतितों को आकर, सदा तू उठाता,
कितना दयालू है मेरा विधाता,
अगर ''हर्ष'' तेरा, सेवक जो रोता ।। ४ ।।

(तर्ज : तूने खूब दिया सब भगतों को...)

मैंने सौंप दी है पतवार तुझे,
अब खे या डुबो, मरजी तेरी ।। टेर ।।

मारा मारा फिरता था मैं तो सदा, मुझको मिला अब तेरा पता,
मंजिल मिली है अब मुझको, मेरी फिकर अब है तुझको,
रखदी मैंने, चौखट पे तेरे, सुननी ही पड़ेगी, अरजी मेरी ।। १ ।।

मुझको भरोसा है तुझ पर, तेरे सहारे मैं जिंदा हूँ,
तुझको भुला कर बैठा रहा, इसके लिये शर्मिन्दा हूँ,
बिन मांगे ही, तूने बाबा, खुशियों से झोली, भरदी मेरी ।। २ ।।

मुझको ही आने में देरी हुई, आते ही किरपा तेरी हुई,
पहले अगर जो आ जाता, धोखे क्यूं इतने मैं खाता,
आया 'हर्ष' तेरे, दरपे बाबा, आने में क्यूं, करदी देरी ।। ३ ।।

(तर्ज - मेरा दिल ये पुकारे आजा...)

मोहे थामले कन्हैया आजा, मेरा बनके खिवैया आजा,
बड़ा गहरा है भंवर, कुछ आये ना नजर ।।

बेसहारा समझ, ये जहाँ छल गया, छल गया,
छोड़ मुझको बता, तू कहाँ चल दिया, चल दिया,
मोहे लगता है डर, थोड़ी किरपा तू कर,
जरा गिरते हुए को उठा जा ।। १ ।।

आजमा ना मुझे, ओ मेरे सांवरे, सांवरे,
आज रो-रो हुए, नैन ये बावरे, बावरे,
मोहे ऐसे ना रुला, काहे रुठा है भला,
रोती अंखियों को आके हंसा जा ।। २ ।।

आंसुओं पे मेरे, ये जहाँ हँस रहा, हँस रहा,
ये जमीं हँस रही, आसमाँ हँस रहा, हँस रहा,
बैरी हुआ है जहाँ, अब जाऊँ मैं कहाँ,
इस ''हर्ष'' को ये बतला जा ।। ३ ।।

(तर्ज : ना कजरे की धार...)

ये फूलों के हार, ये गजरे बेशुमार,
ये किसने किया सिंगार, लागे इतना प्यारा तू, हाँ इतना ।।

तेरे केश हैं घुंघराले, तेरे नैन ये कजरारे,
तेरा रूप ऐसे दमके, ज्यूँ चाँद और सितारे,
पल भर ना हटे नजरे-२, मैं देखूँ बारम्बार ।। १ ।।

कानों में कुण्डल प्यारे, गल में बैजन्ती माला,
तेरे होठ लागे जैसे, मधु से भरा हो प्याला,
देखे जो इक नजर वो-२, खो देता है करार ।। २ ।।

सिंगार तेरा हटके, बाँकी अदा के लटके,
ये साँवली सी सूरत, जो देखले वो भटके,
नैनों में बस गया तू-२, ओ मेरे लखदातार ।। ३ ।।

दरबार महके तेरा, सिंगार महके तेरा,
मदमस्त हो दिवाना, ये 'हर्ष' बहके तेरा,
आँखों में छा गया है-२, तेरे रूप का खुमार ।। ४ ।।

(तर्ज : धमाल)

राधा कान्हुड़े पर केशर छिड़के छज्जे पे खड़ी,
सांवरिये की पीली-पीली रंग दीन्ही पगड़ी ।। टेर ।।

श्याम बिहारी मुरली बजावे, मीठी तान सुणावे जी,
छज्जे पर बृषभान दुलारी, थिरके घड़ी-घड़ी ।। १ ।।

नीचे आजा गोरी तन्ने, होली आज खिलास्यूं ऐ,
मनड़ो म्हारो क्यूं तरसावे, उपर चढ़ी-चढ़ी ।। २ ।।

म्हासूं ज्यादा थाने कान्हा, थारी मुरली प्यारी जी,
होठां उपर थारे सोहे, मुरली घणी बड़ी ।। ३ ।।

सांवरियो यूं बोले प्यारी, तानो मत ना मारे ऐ,
मुरली के खातिर तू म्हासूं, कईयां लड़ी-लड़ी ।। ४ ।।

मुरली तो होठां पर सोवे, ''हर्ष'' सांवरो बोले जी,
म्हारी हर धड़कन मे राधा, तूही बसी पड़ी ।। ५ ।।

(तर्ज : शेर पे सवार होके आजा शेरावाली...)

लीले पे सवार होके, आजा मेरे साँवरे,
भगतों से प्रीत, निभाजा मेरे साँवरे ।। टेर ।।

पलकों में बाबा तेरी, छवि ये बसाई है,
निर्बल के साथी आजा, तुझको दुहाई है,
भगतों को दरश, दिखाजा मेरे साँवरे ।। १ ।।

हमको तो खाटू वाले, तेरा ही सहारा है,
निष्ठुर जहाँ में बस, तू ही तो हमारा है,
भगतों की बिगड़ी, बना जा मेरे साँवरे ।। २ ।।

दर्शन बिना ये तेरा, सेवक निराश है,
''हर्ष'' का मनवा रोये, पलकें उदास है,
भगतों को धीर, बँधाजा मेरे साँवरे ।। ३ ।।

(तर्ज - धन घड़ी धन भाग हमारा...)

लीले वाले श्याम हमारे, तेरे भरोसे तेरे सहारे,
चले गुजारा भगतों का... ।। टेर ।।

तुझसा देव मिला हमको, नहीं फिकर हमको बाबा,
तुझसे जीवन चलता है, भगतों का तूही दाता,
नैया सबकी तेरे हवाले, देव दयालू खाटू वाले,
चले गुजारा भगतों का ।। १ ।।

श्याम दया का सागर है, भरता सबकी गागर है,
उसको उतना दे देता, जिसकी जितनी चादर है,
जिसने जैसी लगन लगाई, उसकी वैसी करी सुनाई,
चले गुजारा भगतों का ।। २ ।।

शरण तेरी जो आया है, उसको गले लगाया है,
जिसने जो मन्नत मांगी, खाली नहीं लौटाया है,
''हर्ष'' जो तेरा नाम पुकारे, पल में तू संकट से उबारे,
चले गुजारा भगतों का ।। ३ ।।

(तर्ज : चली कांवरियो की टोली...)

लीले घोड़े की सवारी ये है तीन वाणधारी,
आके भगतों की लाज बचाये रे, बाबा हारे का साथ निभाये रे ।।

बड़ा ही दयालू मेरा श्याम सरकार है,
भरता भण्डारे ये तो लखदातार है,
'ये है दीनों का सहारा'-२, 'सारे भगतों का प्यारा'-२,
बाबा भगतों की झोलियाँ भराये रे ।। १ ।।

पल में प्रभू को शीश दान देने वाला,
दानियों में दानी मेरा बाबा खाटू वाला,
'जो भी अरज लगायें'-२, 'उसे खाली न लौटाये'-२,
बाबा भगतों से प्रीत निभाये रे ।। २ ।।

मन से बुला ले बाबा दौड़ा-दौड़ा आये,
सुन के पुकार तेरी रुक नहीं पाये,
'लीले घोड़े चढ़ आये'-२, आके बिगड़ी बनाये-२,
बाबा भगतों के दुखड़े मिटाये रे ।। ३ ।।

साँचा-साँचा परचा है साँची सकलाई,
श्याम की दुअरिया पे जाके देखो भाई,
'कहे ''हर्ष'' सुनेगा'-२, 'तेरा काम बनेगा'-२,
बाबा भगतों के काम बनाये रे ।। ४ ।।

(तर्ज : देना हो तो दीजिये ...)

वादा करले साँवरे, छोड़ोगे ना हाथ,
ये सांस चलेगी जब तक, तू रहेगा मेरे साथ ।। टेर ।।

इसी जनम की जानूँ बाबा, आगे का किसने देखा,
तेरी किरपा रहे जो मुझपे, बदले जनमों की रेखा,
ये जीवन सुधर गया तो, करूं अगले जनम की बात ।। १ ।।

तेरा साथ रहे तो बाबा, भव से मैं तर जाऊँगा,
जन्म मरण के इन फंदों से, मुक्ति मैं पा जाऊँगा,
बस एक दफा तू धर दे, तेरी किरपा का हाथ ।। २ ।।

अन्त समय साँसों के सुर में, कान्हा गीत तुम्हारे हों,
''हर्ष'' मेरी आँखों के आगे, तुम ही मीत हमारे हो,
ये जीवन सफल बनादे, बस इतनी है फरियाद ।। ३ ।।

(तर्ज : स्वरचित)

वारी जावाँ-३, साँवली सुरतिया पे वारी जावाँ-२,
ऐसा सिंगार तेरा किसने सजाया रे,
देख देख मुखड़ा तेरा मन हर्षाया रे ।। टेर ।।

साँवला सा मुखड़ा है नैन कजरारे,
तिरछी निगाहों के तू तीर ऐसे मारे,
वारी जावाँ-३, तिरछी नजरिया पे वारी... ।। १ ।।

केशरिया बागा तेरा हार है गुलाबी,
घुंघराले केश तेरे चाल है नवाबी,
वारी जावाँ-३, साँवले साँवरिया पे वारी... ।। २ ।।

दुल्हन सी लागे तेरी खाटू नगरिया,
लीले पे बैठा दुल्हा बनके साँवरिया,
वारी जावाँ-३, खाटू नगरिया पे वारी... ।। ३ ।।

गजरों के हार तेरे ''हर्ष'' क्या सिंगार है,
किसने सजाया तुझे मेरे सरकार है,
वारी जावाँ-३, श्याम की दुअरिया पे वारी... ।। ४ ।।

(तर्ज : सुवटा प्यारा सुवटा...)

साँवरों या साँवरो म्हारो खाटू को सरदार,
कलयुग रो यो देव कुहावे बाबो लखदातार,
देव अवतारी है, बड़ो बलकारी है, सेठ यो अलबेलो, बड़ो दातारी है ।।

एक बार खाटू जासी, बार बार जावेलो,
सुणके पुकार तेरी, बाबो दोड़्यो आवेलो,
मतना देरी करे ओ भाया-२, बिगड़ी तेरी सुधार,
कहणे की दरकार नहीं यो, सुणसी तेरी पुकार,
देव अवतारी है... ।। १ ।।

नित नया सेवका ने, ढूण्ढ बुलावे है,
भगतां के मन की बाबो, आस पुरावे है,
तू भी जाके, आस पुरा ले-२, साँचो है दरबार,
दोन्यूं हाथां माल लुटावे, साँवलियो सरकार,
देव अवतारी है... ।। २ ।।

''हर्ष'' मेरे साँवरे ने, मन सूं जो भी ध्यासी रे,
बाबा की दया सूँ बैठ्यो, मौज मनासी रे,
बिन बोल्याँ ही, बाबो तेरा-२, भर देसी भण्डार,
बेगो जाके धोक लगाले, मतना करे उवाँर,
देव अवतारी है... ।। ३ ।।

(तर्ज : ये रेशमी जुल्फों...)

सिंगार तेरा ये, किसने सजाया है,
यूँ लगे साँवरे कि बहार आ गई ।। टेर ।।
गेंदा, चम्पा, चमेली और मोगरा,
इनकी, खुशबू से आंगन महक रहा,
प्यारा सा ये सिंगार तेरा, सोणा लागे दरबार तेरा,
यूँ लगे साँवरे... ।। १ ।।
चंदन, केशर का माथे पे टीका लगे,
तेरे, आगे जमाना ये फीका लगे,
केशरिया बागा लहराये, ये रंग बसन्ती बिखराये,
यूँ लगे साँवरे... ।। २ ।।
तूने, जलवो का जादू दिखलाया है,
कैसे, दुल्हा सा सजकर इतराया है,
हमको करता है दिवाना, होले से तेरा ये मुस्काना,
यूँ लगे साँवरे... ।। ३ ।।
तेरे भगतों ने तुमको सजा ही दिया,
अपने नैनों में ''हर्ष'' ने बसा ही लिया,
गजरों की आभा मन भाये, फूलों की बगिया मुस्काये,
यूँ लगे साँवरे... ।। ४ ।।

(तर्ज : खड़ी रे नीम के नीचे...)

सुण रे भायला सगला खाटू चालस्याँ,
नाच कूदता गीन्दड़ करता, घूमर आपाँ घालस्याँ ।। टेर ।।

रिंगस सूं निशान उठाकर खाटू पैदल जास्याँ जी,
फागण की बारस ने सगला जाकर धोक लगास्याँ जी,
मंदरिय के आगे डेरो डालस्याँ ।। १ ।।

फागणिये में सेठ साँवरो मोकलो माल लुटासी जी,
जितणो बेगो भाया जासी उतणो ज्यादा पासी जी,
गठ जोड़े के सागे आपाँ चालस्याँ ।। २ ।।

बेगा सा थे त्यारी करल्यो मेले की रूत आई जी,
फागणिये में थारी भगतो करसी श्याम सुणाई जी,
''हर्ष'' भगत ने भी सागे ले चालस्याँ ।। ३ ।।

(तर्ज : उड़-उड़ रे म्हारा...)

सुण-सुण रे म्हारा खाटु वाला धणिया,
फागणिये में म्हाने बुलाय लीजे,
चरणां मे थारे बिठाय लीजे ।। टेर ।।

रंग रंगीलो फागण आवे, भगतां रो मनड़ो ललचावे,
भगतां री आस पुराय दीजे ।। १ ।।

रिंगस सूं निशान उठास्याँ, पगाँ उभाणा थारे आस्याँ,
भगतां ने पार लगाय दीजे ।। २ ।।

ढपली चंग मजीरा बाजे, उछल उछल तेरा सेवक नाचे,
भगतां ने नाच नचाय लीजे ।। ३ ।।

''हर्ष'' कह्वे फागण मे भारी, माल लुटाओ लखदातारी,
भगतां री झोली भराय दीजे ।। ४ ।।

(तर्ज : बाबा के दरबार में अब तो लगी लौटरी भगतों की...)

सेठों की क्या करे नौकरी, करो चाकरी दाता की,
इसके जैसा सेठ नहीं कोई भरो हाजरी बाबा की ।। टेर ।।

भगतों की भरती है चालू, तू क्यूं देर लगाये,
आगे पीछे हो सकता पर, तेरा नम्बर आये,
चिन्ता सारी मिट जायेगी, नून तेल और आटा की ।। १ ।।

रोज नियम से मन्दिर जाना, सुनले ओ नादान,
गर तुम नागा करोगे भैया, हो जाये नुकसान,
बड़े नफे का सौदा है ये, जगह नहीं कोई घाटा की ।। २ ।।

''हर्ष'' कहे तू चंद दिनों में, परमानेन्ट हो जाये,
श्याम धणी का सारे जग में, तू सर्वेंट कहाये,
बिरला की दरकार नहीं फिर, नहीं जरूरत टाटा की ।। ३ ।।

(तर्ज : क्या मिलिये ऐसे लोगों...)

सेवक के दुखड़ों का तुझपे, खूब असर हो जायेगा,
गर मैं भूखा रहा तो बाबा, तू कैसे खा पायेगा ।। टेर ।।

नावाकिफ तू गम से मेरे, रात गुजारे सो सो कर,
लेकिन ये दुखड़ों का मारा, रैन बिताये रो रो कर,
चीर कलेजा तेरा सेवक, दिल के घाव दिखायेगा ।। १ ।।

सच्चा सेवक हूँ मैं तेरा, ना सोऊँ ना सोने दूँ,
तेरा मान घटा कर अपना, मान कभी ना होने दूँ,
सेवक का जो मान घटा तू, चुप कैसे रह पायेगा ।। २ ।।

मान और अपमान का तुझको, ठेकेदार बनाया है,
''हर्ष'' तेरी चौखट पे मैंने, आकर शीश झुकाया है,
मेरी लाज गई तो बाबा, तू कैसे बच पायेगा ।। ३ ।।

(तर्ज : थाली भर कर ल्याई...)

श्याम देव की करूँ चाकरी, मेरी ऊँची शान है,
जितना नाम जपूं बाबा का, बढ़ता उतना मान हैं ।। टेर ।।

रोज नियम से मंदिर जाकर, भरूँ हाजरी बाबा की,
मीठे मीठे भजन सुनाकर, करूँ चाकरी दाता की,
साँझ सवेरे महिमा गाऊँ, बस इतना सा काम है,
जितना नाम... ।। १ ।।

मन चाही तनखा देता है, ऐसा सेठ निराला है,
मेरी सेवा से खुश रहता, मेरा खाटू वाला है,
सुविधाओं के संग दिया जी, सुख का सभी सामान है,
जितना नाम... ।। २ ।।

हग ग्यारस को सेठ साँवरा, खाटू मुझे बुलाता है,
भत्ता बोनस और तरक्की, झोली में भर देता है,
भूल चूक की माफी देता, ''हर्ष'' बड़ा ही महान है,
जितना नाम... ।। ३ ।।

(तर्ज : बाबुल का ये घर बहना...)

श्याम तेरे चरणों में, सेवक का ठिकाना है,
जैसा भी हूँ तेरा हूँ, अब तुझको निभाना है ।। टेर ।।

लायक नहीं था मैं, पर तूने सम्भाल लिया-२,
तेरा मेरा रिश्ता ये, मानो बरसो पुराना है,
श्याम तेरे चरणों... ।। १ ।।

साँचा है दर तेरा, तेरा ही सहारा है-२,
तू ही तो हमारा है, जग सारा बेगाना है,
श्याम तेरे चरणों... ।। २ ।।

दीनों का दाता तू, दुखियों का साथी है-२,
इसिलिये जग सारा, श्याम तेरा दिवाना है,
श्याम तेरे चरणों... ।। ३ ।।

तेरी सलोनी छवि, आँखो से ना ओझल हो-२,
''हर्ष'' तेरे दर पे, ये जीवन बिताना है,
श्याम तेरे चरणों... ।। ४ ।।

(तर्ज : देख तेरे संसार की हालत...)

श्याम तुम्हारे श्री चरणों में, झुकता सकल जहान,
तू है देव बड़ा बलवान-२ ।। टेर ।।

तूने जैसा करके दिखाया, जग को कभी ना जाये भुलाया,
परम वीर दानी कहलाया, बड़े बड़ों का शीश झुकाया,
रणभूमि की प्यास बुझाने, दिया शीश का दान ।। १ ।।

युग युग रूप बदलता आया, त्रेता युग में राम कहाया,
द्वापर में छलिये की माया, लीला कोई जान न पाया,
कैसी कैसी लीला करता, लीले वाला श्याम ।। २ ।।

कलयुग का परचम लहराया, खाटू नगरी धाम बसाया,
हारे का साथी कहलाया, दुनिया भर में नाम कमाया,
हर कोने में गूँज रहा है, 'हर्ष' तुम्हारा नाम ।। ३ ।।

(तर्ज : लज्जते गम बढ़ा लीजिये...)

श्याम इतनी दया कीजिये,
हमको दर्शन दिखा दीजिये ।। टेर ।।

ये भगत कितने मायूस है-३,
अब तो आकर हँसा दीजिये ।। १ ।।

कितने दिल से पुकारा तुझे-३,
सारे शिकवे भुला दीजिये ।। २ ।।

याद दिल से ना जाती तेरी-३,
रोते दिल को दवा दीजिये ।। ३ ।।

गर दुआओं मे है जो असर-३,
''हर्ष'' दर पे बुला लीजिये ।। ४ ।।

''श्याम जयन्ती''

(तर्ज - जय जय अम्बे गायेगें)

श्याम जयन्ती आई है श्याम जयन्ती
श्याम जयन्ती, श्री श्याम जयन्ती ।। टेर ।।

कार्तिक शुक्ला एकादश की पावन बेला आई है
बबरीक का जन्म हुआ है घर-घर खुशियाँ छाई हैं
घर घर थाल बजाये सारे-२ बाँटे आज बधाई हैं,
श्याम जयन्ती... ।। १ ।।

हारे का ये साथ निभाने आज धरा पर आये हैं
महाभारत में शीश दान दे महादानी कहलाये हैं
अहिलवति मां लिए गोद में - २ फूली नहीं समाई है,
श्याम जयन्ती... ।। २ ।।

फूलों के गजरे लटके हैं केशर चन्दन महक रहे
इत्तर रंग गुलाल ऊड़ाये सेवक सारे चहक रहे
खीर चूरमा भोग लगाया-२, पावन ज्योत जलाई है,
श्याम जयन्ती... ।। ३ ।।

कलिकाल के अवतारी का सेवक जन गुणगान करे,
श्याम देव की महिमा का सब मिलके ''हर्ष'' बखान करे
बच्चे बूढ़े नाच रहे सब-२, नाचे लोग लुगाई है,
श्याम जयन्ती... ।। ४ ।।

(तर्ज - जाने वाले इक संदेशा...)

श्याम रंग में रंगने वाले, श्याम खजाना बस लूटे,
श्याम भक्त का सच्चा रिश्ता, बाकी सारे हैं झूठे ।। टेर ।।

श्याम देव के भगतों ने, ऐसा परिवार बनाया है,
आदर मान करें आपस में, ऐसा चलन चलाया है,
श्याम भक्त को देखके मन में, प्यार की इक कोंपल फूटे ।। १ ।।

श्याम प्रभु के भगतों में ये, कैसा अद्‌भुत नाता है,
जय श्री श्याम उचारे इक, दूजे को गले लगाता है,
श्याम भक्त का साथ न छोड़े, चाहे जग सारा छूटे ।। २ ।।

कोन है वो और कहां से आया, कैसी उसकी भाषा है,
जात धर्म को ना माने वो, प्यार की ये परिभाषा है,
श्याम भक्त का दिल टूटे तो, ''हर्ष'' श्याम उससे रूठे ।। ३ ।।

(तर्ज : ये माना मेरी जाँ...)

हथेली पे सरसो, उगे मेरे भैया,
असंभव को संभव, बनाये कन्हैया,
अगर खाटूवाला, है तेरा खिवैया,
भँवर के थपेड़ो में, चले तेरी नैया ।। टेर ।।

महर की निगाहें, जहाँ इसने डाली,
वहाँ झिलमिलाई है, किरणों की लाली,
अगर थाम लेता, ये तेरी बैंया ।
भँवर के थपेड़ो में... ।। १ ।।

पलकें उठाकर, जब जिसको देखा,
उसकी बदल दी, किस्मत की रेखा,
अगर तेरा साथी, है बंशी बजैया ।
भँवर के थपेड़ो में... ।। २ ।।

इसे जिसने चाहा, बना ये उसी का,
तभी ''हर्ष'' उसको, डर ना किसी का,
अगर कृपा तुझपे, हो जाये भैया ।
भँवर के थपेड़ो में... ।। ३ ।।

(तर्ज : कबसे तेरे द्वार खड़ा हूँ मनमोहन...)

होके हवाले श्याम रिझाले, ''बैठा मौज उड़ायेगा'' ।। टेर ।।
छोड़ दे सारे काम तुम्हारे, श्याम धणी की मरजी पर,
लीले वाला झट धर लेगा, ध्यान तुम्हारी अरजी पर,
बिना डोर के पतंग तुम्हारी, मेरा श्याम उड़ायेगा,
बैठा मौज उड़ायेगा... ।। १ ।।
किसी सेठ की करे नोकरी, तुझे तरक्की क्या देगा,
चाकर बना जा सेठ श्याम का, दामन तेरा भर देगा,
चपरासी से पल में प्यारे अफसर तू बन जायेगा,
बैठा मौज उड़ायेगा... ।। २ ।।
एक पते की बात बताऊँ, इसको जो कोई ध्याता है,
श्याम धणी की किरपा से, इसका होकर रह जाता है,
जीवन भर फिर मेरा बाबा, उसका साथ निभायेगा,
बैठा मौज उड़ायेगा... ।। ३ ।।
देख जरा तू करके भरोसा, हारे के रखवारे का,
''हर्ष'' सदा ही साथ निभाये, ये किस्मत के मारे का,
भगतों के विश्वास को बाबा, तोड़ कभी ना पायेगा,
बैठा मौज उड़ायेगा... ।। ४ ।।

(तर्ज : ऐ मेरे दिले नादान...)

हे श्याम तेरी माया, कोई जान नहीं पाये,
तू छाछ से बस रीझे, तुलसी पे बिक जाये ।। टेर ।।

उस मित्र सुदामा की, तकदीर बदल डाली,
तेरे द्वार वो आया था, लेकर झोली खाली,
इक तन्दुल के बदले, त्रिलोक लुटा आये ।। १ ।।

इतने वैभवशाली, कोई पार नही पाये,
जिनका दर्शन करने,त्रिलोकी खुद आये,
वो ग्वालो संग धेनु, जंगल में चरा लाये ।। २ ।।

तू प्रेम का भूखा है, अन्दाज अनूठा है,
भगतो के घर खाये, भगतो का जूठा है,
भिलनी के बेर चखे, और मान बढ़ा आये ।। ३ ।।

ये ''हर्ष'' कहे तेरा, हर नियम निराला है,
अमृत में बदल देता, तू विष का प्याला है,
सेवक का मान बढ़े, चाहे तेरा घट जाये ।। ४ ।।

(तर्ज : जीवन में पिया तेरा साथ...)

होठों पे सदा, तेरा नाम रहे,
आँखों में मेरे, मेरा श्याम रहे ।। टेर ।।

दीदार तेरा, यूँ ही मुझको, सरकार मेरे, मुझे हो हरदम,
ऐ मनमोहन, तेरा दर्शन, करतार मेरे, मुझे हो हरपल,
हृदय में मेरे-२, तेरा धाम रहे ।। होठों पे... ।। १ ।।

सोते उठते, नैनों में मेरे, प्यारी सी, मूरत हो तेरी,
सपनों में मेरे, ख्यालों में मेरे, ये चाँद सी, सूरत हो तेरी,
धड़कन में सदा-२, तेरा नाम रहे ।। होठें पे... ।। २ ।।

जितनी है मिली, साँसे मुझको, हर साँस पे तेरा, नाम रहे,
ये 'हर्ष' कहे, ऐ श्याम मेरे, तू अन्त समय, मेरे पास रहे,
चरणों में तेरे-२, मेरी शाम रहे ।। होठें पे... ।। ३ ।।

(तर्ज - लुट रहा लुट रहा लुट रहा रे..)

होले होले सावरा यूँ हँस रहा रे,
प्रेमियों की प्रेम डोर कस रहा रे ।। टेर ।।

श्याम तुम्हारी, ये कजरारी, झील सी गहरी आँखे हैं,
डूब गया वो, सेवक तेरा, जो भी इनमें झाँके है,
तेरी तिलस्मी आँखो का, जादू सा हमपे चढ़ रहा रे ।। १ ।।

जादूगारा, रूप तुम्हारा, भगतों के मन को मोहे,
खुद की अब ना, चिन्ता फिकर है, ऐसे तुझमें है खोये,
कान्हा सजीला रूप तेरा, सबके दिलों में बस रहा रे ।। २ ।।

देखले तुझको, एक नजर तो, चन्दा भी शरमा जाये,
''हर्ष'' तेरी, मुस्कान पे कलियों, को भी पसीना आ जाये,
इन्द्रजाल ऐसा छाया, हर इक बन्दा फँस रहा रे ।। ३ ।।

(तर्ज : देना है तो दिजीये...)

हँस कर करले साँवरे, भगतों से दो बात,
हम भगतों को तू दे दे, ये प्यारी सी सौगात ।। टेर ।।

तरस रहे हैं तेरे प्यार को, भगतों से क्यूं रूठे हो,
वादा करके भूल गये तुम, श्याम बड़े ही झूठे हो,
प्यासे जीवन में कर दे तू, खुशियों की बरसात ।। १ ।।

यूँ बरसो ज्यूं मरूभूमि में, जल का झरना फूट पड़े,
मन की कली खिलादो जिसपे, लाखों भँवरे टूट पड़े,
तेरे सेवक सजाके बैठे, सपनों की बारात ।। २ ।।

जीवन भर की सारी खुशियाँ, इक मुस्कान पे वारी है,
गम की बदली पर इक तेरी, बून्द हँसी की भारी है,
तेरे 'हर्ष' को दर्श दिखादे, अब आजा दीनानाथ ।। ३ ।।

(तर्ज - मुझे इश्क है तुझी से...)

श्री श्याम कहके अपने, करते जो काम सारे,
होते सफल वो देखे, मेरे श्याम के सहारे ।। टेर ।।

होनी हमेशा होती, अनहोनी ये कराये,
बंजर जमीं पे देखो, फल फूल ये उगाये,
इस एक नाम से ही, दुःख दूर हो हमारे ।। १ ।।

मुश्किल हो काम कैसा, मुमकिन यही कराये,
सूनी अँधेरी रातें, पल भर में झिल मिलाये,
इस नाम से है चमके, कितनों के ही सितारे ।। २ ।।

इस नाम से शुरू कर, बाधा नहीं सताये,
पूरा तुझे मिलेगा, आधा कभी न पाये,
ये ''हर्ष'' जी रहा है, इस नाम के सहारे ।। ३ ।।